प्रेरितों के काम

लूका द्वारा लिखी गयी दूसरी पुस्तक का परिचय

1 हे थियुफिलुस, मैंने अपनी पहली पुस्तक में उन सब
कार्यों के बारे में लिखा जिन्हें प्रारंभ से ही यीशु ने
किया और 2उस दिन तक उपदेश दिया जब तक पवित्र
आत्मा के द्वारा अपने चुने हुए प्रेरितों को निर्देश दिए जाने
के बाद उसे ऊपर स्वर्ग में उठा न लिया गया। 3अपनी
मृत्यु के बाद उसने अपने आपको बहुत से ठोस प्रमाणों के
साथ उनके सामने प्रकट किया कि वह जीवित है। वह
चालीस दिनों तक उनके सामने प्रकट होता रहा तथा
परमेश्वर के राज्य के विषय में उन्हें बताता रहा। 4फिर
एक बार जब वह उनके साथ भोजन कर रहा था तो
उसने उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम को मत छोड़ना बल्कि
जिसके बारे में तुमने मुझसे सुना है, परम पिता की उस
प्रतिज्ञा के पूरा होने की प्रतीक्षा करना। 5क्योंकि यूहन्ना ने
तो जल से बपतिस्मा दिया था, किन्तु तुम्हें अब थोड़े ही
दिनों बाद पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जायेगा।"

यीशु का स्वर्ग में ले जाया जाना

6सो जब वे आपस में मिले तो उन्होंने उससे पूछा, " हे
प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल के राज्य की फिर से
स्थापना कर देगा?"

7उसने उनसे कहा, "उन अवसरों या तिथियों को जानना
तुम्हारा काम नहीं है, जिन्हें परम पिता ने स्वयं अपने
अधिकार से निश्चित किया है। 8बल्कि जब पवित्र आत्मा
तुम पर आयेगा, तुम्हें शक्ति प्राप्त हो जायेगी। और यरुशलेम
में, समूचे यहूदिया और सामरिया में और धरती के छोरों
तक तुम मेरे साक्षी बनोगे।"

9इतना कहने के बाद उनके देखते देखते उसे वर्ग में
ऊपर उठा लिया गया। और फिर एक बादल ने उसे उ
नकी आँखों से ओझल कर दिया। 10जब वह जा रहा
था तो वे आकाश में उसके लिये आँखें बिछाये थे। तभी
तत्काल श्वेत वस्त्र धारण किये हुए दो पुरुष उनके बराबर
आ खड़े हुए 11और कहा, "हे गलीली लोगो, तुम वहाँ
खड़े-खड़े आकाश में टकटकी क्यों लगाये हो? यह यीशु
जिसे तुम्हारे बीच से स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया, जैसे
तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा, वैसे ही वह फिर वापस
लोटेगा।"

एक नये प्रेरित का चुनाव

12फिर वे जैतून नाम के पर्वत से, जो यरूशलेम से
कोई एक किलोमीटर* की दूरी पर स्थित है, यरूशलेम
लौट आये। 13और वहाँ पहुँच कर वे ऊपर के उस कमरे
में गये जहाँ वे ठहरे हुए थे। ये लोग थे-पतरस, यूहन्ना,
याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बर्तुलमै और मत्ती,
हलफई का पुत्र याकूब, उत्साही शमौन और याकूब का
पुत्र यहूदा।

14इनके साथ कुछ स्त्रियाँ, यीशु की माता मरियम और
यीशु के भाई भी थे। ये सभी अपने आपको एक साथ
प्रार्थना में लगाये रखते थे।

15फिर इन्हीं दिनों पतरस ने भाई-बंधुओं के बीच खड़े
होकर, जिनकी संख्या कोई एक सौ बीस थी, कहा, 16"हे
मेरे भाइयो, यीशु को बंदी बनाने वालों के अगुआ यहूदा
के विषय में, पवित्र शास्त्र का वह लेख जिसे दाऊद के
मुख से पवित्र आत्मा ने बहुत पहले ही कह दिया था,
उसका पूरा होना आवश्यक था। 17वह हम में ही गिना
गया था और इस सेवा में उसका भी भाग था।"

18(इस मनुष्य ने जो धन उसे उसके नीचतापूर्ण काम
के लिये मिला था, उससे एक खेत मोल लिया किन्तु वह
पहले तो सिर के बल गिरा और फिर उसका शरीर फट
गया और उसकी आँतें बाहर निकल आईं। 19और सभी

किलोमीटर शाब्दिक सब्त के एक दिन की दूरी पर यानी सब्त के दिन विधान के द्वारा जितनी दूर चलना वैध था।

यरूशलेम वासियों को इसका पता चल गया। इसीलिये उनकी भाषा में उस खेत को हक्लदमा कहा गया जिसका अर्थ है "लहू का खेत।")

20"क्योंकि भजन संहिता में यह लिखा है कि,
'उसका घर उजड़ जाये और
उसमें रहने को कोई न बचे।'
भजन संहिता 69:25
और 'उसका मुखियापन कोई
दूसरा व्यक्ति ले ले।"
भजन संहिता 109:8

21"इसलिये यह आवश्यक है कि जब प्रभु यीशु हमारे बीच था तब जो लोग सदा हमारे साथ थे, उनमें से किसी एक को चुना जाये। 22यानी उस समय से लेकर जब से यूहन्ना ने लोगों को बपतिस्मा देना प्रारम्भ किया था और जब तक यीशु को हमारे बीच से उठा लिया गया था। इन लोगों में से किसी एक को उसके फिर से जी उठने का हमारे साथ साक्षी होना चाहिये।"

23इसलिये उन्होंने दो व्यक्ति सुझाये! एक यूसुफ़ जिसे बरसब्बा कहा जाता था (यह यूसतुस नाम से भी जाना जाता था) और दूसरा मत्तियाह। 24फिर वे यह कहते हुए प्रार्थना करने लगे, "हे प्रभु, तू सब के मनों को जानता है, हमें दर्शा कि इन दोनों में से तूने किसे चुना है 25जो एक प्रेरित के रूप में सेवा के इस पद को ग्रहण करे जिसे अपने स्थान को जाने के लिए यहूदा छोड़ गया था।" 26फिर उन्होंने उनके लिये पर्चियाँ डालीं और पर्ची मत्तियाह के नाम की निकली। इस तरह वह ग्यारह प्रेरितों के दल में सम्मिलित कर लिया गया।

पवित्र आत्मा का आगमन

2 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे सब एक ही स्थान पर इकटठे थे। 2तभी अचानक वहाँ आकाश से भयंकर आँधी का सा शब्द आया। और जिस घर में वे बैठे थे, उसमें भर गया। 3और आग की फैलती लपटों जैसी जीभें वहाँ सामने दिखायी देने लगीं। वे आग की विभाजित जीभें उनमें से हर एक के ऊपर आ टिकीं। 4वे सभी पवित्र आत्मा से भावित हो उठे। और आत्मा के द्वारा दिये गये सामर्थ्य के अनुसार वे दूसरी भाषाओं में बोलने लगे।

5वहाँ यरुशलेम में आकाश के नीचे के सभी देशों से आये यहूदी भक्त रहा करते थे। 6जब यह शब्द गरजा तो एक भीड़ एकत्र हो गयी। वे लोग अचरज में पड़े थे क्योंकि हर किसी ने उन्हें उसकी अपनी भाषा में बोलते सुना। 7वे आश्चर्य में भर कर विस्मय के साथ बोले, "ये बोलने वाले सभी लोग क्या गलीली नहीं हैं? 8फिर हममें से हर एक उन्हें हमारी अपनी ही मातृभाषा में बोलते हुए कैसे सुन रहा है? 9वहाँ पारथी, मेदी और एलामी, मैसोपोटामिया के निवासी, यहूदिया और कप्पूदूकिया पुन्तुस और एशिया 10फ्रिगिया और पंफीलिया, मिस्र और साइरीन नगर के निकट लीबिया के कुछ प्रदेशों के लोग, रोम से आये यात्री जिनमें जन्मजात यहूदी और यहूदी धर्म ग्रहण करने वाले लोग, क्रेती तथा अरब के रहने वाले 11हम सब परमेश्वर के आश्चर्य पूर्ण कामों को अपनी अपनी भाषाओं में सुन रहे हैं।" 12वे सब विस्मय में पड़ कर भौंचक्के हो आपस में पूछ रहे थे "यह सब क्या हो रहा है?" 13किन्तु दूसरे लोगों ने प्रेरितों का उपहास करते हुए कहा, "ये सब कुछ ज्यादा ही, नयी दाखरस चढ़ा गये हैं।"

पतरस का संबोधन

14फिर उन ग्यारहों के साथ पतरस खड़ा हुआ और ऊँचे स्वर में लोगों को सम्बोधित करने लगा, "यहूदी साथियो और यरुशलेम के सभी निवासियो! इसका अर्थ मुझे बताने दो। मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो। 15ये लोग पिये हुए नहीं हैं, जैसा कि तुम समझ रहे हो। क्योंकि अभी तो सुबह के नौ बजे हैं। 16बल्कि यह वह बात है जिसके बारे में योएल नबी ने कहा था:

17 'परमेश्वर कहता है:
अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं सभी
मनुष्यों पर अपनी आत्मा उँड़ेल दूँगा
फिर तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ
भविष्यवाणी करने लगेंगे।
तथा तुम्हारे युवा लोग दर्शन पायेंगे
और तुम्हारे बूढ़े लोग स्वप्न देखेंगे।
18 हाँ, उन दिनों मैं अपने सेवकों और
सेविकाओं पर अपनी आत्मा
उँड़ेल दूँगा
और वे भविष्यवाणी करेंगे।

19 मैं ऊपर आकाश में अद्‌भुत कर्म
और नीचे धरती पर चिह्न दिखाऊँगा
लहू, आग और धुएँ के बादल।
20 सूर्य अन्धेरे में और चाँद रक्त में बदल जायेगा।
21 और तब हर उस किसी का बचाव होगा
जो प्रभु का नाम पुकारेगा।'

योएल 2:28-32

22 "हे इस्राएल के लोगों, इन वचनों को सुनो: नासरी यीशु एक ऐसा पुरुष था जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे सामने अद्‌भुत कर्मों, आश्चर्यों और चिह्नों समेत-जिन्हें परमेश्वर ने उसके द्वारा किया था-तुम्हारे बीच प्रकट किया। जैसा कि तुम स्वयं जानते ही हो। 23 इस पुरुष को परमेश्वर की निश्चित योजना और निश्चित पूर्व ज्ञान के अनुसार तुम्हारे हवाले कर दिया गया। और तुमने नीच मनुष्यों की सहायता से उसे क्रूस पर चढ़ाया और कीलें ठुकवा कर मार डाला। 24 किन्तु परमेश्वर ने उसे मृत्यु की वेदना से मुक्त करते हुए फिर से जिला दिया। क्योंकि उसके लिये यह सम्भव ही नहीं था कि मृत्यु उसे अपने वश में रख पाती। 25 जैसा कि दाऊद ने उसके विषय में कहा है:

'मैंने प्रभु को सदा ही अपने सामने देखा है।
वह मेरी दाहिनी ओर विराजता है,
ताकि मैं डिग न जाऊँ।
26 इससे मेरा हृदय प्रसन्न है
और मेरी वाणी हर्षित है;
मेरी देह भी आशा में जियेगी
27 क्योंकि तू मेरी आत्मा को
अधोलोक में नहीं छोड़ देगा।
तू अपने पवित्र जन को क्षय की
अनुभूति नहीं होने देगा।
28 तूने मुझे जीवन की राह का ज्ञान कराया है।
अपनी उपस्थिति से तू मुझे
आनन्द से पूर्ण कर देगा।'

भजन संहिता 16:8-11

29 "हे मेरे भाइयों! मैं विश्वास के साथ आदि पुरुष दाऊद के बारे में तुमसे कह सकता हूँ कि उसकी मृत्यु हो गयी और उसे दफ़ना दिया गया। और उसकी कब्र हमारे यहाँ आज तक मौजूद है। 30 किन्तु क्योंकि वह एक नबी था और जानता था कि परमेश्वर ने शपथपूर्वक उसे वचन दिया है कि वह उसके वंश में से किसी एक को उसके सिंहासन पर बैठायेगा। 31 इसलिये आगे जो घटने वाला है, उसे देखते हुए उसने जब यह कहा था:

'उसे अधोलोक में नहीं छोड़ा गया
और न ही उसकी देह ने सड़ने
गलने का अनुभव किया'

तो उसने मसीह के फिर से जी उठने के बारे में ही कहा था। 32 इसी यीशु को परमेश्वर ने पुनर्जीवित कर दिया। इस तथ्य के हम सब साक्षी हैं। 33 परमेश्वर के दाहिने हाथ सब से ऊँचा पद पाकर यीशु ने परम पिता से प्रतिज्ञा के अनुसार पवित्र आत्मा प्राप्त की और फिर उसने इस आत्मा को उँडेल दिया जिसे अब तुम देख रहे हो और सुन रहे हो। 34 दाऊद क्योंकि स्वर्ग में नहीं गया सो वह स्वयं कहता है:

'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु से कहा:
मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं
35 तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों तले
पैर रखने की चौकी की तरह न कर दूँ।'

भजन संहिता 110:1

36 "इसलिये समूचा इस्राएल निश्चय-पूर्वक जान ले कि परमेश्वर ने इस यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ा दिया था, 'प्रभु' और 'मसीह' दोनों ही ठहराया था!"

37 लोगों ने जब यह सुना तो वे व्याकुल हो उठे और पतरस तथा अन्य प्रेरितों से कहा, "तो बंधुओ, हमें क्या करना चाहिये?"

38 पतरस ने उनसे कहा, "मन फिरावओ और अपने पापों की क्षमा पाने के लिये तुममें से हर एक को यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेना चाहिये। फिर तुम पवित्र आत्मा का उपहार पा जाओगे। 39 क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हारे लिये, तुम्हारी संतानों के लिए और उन सब के लिये है जो बहुत दूर स्थित हैं। यह प्रतिज्ञा उन सबके लिए है जिन्हें हमारा प्रभु परमेश्वर अपने पास बुलाता है।

40 और बहुत से वचनों द्वारा उसने उन्हें चेतावनी दी और आग्रह के साथ उनसे कहा "इस कुटिल पीढ़ी से अपने आपको बचाये रखो।" 41 सो जिन्होंने उसके संदेश को ग्रहण किया, उन्हें बपतिस्मा दिया गया। इस प्रकार उस दिन उनके समूह में कोई तीन हज़ार व्यक्ति और जुड़ गये। 42 उन्होंने प्रेरितों के उपदेश, संगत, रोटी के तोड़ने और प्रार्थनाओं के प्रति अपने को समर्पित कर दिया।

विश्वासियों का साझा जीवन

43हर व्यक्ति पर भय मिश्रित विस्मय का भाव छाया
रहा और प्रेरितों द्वारा आश्चर्य कर्म और चिह्न प्रकट
किये जाते रहे। 44सभी विश्वासी एक साथ रहते थे और
उनके पास जो कुछ था, उसे वे सब आपस में बाँट लेते
थे। 45उन्होंने अपनी सभी वस्तुएँ और सम्पत्ति बेच डाली
और जिस किसी को आवश्यकता थी, उन सब में उसे
बाँट दिया। 46मंदिर में एक समूह के रूप में वे हर दिन
मिलते-जुलते रहे। वे अपने घरों में रोटी को विभाजित
करते और उदार मन से आनन्द के साथ, मिल-जुलकर
खाते। 47सभी लोगों की सद्भावनाओं का आनन्द लेते
हुए वे प्रभु की स्तुति करते। और प्रतिदिन परमेश्वर,
जिन्हें उद्धार मिल जाता, उन्हें उनके दल में और जोड़
देता।

लँगड़े भिखारी का अच्छा किया जाना

3 दोपहर बाद तीन बजे प्रार्थना के समय पतरस और
यूहन्ना मंदिर जा रहे थे। 2तभी एक ऐसे व्यक्ति को
जो जन्म से ही लँगड़ा था, ले जाया जा रहा था। वे हर
दिन उसे मन्दिर के सुन्दर नामक द्वार पर बैठा दिया करते
थे। ताकि वह मंदिर में जाने वाले लोगों से भीख में पैसे
माँग लिया करे। 3इस व्यक्ति ने जब देखा कि यूहन्ना और
पतरस मंदिर में प्रवेश करने ही वाले हैं तो उसने उनसे
पैसे माँगे। 4यूहन्ना के साथ पतरस उसकी ओर एकटक
देखते हुए बोला, "हमारी तरफ़ देख।" 5सो उसने उनसे
कुछ मिल जाने की आशा करते हुए उनकी ओर देखा।
6किन्तु पतरस ने कहा, "मेरे पास सोना या चाँदी तो है
नहीं किन्तु जो कुछ है, मैं तुझे दे रहा हूँ। नासरी यीशु
मसीह के नाम से खड़ा हो जा और चल दे।" 7फिर
उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसने उसे उठाया। तुरन्त
उसके पैरों और टखनों में जान आ गयी। 8और वह अपने
पैरों के बल उछला और चल पड़ा। वह उछलते कूदते
चलता और परमेश्वर की स्तुति करता उनके साथ ही
मंदिर में गया। 9सभी लोगों ने उसे चलते और परमेश्वर
की स्तुति करते देखा। 10लोगों ने पहचान लिया कि यह
तो वही है जो मंदिर के सुन्दर द्वार पर बैठा भीख माँगा
करता था। उसके साथ जो कुछ घटा था उस पर वे
आश्चर्य और विस्मय से भर उठे।

पतरस का प्रवचन

11वह व्यक्ति अभी पतरस और यूहन्ना के साथ-साथ
ही था। सो सभी लोग अचरज में भर कर उस स्थान पर
उनके पास दौड़े-दौड़े आये जो सुलेमान की ड्योढ़ी
कहलाता था। 12पतरस ने जब यह देखा तो वह लोगों से
बोला, "हे इस्राएल के लोगो, तुम इस बात पर चकित
क्यों हो रहे हो? ऐसे घूर घूर कर हमें क्यों देख रहे हो, जैसे
मानो हमने ही अपनी शक्ति या भक्ति के बल पर इस
व्यक्ति को चलने फिरने योग्य बना दिया है। 13इब्राहीम,
इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के
परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु को महिमा से मंडित
किया। और तुमने उसे मरवा डालने को पकड़वा दिया।
और फिर पिलातुस के द्वारा उसे छोड़ दिये जाने का
निश्चय करने पर पिलातुस के सामने ही तुमने उसे नकार
दिया। 14उस पवित्र और नेक बंदे को तुमने अस्वीकार
किया और यह माँगा कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये
छोड़ दिया जाये। 15लोगों को जीवन की राह दिखाने वाले
को तुमने मार डाला किन्तु परमेश्वर ने मरे हुओं में से
उसे फिर से जिला दिया है। हम इसके साक्षी हैं। 16क्योंकि
हम यीशु के नाम में विश्वास करते हैं इसलिये यह उसका
नाम ही है जिसने इस व्यक्ति में जान फूँकी है जिसे तुम देख
रहे हो और जानते हो। हाँ, उसी विश्वास ने जो यीशु से
प्राप्त होता है, तुम सब के सामने इस व्यक्ति को पूरी तरह
चंगा किया है।

17"हे भाइयो, अब मैं जानता हूँ कि जैसे अनजाने में
तुमने वैसा किया, वैसे ही तुम्हारे नेताओं ने भी किया।
18परमेश्वर ने अपने सब भविष्यवक्ताओं के मुख से पहले
ही कहलवा दिया था कि उसके मसीह को यातनाएँ भोगनी
होंगी। उसने उसे इस तरह पूरा किया। 19इसलिये तुम
अपना मन फिराओ और परमेश्वर की ओर लौट आओ
ताकि तुम्हारे पाप धुल जायें। 20ताकि प्रभु की उपस्थिति
में आत्मिक शांति का समय आ सके और प्रभु तुम्हारे
लिये मसीह को भेजे जिसे वह तुम्हारे लिये चुन चुका है,
यानी यीशु को। 21मसीह को उस समय तक स्वर्ग में रहना
होगा जब तक सभी बातें पहले जैसी न हो जायें जिनके
बारे में बहुत पहले से ही परमेश्वर ने अपने पवित्र नबियों
के मुख से बता दिया था। 22मूसा ने कहा था, 'प्रभु
परमेश्वर तुम्हारे लिये, तुम्हारे अपने लोगों में से ही एक
मेरे जैसा नबी खड़ा करेगा। वह तुमसे जो कुछ कहे, तुम

उसी पर चलना। 23और जो कोई व्यक्ति उस नबी की
बातों को नहीं सुनेगा, लोगों में से उसे पूरी तरह नष्ट कर
दिया जायेगा।'* 24हाँ! शमूएल और उसके बाद आये सभी
नबियों ने जब कभी कुछ कहा तो इन ही दिनों की घोषणा
की। 25और तुम तो उन नबियों और उस करार के
उत्तराधिकारी हो जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों के साथ
किया था। उसने इब्राहीम से कहा था, 'तेरी संतानों से
धरती के सभी लोग आशीर्वाद पायेंगे।'* 26परमेश्वर ने
जब अपने सेवक को पुनर्जीवित किया तो पहले-पहले
उसे तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम्हें तुम्हारे बुरे रास्तों से हटा
कर आशीर्वाद दे।"

पतरस और यूहन्ना: यहूदी सभा के सामने

4 अभी पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर ही रहे
थे कि याजक, मंदिर के सिपाहियों का मुखिया और
कुछ सदूकी उनके पास आये। 2वे उनसे इस बात पर चिड़े
हुए थे कि पतरस और यूहन्ना लोगों को उपदेश देते हुए
यीशु के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा पुनरुत्थान का
प्रचार कर रहे थे। 3सो उन्होंने उन्हें बंदी बना लिया और
क्योंकि उस समय साँझ हो चुकी थी, इसलिये अगले दिन
तक हिरासत में रख छोड़ा। 4किन्तु जिन्होंने वह संदेश
सुना उनमें से बहुतों ने उस पर विश्वास किया और इस
प्रकार उनकी संख्या लगभग पाँच हजार पुरुषों तक जा
पहुँची।

5अगले दिन उनके नेता, बुजुर्ग और यहूदी धर्मशास्त्री
यरूशलेम में इकट्ठे हुए। 6महायाजक हन्ना, कैफ़ा, यूहन्ना,
सिकन्दर और महायाजक के परिवार के सभी लोग भी
वहाँ उपस्थित थे। 7वे इन प्रेरितों को उनके सामने खड़ा
करके पूछने लगे, "तुम ने किस शक्ति या अधिकार से
यह कार्य किया?"

8फिर पवित्र आत्मा से भावित होकर पतरस ने उनसे
कहा, "हे लोगों के नेताओं और बुजुर्ग नेताओं! 9यदि आज
हमसे एक लँगड़े व्यक्ति के साथ की गयी भलाई के बारे में
यह पूछताछ की जा रही है कि वह अच्छा कैसे हो गया
10तो तुम सब को और इस्राएल के लोगों को यह पता हो
जाना चाहिये कि यह काम नासरी यीशु मसीह के नाम से
हुआ है जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ा दिया और जिसे परमेश्वर
ने मरे हुओं में से पुनर्जीवित कर दिया है। उसी के द्वारा
पूरी तरह से ठीक हुआ यह व्यक्ति तुम्हारे सामने खड़ा है।
11यह यीशु वही

'वह पत्थर जिसे तुम राज मिस्त्रियों
ने नाकारा ठहराया था,
वही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्थर बन गया है।'

भजन संहिता 118:22

12किसी भी दूसरे में उद्धार निहित नहीं है। क्योंकि इस
आकाश के नीचे लोगों को कोई दूसरा ऐसा नाम नहीं
दिया गया है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो पाये।"

13उन्होंने जब पतरस और यूहन्ना की निर्भीकता को
देखा और यह समझा कि वे बिना पढ़े लिखे और साधारण
से मनुष्य हैं तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। फिर वे जान गये
कि ये यीशु के साथ रह चुके लोग हैं। 14और क्योंकि वे
उस व्यक्ति को जो चंगा हुआ था, उन ही के साथ खड़ा
देख पा रहे थे सो उनके पास कहने को कुछ नहीं रहा।
15उन्होंने उनसे यहूदी महासभा से निकल जाने को कहा
और फिर वे यह कहते हुए आपस में विचार-विमर्श करने
लगे, 16"इन लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया जाये?
क्योंकि यरूशलेम में रहने वाला हर कोई जानता है कि
इनके द्वारा एक उल्लेखनीय आश्चर्यकर्म किया गया है
और हम उसे नकार भी नहीं सकते। 17किन्तु हम इन्हें
चेतावनी दे दें कि वे इस नाम की चर्चा किसी और व्यक्ति
से न करें ताकि लोगों में इस बात को और फैलने से रोका
जा सके।"

18सो उन्होंने उन्हें भीतर बुलाया और आज्ञा दी कि
यीशु के नाम पर वे न तो किसी से कोई ही चर्चा करें और
न ही कोई उपदेश दें। 19किन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन्हें
उत्तर दिया, "तुम ही बताओ, क्या परमेश्वर के सामने
हमारे लिये यह उचित होगा कि परमेश्वर की न सुन कर
हम तुम्हारी सुनें? 20हम, जो कुछ हमने देखा है और सुना
है, उसे बताने से नहीं चूक सकते।" 21फिर उन्होंने उन्हें
और धमकाने के बाद छोड़ दिया। उन्हें दण्ड देने का उन्हें
कोई रास्ता नहीं मिल सका क्योंकि जो घटना घटी थी,
उसके लिये सभी लोग परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे।
22जिस व्यक्ति पर अच्छा करने का यह आश्चर्य कर्म
किया गया था, उसकी आयु चालीस साल से ऊपर थी।

प्रभु परमेश्वर ... दिया जायेगा व्यवस्था. 18:15,19
तेरी ... पायेगा उत्पत्ति 22:18; 26:24

पतरस और यूहन्ना की वापसी

23जब उन्हें छोड़ दिया गया तो वे अपने ही लोगों के पास
आ गये और उनसे जो कुछ प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग
यहूदी नेताओं ने कहा था, वह सब उन्हें कह सुनाया।
24जब उन्होंने यह सुना तो मिल कर ऊँचे स्वर में वे
परमेश्वर को पुकारते हुए बोले, "स्वामी, तूने ही आकाश,
धरती, समुद्र और उनके भीतर जो कुछ है, उसकी रचना
की है। 25तूने ही पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक,
हमारे पूर्वज दाऊद के मुख से कहा था:

'इन जातियों ने जाने क्यों
अपना अहंकार दिखाया?
लोगों ने व्यर्थ ही
षड़यन्त्र क्यों रच डाले?
26 धरती के राजाओं ने,
उसके विरुद्ध युद्ध करने को तैयार किया।
और शासक प्रभु और
उसके मसीह के–विरोध में एकत्र हुए।'

भजन संहिता 2:1–2

27हाँ, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी इस नगर में
ग़ैर यहूदियों और इस्राएलियों के साथ मिल कर तेरे पवित्र
सेवक यीशु के विरोध में, जिसे तूने मसीह के रूप में
अभिषिक्त किया था, वास्तव में एकजुट हो गये थे। 28वे
इकट्ठे हुए ताकि तेरी शक्ति और इच्छा के अनुसार जो
कुछ पहले ही निश्चित हो चुका था, वह पूरा हो। 29और
अब हे प्रभु, उनकी धमकियों पर ध्यान दे और अपने
सेवकों को निर्भयता के साथ 'तेरे वचन' सुनाने की शक्ति
दे 30जबकि चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ाये और
चिह्न तथा अदभुत कर्म तेरे पवित्र सेवकों द्वारा यीशु के
नाम पर किये जा रहे हों।"

31जब उन्होंने प्रार्थना पूरी की तो जिस स्थान पर वे
एकत्र थे, वह हिल उठा और उन सब में 'पवित्र आत्मा'
समा गया। और वे निर्भयता के साथ परमेश्वर के वचन
बोलने लगे।

विश्वासियों का सहयोगी जीवन

32विश्वासियों का यह समूचा दल एक मन और एक
तन था। कोई भी यह नहीं कहता था कि उसकी कोई भी
वस्तु उसकी अपनी है। उनके पास जो कुछ होता, उस सब
कुछ को वे बाँट लेते थे। 33और वे प्रेरित समूची शक्ति के
साथ प्रभु यीशु के फिर से जी उठने की साक्षी दिया करते
थे। परमेश्वर का महान बरदान उन सब पर बना रहता।
34उस दल में से किसी को भी कोई कमी नहीं थी। क्योंकि
जिस किसी के पास खेत या घर होते, वे उन्हें बेच दिया
करते थे और उससे जो धन मिलता, उसे लाकर 35प्रेरितों
के चरणों में रख देते। और जिसको जितनी आवश्यकता
होती, उसे उतना धन दे दिया जाता था।

36उदाहरण के लिये युसूफ़ नाम का, साइप्रस में पैदा
हुआ, एक लेवी था जिसे प्रेरित बरनाबास [अर्थात चैन का
पुत्र] भी कहा करते थे। 37उसने एक खेत बेच दिया जिसका
वह मालिक था और उस धन को लाकर प्रेरितों के चरणों
पर रख दिया।

हनन्याह और सफ़ीरा

5 हनन्याह नाम के एक व्यक्ति और उसकी पत्नी
सफ़ीरा ने मिलकर अपनी सम्पत्ति का एक हिस्सा
बेच दिया। 2और अपनी पत्नी की जानकारी में उसने
इसमें से कुछ धन बचा लिया। और कुछ धन प्रेरितों के
चरणों में रख दिया। 3इस पर पतरस ने कहा, "हे हनन्याह,
शैतान को तूने अपने मन में यह बात क्यों डालने दी कि
तूने पवित्र आत्मा से झूठ बोला और धरती को बेचने से
मिले धन में से थोड़ा बचा कर रख लिया? 4उसे बेचने से
पहले क्या वह तेरी ही नहीं थी? और जब तूने उसे बेच
दिया तो वह धन क्या तेरे ही अधिकार में नहीं था? तूने
इस बात की क्यों सोची? तूने मनुष्यों से नहीं, परमेश्वर से
झूठ बोला है।" 5हनन्याह ने जब ये शब्द सुने तो वह पछाड़
खाकर गिर पड़ा और दम तोड़ दिया। जिस किसी ने भी
इस विषय में सुना, सब पर गहरा भय छा गया। 6फिर
जवान लोगों ने उठ कर उसे कफ़न में लपेटा और बाहर
ले जाकर गाड़ दिया।

7कोई तीन घण्टे बाद, जो कुछ घटा था, उससे अनजान
उसकी पत्नी भीतर आयी। 8पतरस ने उससे कहा, "बता,
तूने तेरे खेत क्या इतनें में ही बेचे थे?"

सो उसने कहा, "हाँ। इतने में ही।"

9तब पतरस ने उससे कहा, "तुम दोनों प्रभु की आत्मा
की परीक्षा लेने को सहमत क्यों हुए? देख तेरे पति को
दफनाने वालों के पैर दरवाज़े तक आ पहुँचे हैं और वे
तुझे भी उठा ले जायेंगे।" 10तब वह उसके चरणों पर

गिर पड़ी और मर गयी। फिर युवक लोग भीतर आये और मरा पा कर उसे उठा ले गये और उसके पति के पास ही उसे दफ़ना दिया। 11सो समूची कलीसिया और जिस किसी ने भी इन बातों को सुना, उन सब पर गम्भीर भय छा गया।

प्रमाण

12प्रेरितों द्वारा लोगों के बीच बहुत से चिह्न प्रकट हो रहे थे और आश्चर्य कर्म किये जा रहे थे। वे सभी सुलेमान के दालान में एकत्र थे। 13उनमें सम्मिलित होने का साहस कोई नहीं करता था। पर लोग उनकी प्रशंसा अवश्य करते थे। 14उधर प्रभु पर विश्वास करने वाले स्त्री और पुरुष अधिक से अधिक बढ़ते जा रहे थे। 15परिणामस्वरूप लोग अपने बीमारों को लाकर चारपाइयों और बिस्तरों पर गलियों में लिटाने लगे ताकि जब पतरस उधर से निकले तो उनमें से कुछ पर कम से कम उसकी छाया ही पड़ जाये। 16यरूशलेम के आसपास के नगरों से अपने बीमारों और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को लेकर ठट के ठट लोग आने लगे। और वे सभी अच्छे हो जाया करते थे।

यहूदियों का प्रेरितों को रोकने का जतन

17फिर महायाजक और उसके साथी, यानी सदूकियों का दल, उनके विरोध में खड़े हो गये। वे ईर्ष्या से भरे हुए थे। 18सो उन्होंने प्रेरितों को बंदी बना लिया और उन्हें सार्वजनिक बंदीगृह में डाल दिया। 19किन्तु रात के समय प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बंदीगृह के द्वार खोल दिये। उसने उन्हें बाहर ले जाकर कहा, 20"जाओ, मंदिर में खड़े हो जाओ और इस नये जीवन के विषय में लोगों को सब कुछ बताओ।" 21जब उन्होंने यह सुना तो भोर के तड़के वे मंदिर में प्रवेश कर गये और उपदेश देने लगे।

फिर जब महायाजक और उसके साथी वहाँ पहुचे तो उन्होंने यहूदी संघ तथा इस्राएल के बुज़ुर्गो की पूरी सभा बुलायी। फिर उन्होंने बंदीगृह से प्रेरितों को बुलवा भेजा। 22किन्तु जब अधिकारी बंदीगृह में पहुँचे तो वहाँ उन्हें प्रेरित नहीं मिले। उन्होंने लौट कर इसकी सूचना दी और 23कहा, "हमें बंदीगृह की सुरक्षा के ताले लगे हुए और द्वारों पर सुरक्षा-कर्मी खड़े मिले थे किन्तु जब हमने द्वार खोले तो हमें भीतर कोई नहीं मिला।" 24मंदिर के रखवालों के मुखिया ने और महायाजकों ने जब ये शब्द सुने तो वे उनके बारे में चक्कर में पड़ गये और सोचने लगे, "अब क्या होगा।" 25फिर किसी ने भीतर आकर उन्हें बताया, "जिन लोगों को तुमने जेल में डाल दिया था, वे मंदिर में खड़े लोगों को उपदेश दे रहे हैं।" 26सो मंदिर के सुरक्षा-कर्मियों का मुखिया अपने अधिकारियों के साथ वहाँ गया और प्रेरितों को बिना बल प्रयोग किये वापस ले आया क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं लोग उन्हें (मंदिर के सुरक्षाकर्मियों को) पत्थर न मारें।

27वे उन्हें भीतर ले आये और सर्वोच्च यहूदी सभा के सामने खड़ा कर दिया। फिर महायाजक ने उन से पूछते हुए कहा, 28"हमने इस नाम से उपदेश न देने के लिए तुम्हें कठोर आदेश दिया था और तुमने फिर भी समूचे यरुशलेम को अपने उपदेशों से भर दिया है। और तुम इस व्यक्ति की मृत्यु का अपराध हम पर लादना चाहते हो।"

29पतरस और दूसरे प्रेरितों ने उत्तर दिया, "हमें मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की बात माननी चाहिये। 30उस यीशु को हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मृत्यु से फिर जिला कर खड़ा कर दिया है जिसे एक पेड़ पर लटका कर तुम लोगों ने मार डाला था। 31उसे ही प्रमुख और उद्धारकर्ता के रूप में महत्त्व देते हुए परमेश्वर ने अपने दाहिने स्थित किया है ताकि इस्राएलियों को मन फिराव और पापों की क्षमा प्रदान की जा सके। 32इन सब बातों के हम साक्षी हैं और वैसे ही वह पवित्र आत्मा भी है जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।"

33जब उन्होंने यह सुना तो वे आग बबूला हो उठे और उन्हें मार डालना चाहा। 34किन्तु महासभा में से एक गमलिएल नामक फरीसी, जो धर्मशास्त्र का शिक्षक भी था, तथा जिसका सब लोग आदर करते थे, खड़ा हुआ और आज्ञा दी कि इन्हें थोड़ी देर के लिये बाहर कर दिया जाये। 35फिर वह उनसे बोला, "इस्राएल के पुरुषों, तुम इन लोगों के साथ जो कुछ करने पर उतारू हो, उसे सोच समझ कर करना। 36कुछ समय पहले अपने आपको बड़ा घोषित करते हुए थियूदास प्रकट हुआ था। और कोई चार सौ लोग उसके पीछे भी हो लिये थे, पर वह मार डाला गया और उसके सभी अनुयायी तितर-बितर हो गये। परिणाम कुछ नहीं निकला। 37उसके बाद जनगणना के समय गलील का रहने वाला यहूदा प्रकट हुआ। उसने भी कुछ लोगों को अपने पीछे आकर्षित कर लिया था। वह

भी मारा गया। उसके भी सभी अनुयायी इधर उधर बिखर गये। 38इसीलिए इस वर्तमान विषय में मैं तुमसे कहता हूँ, इन लोगों से अलग रहो, इन्हें ऐसे ही अकेले छोड़ दो क्योंकि इनकी यह योजना या यह काम मनुष्य की ओर से है तो स्वयं समाप्त हो जायेगा। 39किन्तु यदि यह परमेश्वर की ओर से है तो तुम उन्हें रोक नहीं पाओगे। और तब हो सकता है तुम अपने आपको ही परमेश्वर के विरोध में लड़ते पाओ।"

उन्होंने उसकी सलाह मान ली। 40और प्रेरितों को भीतर बुला कर उन्होंने कोड़े लगवाये और यह आज्ञा देकर कि वे यीशु के नाम की कोई चर्चा न करें, उन्हें चले जाने दिया। 41सो वे प्रेरित इस बात का आनन्द मनाते हुए कि उन्हें उसके नाम के लिये अपमान सहने योग्य गिना गया है, यहूदी महासभा से चले गये। 42फिर मंदिर और घर-घर में हर दिन इस सुसमाचार का कि यीशु मसीह है उपदेश देना और प्रचार करना उन्होंने कभी नहीं छोड़ा।

विशेष कार्य के लिए सात पुरुषों का चुना जाना

6 उन्हीं दिनों जब शिष्यों की संख्या बढ़ रही थी, तो यूनानी बोलने वाले और इब्रानी बोलने वाले यहूदियों में एक विवाद उठ खड़ा हुआ क्योंकि वस्तुओं के दैनिक वितरण में उनकी विधवाओं के साथ उपेक्षा बरती जा रही थी। 2सो बारहों प्रेरितों ने शिष्यों की समूची मण्डली को एक साथ बुला कर कहा, "हमारे लिये परमेश्वर के वचन की सेवा को छोड़ कर भोजन का प्रबन्ध करना उचित नहीं है। 3सो बंधुओ अच्छी साख वाले पवित्र आत्मा और सूझबूझ से पूर्ण सात पुरुषों को अपने में से चुन लो। हम उन्हें इस काम का अधिकारी बना देंगे। 4और अपने आपको प्रार्थना और वचन की सेवा के कामों में समर्पित रखेंगे।"

5इस सुझाव से सारी मण्डली बहुत प्रसन्न हुई। सो उन्होंने विश्वास और पवित्र आत्मा से युक्त स्तिफनुस नाम के व्यक्ति को और फिलिप्पुस, प्रखुरूस, नीकानोर, तिमोन, परमिनास और अंताकिया के निकुलाऊस को, जिसने यहूदी धर्म अपना लिया था, चुन लिया। 6और इन लोगों को फिर उन्होंने प्रेरितों के सामने उपस्थित कर दिया। प्रेरितों ने प्रार्थना की और उन पर हाथ रखे।

7इस प्रकार परमेश्वर का वचन फैलने लगा और यरुशलेम में शिष्यों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी। याजकों का एक बड़ा समूह भी इस मत को मानने लगा था।

यहूदियों द्वारा स्तिफनुस का विरोध

8स्तिफनुस एक ऐसा व्यक्ति था जो अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण था। वह लोगों के बीच बड़े-बड़े आश्चर्य कर्म और अद्‌भुत चिन्ह प्रकट किया करता था। 9किन्तु तथाकथित स्वतन्त्र किये गये लोगों के सभागार के कुछ लोग जो कुरेनी और सिकन्दरिया से तथा किलिकिया और एशिया से आये यहूदी थे, वे उसके विरोध में वाद-विवाद करने लगे। 10किन्तु वह जिस बुद्धिमानी और आत्मा से बोलता था, वे उसके सामने नहीं ठहर सके। 11फिर उन्होंने कुछ लोगों को लालच देकर कहलवाया, "हमने मूसा और परमेश्वर के विरोध में इसे अपमानपूर्ण शब्द कहते सुना है।" 12इस तरह उन्होंने जनता को, बुजुर्ग यहूदी नेताओं को और यहूदी धर्मशास्त्रियों को भड़का दिया। फिर उन्होंने आकर उसे पकड़ लिया और सर्वोच्च यहूदी महासभा के सामने ले आये। 13उन्होंने वे झूठे गवाह पेश किये जिन्होंने कहा, "यह व्यक्ति इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरोध में बोलते कभी रुकता ही नहीं है। 14हमने इसे कहते सुना है कि यह नासरी यीशु इस स्थान को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा और मूसा ने जिन रीति रिवाजों को हमें दिया है उन्हें बदल देगा।" 15फिर सर्वोच्च यहूदी महासभा में बैठे हुए सभी लोगों ने जब उसे ध्यान से देखा तो पाया कि उसका मुख किसी स्वर्गदूत के मुख के समान दिखाई दे रहा था।

स्तिफनुस का भाषण

7 फिर महायाजक ने कहा, "क्या यह बात ऐसे ही है?" 2उसने उत्तर दिया, "बंधुओं और पितृ तुल्य बुजुर्गों! मेरी बात सुनो। हारान में रहने से पहले अभी जब हमारा पिता इब्राहीम मैसोपोटामिया में ही था, तो महिमामय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिये 3और कहा, 'अपने देश और अपने लोगों को छोड़कर तू उस धरती पर चला जा, जिसे तुझे मैं दिखाऊँगा।' 4सो वह कसदियों की धरती को छोड़ कर हारान में जा बसा जहाँ से उसके पिता की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसे इस देश में आने की प्रेरणा दी

जहाँ तुम अब रह रहे हो। 5परमेश्वर ने यहाँ उसे उत्तराधिकार में कुछ नहीं दिया, डग भर धरती तक नहीं। यद्यपि उसके कोई संतान नहीं थी किन्तु परमेश्वर ने उससे प्रतिज्ञा की कि यह देश वह उसे और उसके वंशजों को उनकी सम्पत्ति के रूप में देगा। 6परमेश्वर ने उससे यह भी कहा, 'तेरे वंशज कहीं विदेश में परदेसी होकर रहेंगे और चार सौ साल तक उन्हें दास बनाकर, उनके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया जाएगा।' 7परमेश्वर ने कहा, 'दास बनाने वाली उस जाति को मैं दण्ड दूँगा और इसके बाद वे उस देश से बाहर आ जायेंगे और इस स्थान पर वे मेरी सेवा करेंगे।' 8परमेश्वर ने इब्राहीम को ख़तने की मुद्रा से मुद्रित करके करार-प्रदान किया। और इस प्रकार वह इसहाक का पिता बना। उसके जन्म के बाद आठवें दिन उसने उसका ख़तना किया। फिर इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुलों के आदि पुरुष पैदा हुए।

9"वे आदि पुरुष यूसुफ़ से ईर्ष्या रखते थे। सो उन्होंने उसे मिस्र में दास बनने के लिए बेच दिया। किन्तु परमेश्वर उसके साथ था 10और उसने उसे सभी विपत्तियों से बचाया। परमेश्वर ने यूसुफ़ को विवेक दिया और उसे इस योग्य बनाया जिससे वह मिस्र के राजा फ़ैरो का अनुग्रह पात्र बन सका। फ़ैरो ने उसे मिस्र का राज्यपाल और अपने घर-बार का अधिकारी नियुक्त किया। 11फिर समूचे मिस्र और कनान देश में अकाल पड़ा और बड़ा संकट छा गया। हमारे पूर्वज खाने को कुछ नहीं पा सके। 12जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है, तो उसने हमारे पूर्वजों को वहाँ भेजा-यह पहला अवसर था। 13उनकी दूसरी यात्रा के अवसर पर यूसुफ़ ने अपने भाइयों को अपना परिचय दे दिया और तभी फ़ैरो को भी यूसुफ़ के परिवार की जानकारी मिली। 14सो यूसुफ़ ने अपने पिता याकूब और परिवार के सभी लोगों को, जो कुल मिलाकर पिचहत्तर थे, बुलवा भेजा। 15तब याकूब मिस्र आ गया और उसने वहाँ वैसे ही प्राण त्यागे जैसे हमारे पूर्वजों ने वहाँ प्राण त्यागे थे। 16उनके शव वहाँ से वापस सेकेम ले जाये गये जहाँ उन्हें मकबरे में दफना दिया गया। यह वही मकबरा था जिसे इब्राहीम ने हमोर के बेटों से कुछ धन देकर खरीदा था।

17"जब परमेश्वर ने इब्राहीम को जो वचन दिया था, उसके पूरा होने का समय निकट आया तो मिस्र में हमारे लोगों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी। 18आख़िरकार मिस्र पर एक ऐसे राजा का शासन हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता था। 19उसने हमारे लोगों के साथ धूर्तता पूर्ण व्यवहार किया। उसने हमारे पूर्वजों को बड़ी निर्दयता के साथ विवश किया कि वे अपने बच्चों को बाहर मरने को छोड़ें ताकि वे जीवित ही न बच पायें। 20उसी समय मूसा का जन्म हुआ। वह बहुत सुन्दर बालक था। तीन महीने तक वह अपने पिता के घर के भीतर पलता बढ़ता रहा। 21फिर जब उसे बाहर छोड़ दिया गया तो फ़ैरो की पुत्री उसे अपना पुत्र बना कर उठा ले गयी। उसने अपने पुत्र के रूप में उसका लालन-पालन किया। 22मूसा को मिस्रियों के सम्पूर्ण कला-कौशल की शिक्षा दी गयी। वह वाणी और कर्म दोनों में ही समर्थ था।

23"जब वह चालीस साल का हुआ तो उसने इस्राएल की संतान, अपने भाई-बंधुओं के पास जाने का निश्चय किया। 24सो जब एक बार उसने देखा कि उनमें से किसी एक के साथ बुरा व्यवहार किया जा रहा है तो उसने उसे बचाया और मिस्री व्यक्ति को मार कर उस दलित व्यक्ति का बदला ले लिया। 25उसने सोचा था कि उसके अपने भाई बंधु जान जायेंगे कि उन्हें छुटकारा दिलाने के लिये परमेश्वर उसका उपयोग कर रहा है। किन्तु वे इसे नहीं समझ पाये। 26अगले दिन उनमें से (उसके अपने लोगों में से) जब कुछ लोग झगड़ रहे थे तो वह उनके पास पहुँचा और यह कहते हुए उनमें बीच-बचाव का जतन करने लगा कि तुम लोग तो आपस में भाई-भाई हो। एक दूसरे के साथ बुरा बर्ताव क्यों करते हो? 27किन्तु उस व्यक्ति ने जो अपने पड़ोसी के साथ झगड़ रहा था, मूसा को धक्का मारते हुए कहा, 'तुझे हमारा शासक और न्यायकर्ता किसने बनाया? 28जैसे तूने कल उस मिस्री की हत्या कर दी थी,' क्या तू वैसे ही मुझे भी मार डालना चाहता है?* 29मूसा ने जब यह सुना तो वह वहाँ से चला गया और मिद्यान में एक परदेसी के रूप में रहने लगा। वहाँ उसके दो पुत्र हुए।

30"चालीस वर्ष बीत जाने के बाद सिनाई पर्वत के पास मरुभूमि में एक जलती झाड़ी की लपटों के बीच उसके सामने एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ। 31मूसा ने जब यह देखा तो इस दृश्य पर वह आश्चर्य चकित हो उठा। जब और अधिक निकटता से देखने के लिये वह उसके पास गया तो उसे प्रभु की वाणी सुनाई दी: 32'मैं तेरे पूर्वजों का

मुझे ... चाहता है निर्गमन 2:14

परमेश्वर हूँ, इब्राहीम का, इसहाक का और याकूब का
परमेश्वर हूँ।' * भय से काँपते हुए मूसा कुछ देखने का
साहस नहीं कर पा रहा था। 33तभी प्रभु ने उससे कहा,
'अपने पैरों की चप्पलें उतार क्योंकि जिस स्थान पर तू
खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। 34मैंने मिस्र में अपने लोगों के
साथ हो रहे दुर्व्यवहार को देखा है, परखा है। मैंने उन्हें
विलाप करते हुए सुना है। उन्हें मुक्त कराने के लिये मैं
नीचे उतरा हूँ। आ, अब मैं तुझे मिस्र भेजूँगा।'*

35"यह वही मूसा है जिसे उन्होंने यह कहते हुए नकार
दिया था, 'तुझे शासक और न्यायकर्ता किसने बनाया है?'
यह वही है जिसे परमेश्वर ने उस स्वर्गदूत द्वारा, जो
उसके लिए झाड़ी में प्रकट हुआ था, शासक और मुक्तिदाता
होने के लिये भेजा। 36वह उन्हें मिस्र की धरती और लाल
सागर तथा वनों में से चालीस साल तक आश्चर्य कर्म
करते हुए और चिह्न दिखाते हुए, बाहर निकाल लाया।
37यह वही मूसा है जिसने इस्राएल की संतानों से कहा
था, 'तुम्हारे भाइयों में से ही तुम्हारे लिये परमेश्वर एक
मेरे जैसा नबी भेजेगा।'* 38यह वही है जो वीराने में
सभा के बीच हमारे पूर्वजों और उस स्वर्गदूत के साथ
मौजूद था जिसने सिनाई पर्वत पर उससे बातें की थीं। इसी
ने हमें देने के लिये परमेश्वर से सजीव वचन प्राप्त किये
थे।

39"किन्तु हमारे पूर्वजों ने उसका अनुसरण करने को
मना कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने उसे नकार दिया
और अपने हृदयों में वे फिर मिस्र की ओर लौट गये।
40उन्होंने आरों से कहा था, 'हमारे लिये ऐसे देवताओं की
रचना करो जो हमें मार्ग दिखायें। इस मूसा के बारे में, जो
हमें मिस्र से बाहर निकाल लाया, हम नहीं जानते कि
उसके साथ क्या कुछ घटा।'* 41उन्हीं दिनों उन्होंने बछड़े
की एक मूर्ति बनायी। और उस मूर्ति पर बलि चढ़ाई। वे,
जिसे उन्होंने अपने हाथों से बनाया था, उस पर आनन्द
मनाने लगे। 42किन्तु परमेश्वर ने उनसे मुँह मोड़ लिया
था। उन्हें आकाश के ग्रह-नक्षत्रों की उपासना के लिये छोड़
दिया गया था। जैसा कि नबियों की पुस्तक में लिखा है:

'हे इस्राएल के परिवार के लोगो,
क्या तुम पशुबलि और अन्य बलियाँ
वीराने में मुझे नहीं चढ़ाते रहे?
चालीस वर्ष तक
43 तुम मोलेक के तम्बू और अपने देवता रिफान
के तारे को भी अपने साथ ले गये थे।
वे मूर्तियाँ भी तुम ले गये जिन्हें तुमने
उपासना के लिये बनाया था।
इसलिये मैं तुम्हें बेबिलोन से भी परे भेजूँगा।'

आमोस 5:25-27

44"साक्षी का तम्बू भी उस वीराने में हमारे पूर्वजों के
साथ था। यह तम्बू उसी नमूने पर बनाया गया था जैसा कि
उसने देखा था और जैसा कि मूसा से बात करने वाले ने
बनाने को उससे कहा था। 45हमारे पूर्वज उसे प्राप्त करके
तभी वहाँ से आये थे जब यहोशू के नेतृत्व में उन्होंने उन
जातियों से यह धरती ले ली थी जिन्हें हमारे पूर्वजों के
सम्मुख परमेश्वर ने निकाल बाहर किया था। दाऊद के
समय तक वह वहीं रहा। 46दाऊद ने परमेश्वर के अनुग्रह
का आनन्द उठाया। उसने चाहा कि वह याकूब के
परमेश्वर के लिए एक मंदिर बनवा सके 47किन्तु वह
सुलेमान ही था जिसने उसके लिए मंदिर बनवाया।

48"कुछ भी हो परम परमेश्वर तो हाथों से बनाये भवनों
में नहीं रहता। जैसा कि नबी ने कहा है:

प्रभु न कहा,
'स्वर्ग मेरा सिंहासन है
49 और धरती चरण की चौकी बनी है।
किस तरह का मेरा घर तुम बनाओगे?
कहीं कोई जगह ऐसी है,
जहाँ विश्राम पाऊँ?
50 क्या यह सभी कुछ,
मेरे करों की रचना नही रही?'

यशायाह 66:1-2

51"हे बिना ख़तने के मन और कान वाले हठीले
लोगो! तुमने सदा ही पवित्र आत्मा का विरोध किया है।
तुम अपने पूर्वजों के जैसे ही हो। 52क्या कोई भी ऐसा
नबी था, जिसे तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं सताया? उन्होंने तो
उन्हें भी मार डाला जिन्होंने बहुत पहले से ही उस धर्मी
के आने की घोषणा कर दी थी, जिसे अब तुमने धोखा
देकर पकड़वा दिया और मरवा डाला। 53तुम वही हो

मैं ... परमेश्वर हूँ निर्गमन 3:6
अपने पैरों ... मिस्र भेजूँगा निर्गमन 3:5-10
तुम्हारे .... भेजेगा व्यवस्था. 18:15
हमारे लिये ... कुछ घटा निर्गमन 32:1

जिन्होंने स्वर्गदूतों द्वारा दिये गये व्यवस्था के विधान को पा
तो लिया किन्तु उस पर चले नहीं!"

स्तिफनुस की हत्या

54जब उन्होंने यह सुना तो वे क्रोध से आगबबूला हो
उठे और उस पर दाँत पीसने लगे। 55किन्तु पवित्र आत्मा
से भावित स्तिफनुस स्वर्ग की ओर देखता रहा। उसने
देखा परमेश्वर की महिमा को और परमेश्वर के दाहिने
खड़े यीशु को। 56सो उसने कहा, "देखो। मैं देख रहा हूँ
कि स्वर्ग खुला हुआ है और मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के
दाहिने खड़ा है।"

57इस पर उन्होंने चिल्लाते हुए अपने कान बन्द कर
लिये और फिर वे सभी उस पर एक साथ झपट पड़े।
58वे उसे घसीटते हुए नगर से बाहर ले गये और उस पर
पथराव करने लगे। तभी गवाहों ने अपने वस्त्र उतार कर
शाउल नाम के एक युवक के चरणों में रख दिये।
59स्तिफ़नुस पर जब से उन्होंने पत्थर बरसाना प्रारम्भ
किया, वह यह कहते हुए प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु
यीशु, मेरी आत्मा को स्वीकार कर।" 60फिर वह घुटनों
के बल गिर पड़ा और ऊँचे स्वर में चिल्लाया, "प्रभु, इस
पाप को उनके विरुद्ध मत ले।" इतना कह कर वह चिर
निद्रा में सो गया।

विश्वासियों पर अत्याचार

8 इस तरह शाऊल ने स्तिफनुस की हत्या का समर्थन
किया। उसी दिन से यरूशलेम की कलीसिया पर
घोर अत्याचार होने आरम्भ हो गये। प्रेरितों को छोड़ वे
सभी लोग यहूदिया और सामरिया के गाँवों में तितर-बितर
हो कर फैल गये। 2कुछ भक्त जनों ने स्तिफनुस को दफना
दिया और उसके लिये गहरा शोक मनाया। 3शाऊल ने
कलीसिया को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। वह घर-
घर जा कर औरत और पुरुषों को घसीटते हुए जेल में
डालने लगा। 4उधर तितर-बितर हुए लोग हर कहीं जा
कर सुसमाचार का संदेश देने लगे।

सामरिया में फिलिप्पुस का उपदेश

5फिलिप्पुस सामरिया नगर को चला गया और वहाँ
लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। 6फिलिप्पुस के
लोगों ने जब सुना और जिन अद्भुत चिन्हों को वह प्रकट
किया करता था, देखा, तो जिन बातों को वह बताया करता
था, उन पर उन्होंने गम्भीरता के साथ ध्यान दिया। 7बहुत
से लोगों में से, जिनमें दुष्टात्माएँ समायी थीं, वे ऊँचे स्वर में
चिल्लाती हुई बाहर निकल आयीं थी। बहुत से लकवे के
रोगी और विकलांग अच्छे हो रहे थे। 8उस नगर में उल्लास
छाया हुआ था।

9वहीं शमौन नाम का एक व्यक्ति हुआ करता था। वह
काफी समय से उस नगर में जादू टोना किया करता था।
और सामरिया के लोगों को आश्चर्य में डालता रहता था।
वह महापुरुष होने का दावा किया करता था। 10छोटे से
लेकर बड़े तक सभी लोग उसकी बात पर ध्यान देते और
कहते, "यह व्यक्ति परमेश्वर की वही शक्ति है जो महान
शक्ति कहलाती है।" 11क्योंकि उसने बहुत दिनों से उन्हें
अपने चमत्कारों के चक्कर में डाल रखा था, इसीलिए वे
उस पर ध्यान दिया करते थे। 12किन्तु उन्होंने जब
फिलिप्पुस पर विश्वास किया क्योंकि उसने उन्हें परमेश्वर
के राज्य का सुसमाचार और यीशु मसीह का नाम सुनाया
था, तो वे स्त्री और पुरुष दोनों ही बपतिस्मा लेने लगे।
13और स्वयं शमौन ने भी उन पर विश्वास किया। और
बपतिस्मा लेने के बाद फिलिप्पुस के साथ वह बड़ी निकटता
से रहने लगा। उन महान् चिह्नों और किये जा रहे अद्भुत
कार्यों को जब उसने देखा, तो वह दंग रह गया।

14उधर यरुशलेम में प्रेरितों ने जब यह सुना कि
सामरिया के लोगों ने परमेश्वर के वचन को स्वीकार
कर लिया है तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास
भेजा। 15सो जब वे पहुँचे तो उन्होंने उनके लिये प्रार्थना
की कि उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हो। 16क्योंकि अभी तक
पवित्र आत्मा किसी पर भी नहीं उतरा था, उन्हें बस प्रभु
यीशु के नाम का बपतिस्मा ही दिया गया 17सो पतरस
और यूहन्ना ने उन पर अपने हाथ रखे और उन्हें पवित्र
आत्मा प्राप्त हो गया।

18जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने भर से
पवित्र आत्मा दे दिया गया तो उनके सामने धन प्रस्तुत
करते हुए वह बोला, 19"यह शक्ति मुझे दे दो ताकि जिस
किसी पर मैं हाथ रखूँ, उसे पवित्र आत्मा मिल जाये।"

20पतरस ने उससे कहा, "तेरा और तेरे धन का
सत्यानाश हो, क्योंकि तूने यह सोचा कि तू धन से परमेश्वर
के वरदान को मोल ले सकता है। 21इस विषय में न तेरा
कोई हिस्सा है, और न कोई साझा क्योंकि परमेश्वर के

सम्मुख तेरा हृदय ठीक नहीं है। 22इसलिये अपनी इस
दुष्टता से मन फिराव कर और प्रभु से प्रार्थना कर। हो
सकता है तेरे मन में जो विचार था, उस विचार के लिये तू
क्षमा कर दिया जाये। 23क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तू
कटुता से भरा है और पाप के चंगुल में फँसा है।"

24इस पर शमौन ने उत्तर दिया, "तुम प्रभु से मेरे लिये
प्रार्थना करो ताकि तुमने जो कुछ कहा है, उसमें से कोई
भी बात मुझ पर न घटे।!"

25फिर प्रेरित अपनी साक्षी देकर और प्रभु का वचन
सुना कर रास्ते के बहुत से सामरी गाँवों में सुसमाचार का
उपदेश करते हुए यरूशलेम लौट आये।

इथोपिया से आये व्यक्ति को फिलिप्पुस का उपदेश

26प्रभु के एक दूत ने फिलिप्पुस को कहते हुए बताया,
"तैयार हो, और दक्षिण दिशा में उस राह पर जा, जो
यरूशलेम से गाजा को जाती है।" (यह एक सुनसान मार्ग
है।) 27सो वह तैयार हुआ और चल पड़ा। वहीं एक इथोपिया
का खोजा था। वह इथोपिया की रानी कंदाके का एक
अधिकारी था जो उसके समुचे कोष का कोषपाल था।
वह आराधना के लिये यरूशलेम गया था। 28लौटते हुए
वह अपने रथ में बैठा भविष्यवक्ता यशायाह का ग्रंथ पढ़
रहा था। 29तभी फिलिप्पुस को आत्मा से प्रेरणा मिली,
"उस रथ के पास जा और वहीं ठहर।" 30फिलिप्पुस जब
उस रथ के पास दौड़ कर गया तो उसने उसे यशायाह को
पढ़ते सुना। सो वह बोला, "क्या जिसे तू पढ़ रहा है, उसे
समझता भी है?"

31उसने कहा, "मैं भला तब तक कैसे समझ सकता हूँ,
जब तक कोई मुझे इसकी व्याख्या नहीं करे?" फिर उसने
फिलिप्पुस को रथ पर अपने साथ बैठने को बुलाया।
32शास्त्र के जिस अंश को वह पढ़ रहा था, वह था:

"उसे वध की भेड़ सा ले जाया जा रहा था।
वह तो उस मेमने के समान चुप था।
जो अपनी ऊन काटने वाले के समक्ष
चुप रहता है, ठीक वैसे ही
उसने अपना मुँह खोला नहीं!
33 ऐसी दीन दशा में उसको
न्याय से वंचित किया गया!
उसकी पीढ़ी का कौन वर्णन करेगा?
क्योंकि धरती से उसका जीवन तो ले लिया था।"

यशायाह 53:7-8

34उस खोजे ने फिलिप्पुस से कहा, "अनुग्रह करके
मुझे बता कि भविष्यवक्ता यह किसके बारे में कह रहा
है? अपने बारे में या किसी और के?" 35फिर फिलिप्पुस
ने कहना शुरू किया और इस शास्त्र से लेकर यीशु के
सुसमाचार तक सब उसे कह सुनाया।

36मार्ग में आगे बढ़ते हुए वे कहीं पानी के पास पहुँचे।
फिर उस खोजे ने कहा, "देख! यहाँ जल है। अब मुझे
बपतिस्मा लेने में क्या बाधा है?" [37"फिलिप्पुस ने उत्तर
दिया, 'यदि तू अपने सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करता है, तो
ले सकता है।' उसने उत्तर दिया, 'हाँ! मैं विश्वास करता हूँ
कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।'"]* 38तब उसने
रथ को रोकने की आज्ञा दी। फिर फिलिप्पुस और वह
खोजा दोनों ही पानी में उतर गये और फिलिप्पुस ने उसे
बपतिस्मा दिया। 39और फिर जब वे पानी से बाहर निकले
तो फिलिप्पुस को प्रभु का आत्मा कहीं उठा ले गया। और
उस खोजे ने फिर उसे कभी नहीं देखा। उधर खोजा आनन्द
मनाता हुआ अपने मार्ग पर आगे चला गया। 40उधर
फिलिप्पुस ने अपने आपको अशदोद में पाया और जब
तक वह कैसरिया नहीं पहुँच गया, सभी नगरों में सुसमाचार
का प्रचार करते हुए यात्रा करता रहा।

शाऊल का हृदय परिवर्तन

9 शाऊल अभी प्रभु के अनुयायिओं को मार डालने
की धमकियाँ दिया करता था। वह प्रमुख याजक के
पास गया 2और उसने दमिश्क के प्रार्थना सभागारों के
नाम माँग कर अधिकार पत्र ले लिया जिससे उसे वहाँ यदि
कोई इस पंथ का अनुयायी मिले, फिर चाहे वह स्त्री हो,
चाहे पुरुष, तो वह उन्हें बंदी बना सके और फिर वापस
यरूशलेम ले आये।

3सो जब चलते चलते वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो
अचानक उसके चारों ओर आकाश से एक प्रकाश कौंध
गया 4और वह धरती पर जा पड़ा। उसने एक आवाज सुनी
जो उससे कह रही थी, "शाऊल, अरे ओ शाऊल। तू मुझे
क्यों सता रहा है?"

5शाऊल ने पूछा, "प्रभु, तू कौन है?" वह बोला, "मैं
यीशु हूँ जिसे तू सता रहा है। 6पर तू अब खड़ा हो और

पद 37 'प्रेरितों के काम' की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 37 जोड़ा गया है।

नगर में जा। वहाँ तुझे बता दिया जायेगा कि तुझे क्या करना चाहिये।"

7जो पुरुष उसके साथ यात्रा कर रहे थे, अवाक् खड़े थे। उन्होंने आवाज़ तो सुनी किन्तु किसी को भी देखा नहीं। 8फिर शाऊल धरती पर से खड़ा हुआ। किन्तु जब उसने अपनी आखें खोलीं तो वह कुछ भी देख नहीं पाया। सो वे उसे हाथ पकड़ कर दमिश्क ले गये। 9तीन दिन तक वह न तो कुछ देख पाया, और न ही उसने कुछ खाया या पिया।

10दमिश्क में हनन्याह नाम का एक शिष्य था। प्रभु ने दर्शन देकर उससे कहा, "हनन्याह।" सो वह बोला, "प्रभु, मैं यह रहा।"

11प्रभु ने उससे कहा, "खड़ा हो और सीधी कहलाने वाली गली में जा। और वहाँ यहूदा के घर में जाकर तरसुस निवासी शाऊल नाम के एक व्यक्ति के बारे में पूछताछ कर क्योंकि वह प्रार्थना कर रहा है। 12उसने एक दर्शन में देखा है कि हनन्याह नाम के एक व्यक्ति ने घर में आकर उस पर हाथ रखे हैं ताकि वह फिर से देख सके।"

13हनन्याह ने उत्तर दिया, "प्रभु, मैंने इस व्यक्ति के बारे में बहुत से लोगों से सुना है। यरूशलेम में तेरे संतों के साथ इसने जो बुरी बातें की हैं, वे सब मैंने सुनी हैं। 14और यहाँ भी यह प्रमुख याजकों से तेरे नाम में सभी विश्वास रखने वालों को बंदी बनाने का अधिकार लेकर आया है।"

15किन्तु प्रभु ने उससे कहा, "तू जा क्योंकि इस व्यक्ति को विधर्मियों, राजाओं और इस्राएल के लोगों के सामने मेरा नाम लेने के लिये, एक साधन के रूप में मैंने चुना है। 16मैं स्वयं उसे वह सब कुछ बताऊँगा, जो उसे मेरे नाम के लिए सहना होगा।"

17सो हनन्याह चल पड़ा और उस घर के भीतर पहुँचा और शाऊल पर उसने अपने हाथ रख दिये और कहा, "भाई शाऊल, प्रभु यीशु ने मुझे भेजा है, जो तेरे मार्ग में तेरे सम्मुख प्रकट हुआ था ताकि तू फिर से देख सके और पवित्र आत्मा से भावित हो जाये।" 18फिर तुरंत छिलकों जैसी कोई वस्तु उसकी आँखों से ढलकी और उसे फिर दिखाई देने लगा। वह खड़ा हुआ और उसने बपतिस्मा लिया। 19फिर थोड़ा भोजन लेने के बाद उसने अपनी शक्ति पुन: प्राप्त कर ली।

शाऊल का दमिश्क में प्रचार कार्य

वह दमिश्क में शिष्यों के साथ कुछ समय ठहरा। 20फिर वह सीधा यहूदी धर्म सभागार में पहुँचा और यीशु का प्रचार करने लगा। वह बोला, "यह यीशु परमेश्वर का पुत्र है।"

21जिस किसी ने भी उसे सुना, चकित रह गया और बोला, "क्या यह वही नहीं है, जो यरूशलेम में यीशु के नाम में विश्वास रखने वालों को नष्ट करने का यत्न किया करता था। और क्या यह उन्हें यहाँ पकड़ने और प्रमुख याजकों के सामने ले जाने नहीं आया था?"

22किन्तु शाऊल अधिक से अधिक शक्तिशाली होता गया और दमिश्क में रहने वाले यहूदियों को यह प्रमाणित करते हुए कि यह यीशु ही मसीह है, पराजित करने लगा।

शाऊल का यहूदियों से बच निकलना

23बहुत दिन बीत जाने के बाद यहूदियों ने उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचा। 24किन्तु उनकी योजनाओं का शाऊल को पता चल गया। वे नगर द्वारों पर रात दिन घात लगाये रहते थे ताकि उसे मार डालें। 25किन्तु उसके शिष्य रात में उसे उठा ले गये और टोकरी में बैठा कर नगर की चारदीवारी से लटका कर उसे नीचे उतार दिया।

यरूशलेम में शाऊल का पहुँचना

26फिर जब वह यरूशलेम पहुँचा तो वह शिष्यों के साथ मिलने का जतन करने लगा। किन्तु वे तो सभी उससे डरते थे। उन्हें यह विश्वास नहीं था कि वह भी एक शिष्य है। 27किन्तु बरनाबास उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले गया और उसने उन्हें बताया कि शाऊल ने प्रभु को मार्ग में किस प्रकार देखा और प्रभु ने उससे कैसे बातें कीं। और दमिश्क में किस प्रकार उसने निर्भयता से यीशु के नाम का प्रचार किया।

28फिर शाऊल उनके साथ यरूशलेम में स्वतन्त्रतापूर्वक आते जाते रहने लगा। वह निर्भीकता के साथ प्रभु के नाम का प्रवचन किया करता था। 29वह यूनानी भाषा-भाषी यहूदियों के साथ वाद-विवाद और चर्चाएँ करता किन्तु वे तो उसे मार डालना चाहते थे। 30किन्तु जब बंधुओं को इस बात का पता चला तो वे उसे कैसरिया ले गये और फिर उसे तरसुस पहुँचा दिया।

31इस प्रकार समूचे यहूदिया, गलील और सामरिया के
कलीसिया का वह समय शांति से बीता। वह कलीसिया
और अधिक शक्तिशाली होने लगी। क्योंकि वह प्रभु से
डर कर अपना जीवन व्यतीत करती थी, और पवित्र आत्मा
ने उसे और अधिक प्रोत्साहित किया था सो उसकी संख्या
बढ़ने लगी।

32फिर उस समूचे क्षेत्र में घूमता फिरता पतरस लिद्दा
के संतों से मिलने पहुँचा। 33वहाँ उसे अनियास नाम का
एक व्यक्ति मिला जो आठ साल से बिस्तर में पड़ा था। उसे
लकवा मार गया था। 34पतरस ने उससे कहा, "अनियास,
यीशु मसीह तुझे स्वस्थ करता है। खड़ा हो और अपना
बिस्तर ठीक कर।" सो वह तुरंत खड़ा हो गया। 35फिर
लिद्दा और शारोन में रहने वाले सभी लोगों ने उसे देखा
और वे प्रभु की ओर मुड़ गये।

पतरस याफा में

36याफा में तबीता नाम की एक शिष्या रहा करती थी
(जिसका यूनानी अनुवाद है दोरकास अर्थात् हिरणी)। वह
सदा अच्छे अच्छे काम करती और गरीबों को दान देती।
37उन्हीं दिनों वह बीमार हुई और मर गयी। उन्होंने उसके
शव को स्नान करा के सीढ़ियों के ऊपर कमरे में रख
दिया। 38लिद्दा याफा के पास ही था, सो शिष्यों ने जब यह
सुना कि पतरस लिद्दा में है तो उन्होंने उसके पास दो
व्यक्ति भेजे कि वे उससे विनती करें, "अनुग्रह कर के
जल्दी से जल्दी हमारे पास आ जा!" 39सो पतरस तैयार
होकर उनके साथ चल दिया। जब पतरस वहाँ पहुँचा तो वे
उसे सीढ़ियों के ऊपर कमरे में ले गये। वहाँ सभी विधवाएँ
विलाप करते हुए और उन कुर्तियों और दूसरे वस्त्रों को
जिन्हें दोरकास ने जब वह उनके साथ थी, बनाया था,
दिखाते हुए उसके चारों ओर खड़ी हो गयीं। 40पतरस ने
हर किसी को बाहर भेज दिया और घुटनों के बल झुक
कर उसने प्रार्थना की। फिर शव की ओर मुड़ते हुए उसने
कहा, "तबीता–खड़ी हो जा!" उसने अपनी आखें खोल दीं
और पतरस को देखते हुए वह उठ बैठी। 41उसे अपना
हाथ देकर पतरस ने खड़ा किया और फिर संतों और
विधवाओं को बुलाकर उन्हें उसे जीवित सौंप दिया। 42समूचे
याफा में हर किसी को इस बात का पता चल गया और
बहुत से लोगों ने प्रभु में विश्वास किया। 43फिर याफा में
शमोन नाम के एक चर्मकार के यहाँ पतरस बहुत दिनों
तक ठहरा।

पतरस और कुरनेलियुस

10 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का एक व्यक्ति
था। वह सेना के उस दल का नायक था जिसे
इतालवी कहा जाता था। 2वह परमेश्वर से डरने वाला
भक्त था और वैसा ही उसका परिवार भी था। वह गरीब
लोगों की सहायता के लिये उदारतापूर्वक दान दिया करता
था और सदा ही परमेश्वर की प्रार्थना करता रहता था।
3दिन के नवें पहर के आसपास उसने एक दर्शन में स्पष्ट
रूप से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास
आया है और उससे कह रहा है, "कुरनेलियुस!"

4सो कुरनेलियुस डरते हुए स्वर्गदूत की ओर देखते हुए
बोला, "हे प्रभु, यह क्या है?"

स्वर्गदूत ने उससे कहा, "तेरी प्रार्थनाएँ और दीन दुखियों
को दिया हुआ तेरा दान एक स्मारक के रूप में तुझे याद
दिलाने के लिए परमेश्वर के पास पहुचें हैं। 5सो अब कुछ
व्यक्तियों को याफा भेज और शमौन नाम के एक व्यक्ति
को, जो पतरस भी कहलाता है, यहाँ बुलवा ले। 6वह शमौन
नाम के एक चर्मकार के साथ रह रहा है। उसका घर
सागर के किनारे है।" 7वह स्वर्गदूत जो उससे बात कर
रहा था, जब चला गया तो उसने अपने दो सेवकों और
अपने निजी सहायकों में से एक भक्त सिपाही को बुलाया
8और जो कुछ घटित हुआ था, उन्हें सब कुछ बताकर
याफा भेज दिया।

9अगले दिन जब वे चलते चलते नगर के निकट पहुँचने
ही वाले थे, पतरस दोपहर के समय प्रार्थना करने को छत
पर चढ़ा। 10उसे भूख लगी, सो वह कुछ खाना चाहता था।
वे जब भोजन तैयार कर ही रहे थे तो उसकी समाधि लग
गयी। 11और उसने देखा कि आकाश खुल गया है और
एक बड़ी चादर जैसी कोई वस्तु नीचे उतर रही है। उसे
चारों कोनों से पकड़ कर धरती पर उतारा जा रहा है।
12उस पर हर प्रकार के पशु, धरती के रेंगने वाले जीव–
जंतु और आकाश के पक्षी थे। 13फिर एक स्वर ने उससे
कहा, "पतरस उठ। मार और खा।"

14पतरस ने कहा, "प्रभु, निश्चित रूप से नहीं, क्योंकि
मैंने कभी भी किसी तुच्छ या समय के अनुसार अपवित्र
आहार को नहीं लिया है।"

15इस पर उन्हें दूसरी बार फिर वाणी सुनाई दी, "किसी
भी वस्तु को जिसे परमेश्वर ने पवित्र बनाया है, तुच्छ मत
कहना!" 16तीन बार ऐसा ही हुआ और वह वस्तु फिर
तुरंत आकाश में वापस उठा ली गयी।
17पतरस ने जिस दृश्य को दर्शन में देखा था, उस पर
वह अभी चक्कर में ही पड़ा हुआ था कि कुरनेलियुस के
भेजे वे लोग दरवाजे पर खड़े पूछ रहे थे कि शमौन का
घर कहाँ है? 18उन्होंने बाहर बुलाते हुए पूछा, "क्या पतरस
कहलाने वाला शमौन अतिथि के रूप में यहीं ठहरा है?"
19पतरस अभी उस दर्शन के बारे में सोच ही रहा था
कि आत्मा ने उससे कहा, "सुन, तीन व्यक्ति तुझे ढूँढ रहे
हैं। 20सो खड़ा हो, और नीचे उतर बेझिझक उनके साथ
चला जा, क्योंकि उन्हें मैंने ही भेजा है।" 21इस प्रकार
पतरस नीचे उतर आया और उन लोगों से बोला, "मैं वही
हूँ, जिसे तुम खोज रहे हो। तुम क्यों आये हो।?"
22वे बोले, "हमें सेनानायक कुरनेलियुस ने भेजा है।
वह परमेश्वर से डरने वाला नेक पुरुष है। यहूदी लोगों में
उसका बहुत सम्मान है। उससे पवित्र-स्वर्गदूत ने तुझे
अपने घर बुलाने का निमन्त्रण देने को और जो कुछ तू
कहे उसे सुनने को कहा है।" 23इस पर पतरस ने उन्हें
भीतर बुला लिया और ठहरने को स्थान दिया।
फिर अगले दिन तैयार होकर वह उनके साथ चला
गया। और याफा के निवासी कुछ अन्य बन्धु भी उसके
साथ हो लिये। 24अगले ही दिन वह कैसरिया जा पहुँचा।
वहाँ अपने सम्बन्धियों और निकट-मित्रों को बुलाकर
कुरनेलियुस उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। 25पतरस जब
भीतर पहुँचा तो कुरनेलियुस से उसकी भेंट हुई।
कुरनेलियुस ने उसके चरणों पर गिरते हुए उसको दण्डवत
प्रणाम किया। 26किन्तु उसे उठाते हुए पतरस बोला, "खड़ा
हो। मैं तो स्वयं मात्र एक मनुष्य हूँ।" 27फिर उसके साथ
बात करते करते वह भीतर चला गया। और वहाँ उसने
बहुत से लोगों को एकत्र पाया। 28उसने उनसे कहा, "तुम
जानते हो कि एक यहूदी के लिये किसी दूसरी जाति के
व्यक्ति के साथ कोई सम्बन्ध रखना या उसके यहाँ जाना
विधान के विरुद्ध है किन्तु फिर भी परमेश्वर ने मुझे
दर्शाया है कि मैं किसी भी व्यक्ति को अशुद्ध या अपवित्र
न कहूँ। 29इसीलिए मुझे जब बुलाया गया तो मैं बिना किसी
आपत्ति के आ गया। इसलिये मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुमने
मुझे किस लिये बुलाया है।"
30इस पर कुरनेलियुस ने कहा, "चार दिन पहले इसी
समय दिन के नवें पहर (तीन बजे) मैं अपने घर में प्रार्थना
कर रहा था। अचानक चमचमाते वस्त्रों में एक व्यक्ति
मेरे सामने आ खड़ा हुआ। 31और कहा, 'कुरनेलियुस!
तेरी विनती सुन ली गयी है और दीन दुखियों को दिये गये
तेरे दान परमेश्वर के सामने याद किये गये हैं। 32इसलिये
याफा भेजकर पतरस कहलाने वाले शमौन को बुलवा
भेज। वह सागर किनारे चर्मकार शमौन के घर ठहरा
हुआ है।' 33इसीलिए मैंने तुरंत तुझे बुलवा भेजा और तूने
यहाँ आने की कृपा करके बहुत अच्छा किया। सो अब
प्रभु ने जो कुछ आदेश तुझे दिये हैं, उस सब कुछ को
सुनने के लिये हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने उपस्थित
हैं।"

कुरनेलियुस के घर पतरस का प्रवचन

34फिर पतरस ने अपना मुँह खोला। उसने कहा, "अब
सचमुच मैं समझ गया हूँ कि परमेश्वर कोई भेद भाव
नहीं करता 35बल्कि हर जाति का कोई भी ऐसा व्यक्ति
जो उससे डरता है और नेक काम करता है, वह उसे
स्वीकार करता है। 36यही है वह संदेश जिसे उसने यीशु
मसीह के द्वारा शांति के सुसमाचार का उपदेश देते हुए
इस्राएल के लोगों को दिया था। वह सभी का प्रभु है।
37तुम उस महान घटना को जानते हो, जो समूचे यहूदिया
में घटी थी। गलील में प्रारम्भ होकर यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा
दिए जाने के बाद से जिसका प्रचार किया गया था। 38तुम
नासरी यीशु के विषय में जानते हो कि परमेश्वर ने पवित्र
आत्मा और शक्ति से उसका अभिषेक कैसे किया था
और उत्तम कार्य करते हुए तथा उन सब को जो शैतान के
बस में थे, चंगा करते हुए चारों ओर वह कैसे घूमता रहा
था। क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। 39और हम उन
सब बातों के साक्षी हैं जिन्हें उसने यहूदियों के प्रदेश और
यरुशलेम में किया था। उन्होंने उसे ही एक पेड़ पर
लटका कर मार डाला। 40किन्तु परमेश्वर ने तीसरे दिन
उसे फिर से जीवित कर दिया और उसे प्रकट होने को
प्रेरित किया। 41सब लोगों के सामने नहीं वरन् बस उन
साक्षियों के सामने जो परमेश्वर के द्वारा पहले से चुन
लिये गये थे। अर्थात् हमारे सामने जिन्होंने उसके मरे हुओं
में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया और पिया।
42उसी ने हमें आदेश दिया है कि हम लोगों को उपदेश दें

और प्रमाणित करें कि यह वही है, जो परमेश्वर के द्वारा
जीवितों और मरे हुओं का न्यायकर्ता बनने को नियुक्त
किया गया है। 43सभी भविष्यवक्ताओं ने उसके विषय में
साक्षी दी है कि उसमें विश्वास करने वाला हर व्यक्ति
उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा पाता है।"

ग़ैर यहूदियों पर पवित्र आत्मा का उतरना

44पतरस अभी ये बातें कह ही रहा था कि उन सब पर
पवित्र आत्मा उतर आया जिन्होंने सुसंदेश सुना था।
45क्योंकि पवित्र आत्मा का वरदान ग़ैर यहूदियों पर भी
उँडेला जा रहा था, सो पतरस के साथ आये यहूदी विश्वासी
आश्चर्य में डूब गये। 46वे उन्हें नाना भाषाएँ बोलते और
परमेश्वर की स्तुति करते हुए सुन रहे थे। तब पतरस
बोला, 47"क्या कोई इन लोगों को बपतिस्मा देने के लिये,
जल सुलभ कराने को मना कर सकता है? इन्हें भी वैसे
ही पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ हैं, जैसे हमें।" 48इस प्रकार
उसने यीशु मसीह के नाम में उन्हें बपतिस्मा देने की आज्ञा
दी। फिर उन्होंने पतरस से अनुरोध किया कि वह कुछ
दिन उनके साथ ठहरे।

पतरस का यरूशलेम लौटना

11 समूचे यहूदिया में बंधुओं और प्रेरितों ने सुना
कि प्रभु का वचन ग़ैर यहूदियों ने भी ग्रहण कर
लिया है। 2सो जब पतरस यरुशलेम पहुँचा तो उन्होंने जो
ख़तना के पक्ष में थे, उसकी आलोचना की। 3वे बोले, "तू
ख़तना रहित लोगों के घर में गया है और तूने उनके साथ
खाना खाया है।"

4इस पर पतरस वास्तव में जो घटा था, उसे सुनाने
समझाने लगा। 5"मैंने याफा नगर में प्रार्थना करते हुए
समाधि में एक दृश्य देखा। मैंने देखा कि एक बड़ी चादर
जैसी कोई वस्तु नीचे उतर रही है, उसे चारों कोनों से
पकड़ कर आकाश से धरती पर उतारा जा रहा है। फिर
वह उतर कर मेरे पास आ गयी। 6मैंने उस को ध्यान से
देखा। मैंने देखा कि उसमें धरती के चौपाये जीव-जंतु,
जँगली पशु रेंगने वाले जीव और आकाश के पक्षी थे।
7फिर मैंने एक आवाज़ सुनी, जो मुझसे कह रही थी,
'पतरस उठ, मार और खा।' 8किन्तु मैंने कहा, 'प्रभु,
निश्चित रूप से नहीं, क्योंकि मैंने कभी भी किसी तुच्छ
या समय के अनुसार किसी अपवित्र आहार को नहीं
लिया है।' 9आकाश से दूसरी बार उस स्वर ने फिर कहा,
'जिसे परमेश्वर ने पवित्र बनाया है, उसे तू अपवित्र मत
समझ।' 10तीन बार ऐसा ही हुआ। फिर वह सब आकाश
में वापस उठा लिया गया। 11उसी समय जहाँ मैं ठहरा
हुआ था, उस घर में तीन व्यक्ति आ पहुचें। उन्हें मेरे पास
कैसरिया से भेजा गया था। 12आत्मा ने मुझसे उनके साथ
बेझिझक चले जाने को कहा। ये छह: बन्धु भी मेरे साथ
गये। और हमने उस व्यक्ति के घर में प्रवेश किया।
13उसने हमें बताया कि एक स्वर्गदूत को अपने घर में
खड़े उसने कैसे देखा था। जो कह रहा था याफा भेज कर
पतरस कहलाने वाले शमौन को बुलवा ले। 14वह
तुझे वचन सुनायेगा जिससे तेरा और तेरे परिवार का
उद्धार होगा। 15जब मैंने प्रवचन आरम्भ किया तो पवित्र
आत्मा उन पर उतर आया। ठीक वैसे ही जैसे प्रारम्भ में
हम पर उतरा था। 16फिर मुझे प्रभु का कहा यह वचन
याद हो आया, 'यूहन्ना जल से बपतिस्मा देता था किन्तु
तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जायेगा।' 17इस
प्रकार यदि परमेश्वर ने उन्हें भी वही बरदान दिया जिसे
उसने जब हमने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया था,
तब हमें दिया था, तो विरोध करने वाला मैं कौन होता
था?"

18विश्वासियों ने जब यह सुना तो उन्होंने प्रश्न करना
बन्द कर दिया। वे परमेश्वर की महिमा करते हुए कहने
लगे, "अच्छा, तो परमेश्वर ने विधर्मियों तक को मन
फिराव का वह अवसर दिया है, जो जीवन की ओर ले
जाता है!"

अंताकिया में सुसमाचार का आगमन

19वे लोग जो स्तिफनुस के समय में दी जा रही यातनाओं
के कारण तितर-बितर हो गये थे, दूर-दूर तक फीनीक,
साइप्रस और अंताकिया तक जा पहुँचे। ये यहूदियों को
छोड़ किसी भी और को सुसमाचार नहीं सुनाते थे। 20इन्हीं
विश्वासियों में से कुछ साइप्रस और कुरैन के थे। सो जब
वे अंताकिया आये तो यूनानियों को भी प्रवचन देते हुए
प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाने लगे। 21प्रभु की शक्ति
उनके साथ थी। सो एक विशाल जन समुदाय विश्वास
धारण करके प्रभु की ओर मुड़ गया।

22इसका समाचार जब यरुशलेम में कलीसिया के
कानों तक पहुँचा तो उन्होंने बरनाबास को अंताकिया

जाने को भेजा। 23जब बरनाबास ने वहाँ पहुँच कर प्रभु के अनुग्रह को सकारथ होते देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उन सभी को प्रभु के प्रति भक्तिपूर्ण हृदय से विश्वासी बने रहने को उत्साहित किया। 24क्योंकि वह पवित्र आत्मा और विश्वास से पूर्ण एक उत्तम पुरुष था। फिर प्रभु के साथ एक विशाल जनसमूह और जुड़ गया।

25बरनाबास शाऊल को खोजने तरसुस को चला गया। 26फिर वह उसे ढूँढ कर अंताकिया ले आया। सारे साल वे कलीसिया से मिलते जुलते और विशाल जनसमूह को उपदेश देते रहे। अंताकिया में सबसे पहले इन्हीं शिष्यों को "मसीही" कहा गया।

27इसी समय यरुशलेम से कुछ नबी अंताकिया आये। 28उनमें से अगबुस नाम के एक भविष्यवक्ता ने खड़े होकर पवित्र आत्मा के द्वारा यह भविष्यवाणी की कि सारी दुनिया में एक भयानक अकाल पड़ने वाला है (क्लोदियुस के काल में यह अकाल पड़ा था) 29तब हर शिष्य ने अपनी शक्ति के अनुसार यहूदिया में रहने वाले बन्धुओं की सहायता के लिये कुछ भेजने का निश्चय किया था। 30सो उन्होंने ऐसा ही किया और उन्होंने बरनाबास और शाऊल के हाथों अपने बुज़ुर्गों के पास अपने उपहार भेजे

हेरोदेस का कलीसिया पर अत्याचार

12 उसी समय के आसपास राजा हेरोदेस* ने कलीसिया के कुछ सदस्यों को सताना प्रारम्भ कर दिया। 2उसने यूहन्ना के भाई याकूब की, तलवार से हत्या करवा दी। 3उसने जब यह देखा कि इस बात से यहूदी प्रसन्न होते हैं तो उसने पतरस को भी बंदी बनाने के लिये हाथ बढ़ाया (यह बिना ख़मीर की रोटी के उत्सव के दिनों की बात है) 4हेरोदेस ने पतरस को पकड़ कर जेल में डाल दिया। उसे चार चार सैनिकों की चार पंक्तियों के पहरे के हवाले कर दिया गया। प्रयोजन यह था कि उस पर मुकदमा चलाने के लिये फसह पर्व के बाद उसे लोगों के सामने बाहर लाया जाये। 5सो पतरस को जेल में रोके रखा गया। उधर कलीसिया हृदय से उसके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करती रही।

जेल से पतरस का छुटकारा

6जब हेरोदेस मुकदमा चलाने के लिये उसे बाहर लाने को था, उस रात पतरस दो सैनिकों के बीच सोया हुआ था। वह दो ज़ंजीरों से बँधा था और द्वार पर पहरेदार जेल की रखवाली कर रहे थे। 7अचानक प्रभु का एक स्वर्गदूत वहाँ आ खड़ा हुआ, जेल की कोठरी प्रकाश से जगमग हो उठी, उसने पतरस की बगल थपथपाई और उसे जगाते हुए कहा, "जल्दी खड़ा हो।" जंजीरें उसके हाथों से खुल कर गिर पड़ी। 8तभी स्वर्गदूत ने उसे आदेश दिया, "तैयार हो और अपनी चप्पल पहन ले।" सो पतरस ने वैसा ही किया। स्वर्गदूत ने उससे फिर कहा, "अपना चोगा पहन ले और मेरे पीछे चला आ।" 9फिर उसके पीछे-पीछे पतरस बाहर निकल आया। वह समझ नहीं पाया कि स्वर्गदूत जो कुछ कर रहा था, वह यथार्थ था। उसने सोचा कि वह कोई दर्शन देख रहा है। 10पहले और दूसरे पहरेदार को छोड़ कर आगे बढ़ते हुए वे लोहे के उस फाटक पर आ पहुँचे जो नगर की ओर जाता था। वह उनके लिये आप से आप खुल गया। और वे बाहर निकल गये। वे अभी गली पार ही गये थे कि वह स्वर्गदूत अचानक उसे छोड़ गया।

11फिर पतरस को जैसे होश आया, वह बोला, "अब मेरी समझ में आया कि यह वास्तव में सच है कि प्रभु ने अपने स्वर्गदूत को भेज कर हेरोदेस के पंजे से मुझे छुड़ाया है। यहूदी लोग मुझ पर जो कुछ घटने की सोच रहे थे, उससे उसी ने मुझे बचाया है।"

12जब उसने यह समझ लिया तो वह यूहन्ना की माता मरियम के घर चला गया। (यूहन्ना जो मरकुस भी कहलाता है।) वहाँ बहुत से लोग एक साथ प्रार्थना कर रहे थे। 13पतरस ने द्वार को बाहर से खटखटाया। उसे देखने रूदे नाम की एक दासी वहाँ आयी। 14पतरस की आवाज़ को पहचान कर आनन्द के मारे उसके लिए द्वार खोले बिना ही वह उल्टी भीतर दौड़ गयी और उसने बताया कि पतरस द्वार पर खड़ा है। 15वे उससे बोले, "तू पागल हो गयी है।" किन्तु वह बलपूर्वक कहती रही कि यह ऐसा ही है। इस पर उन्होंने कहा, "वह उसका स्वर्गदूत होगा।"

16उधर पतरस द्वार खटखटाता ही रहा। फिर उन्होंने जब द्वार खोला और उसे देखा तो वे अचरज में पड़ गये। 17उन्हें हाथ से चुप रहने का संकेत करते हुए उसने खोलकर बताया कि प्रभु ने उसे जेल से कैसे बाहर

हेरोदेस यहाँ हेरोदेस से अभिप्राय है हेरोदेस प्रथम जो हेरोदेस महान का पोता था।

निकाला है। उसने कहा, "याकूब तथा अन्य बन्धुओं को इस विषय में बता देना।" और तब वह उस स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान को चला गया।

18जब भोर हुई तो पहरेदारों में बड़ी खलबली फैल गयी। वे अचरज में पड़े सोच रहे थे कि पतरस के साथ क्या हुआ होगा। 19इसके बाद हेरोदेस जब उसकी खोज बीन कर चुका और वह उसे नहीं मिला तो उसने पहरेदारों से पूछताछ की और उन्हें मार डालने की आज्ञा दी।

हेरोदेस की मृत्यु

हेरोदेस फिर यहूदिया से जा कर कैसरिया में रहने लगा। वहाँ उसने कुछ समय बिताया। 20वह सूर और सैदा के लोगों से बहुत क्रोधित रहता था। वे एक समूह बनाकर उससे मिलने आये। राजा के निजी सेवक बलासतुस की मानमनौवल करके उन्होंने हेरोदेस से शांति की प्रार्थना की क्योंकि उनके देश को राजा के देश से ही खाने को मिलता था।

21एक निश्चित दिन हेरोदेस अपनी राजसी वेश-भूषा पहन कर अपने सिंहासन पर बैठा और लोगों को भाषण देने लगा। 22लोग चिल्लाये, "यह तो किसी देवता की वाणी है, मनुष्य की नहीं।" 23क्योंकि हेरोदेस ने परमेश्वर को महिमा प्रदान नहीं की थी, इसलिए तत्काल प्रभु के एक स्वर्गदूत ने उसे बीमार कर दिया। और उसमें कीड़े पड़ गये जो उसे खाने लगे और वह मर गया।

24किन्तु परमेश्वर का वचन प्रचार पाता रहा और फैलता रहा।

25बरनाबास और शाऊल यरूशलेम में अपना काम पूरा करके मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को भी साथ लेकर अंताकिया लौट आये

बरनाबास और शाऊल का चुना जाना

13 अंताकिया के कलीसिया में कुछ नबी और बरनाबास, काला कहलाने वाला शमौन, कुरेन का लूकियुस, देश के चौथाई भाग के राजा हेरोदेस के साथ पालितपोषित मनाहेम और शाऊल जैसे कुछ शिक्षक थे। 2वे जब उपवास करते हुए प्रभु की उपासना में लगे हुए थे, तभी पवित्र आत्मा ने कहा, "बरनाबास और शाऊल को जिस काम के लिये मैंने बुलाया है, उसे करने के लिये मेरे निमित्त, उन्हें अलग कर दो।"

3सो जब शिक्षक और नबी अपना उपवास और प्रार्थना पूरी कर चुके तो उन्होंने बरनाबास और शाउल पर अपने हाथ रखे और उन्हें विदा कर दिया।

बरनाबास और शाऊल की साइप्रस यात्रा

4पवित्र आत्मा के द्वारा भेजे हुए वे सिलुकिया गये जहाँ से जहाज़ में बैठ कर वे साइप्रस पहुँचें। 5फिर जब वे सलमीस पहुँचे तो उन्होंने यहूदियों के सभागारों में परमेश्वर के वचन का प्रचार किया। यूहन्ना सहायक के रूप में उनके साथ था।

6उस समूचे द्वीप की यात्रा करते हुए वे पाफुस तक जा पहुँचे। वहाँ उन्हें एक जादूगर मिला, वह झूठा नबी था। उस यहूदी का नाम था बार-यीशु। 7वह एक अत्यंत बुद्धिमान पुरुष था। वह राज्यपाल सिरगियुस पौलुस का सेवक था जिसने परमेश्वर का वचन फिर सुनने के लिये बरनाबास और शाऊल को बुलाया था। 8किन्तु इलीमास जादूगर ने उनका विरोध किया। (यह बार-यीशु का अनुवादित नाम है)। उसने नगर-पति के विश्वास को डिगाने का जतन किया। 9फिर शाऊल ने जिसे पौलूस भी कहा जाता था, पवित्र आत्मा से अभिभूत होकर इलीमास पर पैनी दृष्टि डालते हुए कहा, 10"सभी प्रकार के छलों और धूर्तताओं से भरे, अरे शैतान के बेटे, तू हर नेकी का शत्रु है। क्या तू प्रभु के सीधे-सच्चे मार्ग को तोड़ना मरोड़ना नहीं छोड़ेगा? 11अब देख प्रभु का हाथ तुझ पर आ पड़ा है। तू अंधा हो जायेगा और कुछ समय के लिये सूर्य तक को नहीं देख पायेगा।"

तुरन्त एक धुंध और अँधेरा उस पर छा गया और वह इधर-उधर टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़ कर उसे चलाये। 12सो नगर-पति ने, जो कुछ घटा था, जब उसे देखा तो उसने विश्वास धारण किया। वह प्रभु सम्बन्धी उपदेशों से बहुत चकित हुआ।

पौलुस और बरनाबास का साइप्रस से प्रस्थान

13फिर पौलुस और उसके साथी पाफुस से नाव के द्वारा पम्फूलिया के पिरगा में आ गये। किन्तु यूहन्ना उन्हें वहीं छोड़ कर यरुशलेम लौट आया। 14उधर वे अपनी यात्रा पर बढ़ते हुए पिरगा से पिसिदिया के अंताकिया में आ पहुँचे। फिर सब्त के दिन यहूदी प्रार्थना-सभागार में जा कर बैठ गये। 15व्यवस्था के विधान और नबियों के

ग्रन्थों का पाठ कर चुकने के बाद यहूदी प्रार्थना सभागार के अधिकारियों ने उनके पास यह संदेशा कहला भेजा, "हे भाइयो, लोगों को शिक्षा देने के लिये तुम्हारे पास कहने को कोई और वचन है तो उसे सुनाओ।"

16इस पर पौलुस खड़ा हुआ और अपने हाथ हिलाते हुए बोलने लगा, "हे इस्राएल के लोगो और परमेश्वर से डरने वाले ग़ैर यहूदियो, सुनो: 17इन इस्राएल के लोगों के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुना था और जब हमारे लोग मिस्र में ठहरे हुए थे, उसने उन्हें महान् बनाया था और अपनी महान शक्ति से ही वह उनको उस धरती से बाहर निकाल लाया था। 18और लगभग चालीस वर्ष तक वह जंगल में उनकी सहता रहा। 19और कनान देश की सात जातियों को नष्ट करके उसने वह धरती इस्राएल के लोगों को उत्तराधिकार के रूप में दे दी। 20इस सब कुछ में कोई लगभग साढ़े चार सौ वर्ष लगे।

"इसके बाद शमूएल नबी के समय तक उसने उन्हें अनेक न्यायकर्ता दिये। 21फिर उन्होंने एक राजा की माँग की, सो परमेश्वर ने बेंजामिन के गोत्र के एक व्यक्ति कीश के बेटे शाऊल को चालीस साल के लिये उन्हें दे दिया। 22फिर शाऊल को हटा कर उसने उनका राजा दाऊद को बनाया जिसके विषय में उसने यह साक्षी दी थी, 'मैंने यिशे के बेटे दाऊद को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पाया है, जो मेरे मन के अनुकूल है। जो कुछ मैं उससे कराना चाहता हूँ, वह उस सब कुछ को करेगा।' 23इस ही मनुष्य के एक वंशज को अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार परमेश्वर इस्राएल में उद्धार कर्ता यीशु के रूप में ला चुका है। 24उसके आने से पहले यूहन्ना इस्राएल के सभी लोगों में मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता रहा है। 25यूहन्ना जब अपने काम को पूरा करने को था, तो उसने कहा था, 'तुम मुझे जो समझते हो, मैं वह नहीं हूँ। किन्तु एक ऐसा है जो मेरे बाद आ रहा है। मैं जिसकी जूतियों के बन्ध खोलने लायक भी नहीं हूँ।'

26"भाइयो, इब्राहीम की सन्तानो और परमेश्वर के उपासक ग़ैर यहूदियो! उद्धार का यह सुसंदेश हमारे लिए ही भेजा गया है। 27यरुशलेम में रहने वालों और उनके शासकों ने यीशु को नहीं पहचाना। और उसे दोषी ठहरा दिया। इस तरह उन्होंने नबियों के उन वचनों को ही पूरा किया जिनका हर सब्त के दिन पाठ किया जाता है। 28और यद्यपि उन्हें उसे मृत्यु दण्ड देने का कोई आधार नहीं मिला, तो भी उन्होंने पिलातुस से उसे मरवा डालने की माँग की। 29उसके विषय में जो कुछ लिखा था, जब वे उस सब कुछ को पूरा कर चुके तो उन्होंने उसे क्रूस पर से नीचे उतार लिया और एक कब्र में रख दिया। 30किन्तु परमेश्वर ने उसे मरने के बाद फिर से जीवित कर दिया। 31और फिर जो लोग गलील से यरुशलेम तक उसके साथ रहे थे वह उनके सामने कई दिनों तक प्रकट होता रहा। ये अब लोगों के लिये उसकी साक्षी हैं। 32हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में सुसमाचार सुना रहे हैं जो हमारे पूर्वजों के साथ की गयी थी 33यीशु को, मर जाने के बाद पुनर्जीवित करके, उनकी संतानों के लिये परमेश्वर ने उसी प्रतिज्ञा को हमारे लिए पूरा किया है। जैसा कि भजन संहिता के दूसरे भजन में लिखा भी गया है:

'तू मेरा पुत्र है,
मैंने तुझे आज ही जन्म दिया है।'

भजन संहिता 2:7

34और उसने उसे मरे हुओं में से जिला कर उठाया ताकि क्षय होने के लिये उसे फिर लौटना न पड़े। उसने इस प्रकार कहा था:

'मैं तुझे वे पवित्र और अटल आशीश दूँगा
जिन्हें देने का वचन मैंने दाऊद को दिया।'

यशायाह 55:3

35इसी प्रकार एक अन्य भजन में वह कहता है:

'तू अपने उस पवित्र जन को
क्षय का अनुभव नहीं होने देगा।'

भजन संहिता 16:10

36फिर दाऊद अपने युग में परमेश्वर के प्रयोजन के अनुसार अपना सेवा-कार्य पूरा करके चिर-निद्रा में सो गया, उसे उसके पूर्वजों के साथ दफना दिया गया और उसका क्षय हुआ। 37किन्तु जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं के बीच से जिला कर उठाया, उसका क्षय नहीं हुआ। 38-39सो हे भाइयों, तुम्हें जान लेना चाहिये कि यीशु के द्वारा ही पापों की क्षमा का उपदेश तुम्हें दिया गया है। और इसी के द्वारा हर कोई जो विश्वासी है, उन पापों से छुटकारा पा सकता है, जिनसे तुम्हें मूसा की व्यवस्था छुटकारा नहीं दिला सकती थी। 40सो सावधान रहो, कहीं नबियों ने जो कुछ कहा है, तुम पर न घट जाये:

41 'निन्दा करने वालो, देखो,
भोचक्के हो कर मर जाओ,
क्योंकि तुम्हारे युग में एक कार्य ऐसा
करता हूँ, जिसकी चर्चा तक पर तुमको
कभी प्रतीति नहीं होने की!'"

हबक्कूक 1:5

42पौलुस और बरनाबास जब वहाँ से जा रहे थे तो लोगों ने उनसे अगले सब्त के दिन ऐसी ही और बातें बताने की प्रार्थना की। 43जब सभा समाप्त हुई तो बहुत से यहूदियों और ग़ैर यहूदी भक्तों ने पौलुस और बरनाबास का अनुसरण किया। पौलुस और बरनाबास ने उनसे बातचीत करते हुए आग्रह किया कि वे परमेश्वर के अनुग्रह में स्थिति बनाये रखें।

44अगले सब्त के दिन तो लगभग समूचा नगर ही प्रभु का वचन सुनने के लिये उमड़ पड़ा। 45इस विशाल जन समूह को जब यहूदियों ने देखा तो वे बहुत कुढ़ गये और अपशब्दों का प्रयोग करते हुए पौलुस ने जो कुछ कहा था, उसका विरोध करने लगे। 46किन्तु पौलुस और बरनाबास ने निडर होकर कहा, "यह आवश्यक था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता किन्तु क्योंकि तुम उसे नकारते हो तथा तुम अपने आपको अनन्त जीवन के योग्य नहीं समझते, सो हम अब ग़ैर यहूदियों की ओर मुड़ते हैं। 47क्योंकि प्रभु ने हमें ऐसी आज्ञा दी है:

'मैंने तुमको ज्योति बनाया,
उनके हेतु जो यहूदी नही,
ताकि सभी का उद्धार करें,
दूर धरा के अपर छोर तक।'"

यशायाह 49:6

48ग़ैर यहूदियों ने जब यह सुना तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रभु के वचन का सम्मान किया। फिर उन्होंने जिन्हें अनन्त जीवन पाने के लिये निश्चित किया था, विश्वास ग्रहण कर लिया।

49इस प्रकार उस समूचे क्षेत्र में प्रभु के वचन का प्रचार प्रसार होता रहा। 50उधर यहूदियों ने उच्च कुल की भक्त महिलाओं और नगर के प्रमुख व्यक्तियों को भड़काया तथा पौलुस और बरनाबास के विरुद्ध अत्याचार करने आरम्भ कर दिये और दबाव डाल कर उन्हें अपने क्षेत्र से बाहर निकलवा दिया। 51फिर पौलुस और बरनाबास उनके विरोध में अपने पैरों की धूल झाड़ कर इकुनियुम को चल दिये। 52किन्तु उनके शिष्य, आनन्द और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।

इकुनियुम में पौलुस और बरनाबास

14 इसी प्रकार पौलुस और बरनाबास इकुनियुम में यहूदी प्रार्थना सभागार में गये। वहाँ उन्होंने इस ढंग से व्याख्यान दिया कि यहूदियों के एक विशाल जन समूह ने विश्वास धारण किया। 2किन्तु उन यहूदियों ने जो विश्वास नहीं कर सके थे, ग़ैर यहूदियों को भड़काया और बन्धुओं के विरुद्ध उन के मनों में कटुता पैदा कर दी। 3सो पौलुस और बरनाबास वहाँ बहुत दिनों तक ठहरे रहे तथा प्रभु के विषय में निर्भयता से प्रवचन करते रहे। उनके द्वारा प्रभु अद्भुत चिन्ह और आश्चर्यकर्मों को करवाता हुआ अपने दया के संदेश की प्रतिष्ठा कराता रहा। 4उधर नगर के लोगों में फूट पड़ गयी। कुछ प्रेरितों की तरफ और कुछ यहूदियों की तरफ़ हो गये।

5फिर जब ग़ैर यहूदियों और यहूदियों ने अपने नेताओं के साथ मिलकर उनके साथ बुरा व्यवहार करने और उन पर पथराव करने की चाल चली, 6तो पौलुस और बरनाबास को इसका पता चल गया और वे लुकाउनिया के लिस्तरा और दिरबे जैसे नगरों तथा आसपास के क्षेत्र में बच भागे। 7वहाँ भी वे सुसमाचार का प्रचार करते रहे।

लिस्तरा और दिरबे में पौलुस

8लिस्तरा में एक व्यक्ति बैठा हुआ था। वह अपने पैरों से अपंग था। वह जन्म से ही लँगड़ा था, चल फिर तो वह कभी नहीं पाया। 9इस व्यक्ति ने पौलुस को बोलते हुए सुना था। पौलुस ने उस पर दृष्टि गड़ाई और देखा कि अच्छा हो जाने का विश्वास उसमें है। 10सो पौलुस ने ऊँचे स्वर में कहा, "अपने पैरों पर सीधा खड़ा हो जा।" सो वह ऊपर उछला और चलने-फिरने लगा। 11पौलुस ने जो कुछ किया था, जब भीड़ ने उसे देखा तो लोग लुकाउनिया की भाषा में पुकार कर कहने लगे, "हमारे बीच मनुष्यों का रूप धारण करके, देवता उतर आये हैं।" 12वे बरनाबास को "ज़ेअस"* और पौलुस को "हिरमेस"*

ज़ेअस यूनानी बहुदेववादी हैं। ज़ेअस उनका एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देवता था।

हिरमेस एक और दूसरा यूनानी देवता। यूनानियों के विश्वास के अनुसार हिरमेस दूसरे देवताओं का संदेशवाहक।

कहने लगे। (पौलुस को हिरमेस इसलिये कहा गया क्योंकि वह प्रमुख वक्ता था।) 13नगर के ठीक बाहर बने ज़ेअस के मंदिर का याजक नगर द्वार पर साँड़ों और मालाओं को लेकर आ पहुँचा। वह भीड़ के साथ पौलुस और बरनाबास के लिये बलि चढ़ाना चाहता था। 14किन्तु जब प्रेरित बरनाबास और पौलुस ने यह सुना तो उन्होंने अपने कपड़े फाड़ डाले* और वे ऊँचे स्वर में यह कहते हुए भीड़ में घुस गये, 15"हे लोगो, तुम यह क्यों कर रहे हो? हम भी वैसे ही मनुष्य हैं, जैसे तुम हो। यहाँ हम तुम्हें सुसमाचार सुनाने आये हैं ताकि तुम इन व्यर्थ की बातों से मुड़ कर उस सजीव परमेश्वर की ओर लौटो जिसने आकाश, धरती, सागर और इनमें जो कुछ है, उसकी रचना की। 16बीते काल में उसने सभी जातियों को उनकी अपनी-अपनी राहों पर चलने दिया। 17किन्तु तुम्हें उसने स्वयं अपनी साक्षी दिये बिना नहीं छोड़ा। क्योंकि उसने तुम्हारे साथ भलाइयाँ कीं। उसने तुम्हें आकाश से वर्षा दी और ऋतु के अनुसार फसलें दीं। वही तुम्हें भोजन देता है और तुम्हारे मन को आनन्द से भर देता है।"

18इन वचनों के बाद भी वे भीड़ को उनके लिये बलि चढ़ाने से प्राय: नहीं रोक पाये। 19फिर अंताकिया और इकुनियुम से आये यहूदियों ने भीड़ को अपने पक्ष में करके पौलुस पर पथराव किया और उसे मरा जान कर नगर के बाहर घसीट ले गये। 20फिर जब शिष्य उसके चारों ओर इकट्ठे हुए, तो वह उठा और नगर में चला आया और फिर अगले दिन बरनाबास के साथ वह दिरबे के लिए चल पड़ा।

सीरिया के अंताकिया को लौटना

21-22उस नगर में उन्होंने सुसमाचार का प्रचार करके बहुत से शिष्य बनाये। और उनकी आत्माओं को स्थिर करके विश्वास में बने रहने के लिये उन्हें यह कह कर प्रेरित किया "हमें बड़ी यातनाएँ झेल कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है," वे लिस्तरा, इकुनियुम और अंताकिया लौट आये। 23हर कलीसिया में उन्होंने उन्हें उस प्रभु को सौंप दिया जिसमें उन्होंने विश्वास किया था।

24इसके पश्चात पिसिदिया से होते हुए वे पम्फूलिया आ पहुचें। 25और पिरगा में जब सुसमाचार सुना चुके तो इटली चले गये। 26वहाँ से वे अंताकिया को जहाज़ द्वारा गये जहाँ जिस काम को अभी उन्होंने पूरा किया था, उस काम के लिये वे परमेश्वर के अनुग्रह को समर्पित हो गये।

27सो जब वे पहुँचे तो उन्होंने कलीसिया के लोगों को इकट्ठा किया और परमेश्वर ने उनके साथ जो कुछ किया था, उसका विवरण कह सुनाया। और उन्होंने घोषणा की कि परमेश्वर ने विधर्मियों के लिये भी विश्वास का द्वार खोल दिया है। 28फिर अनुयायियों के साथ वे बहुत दिनों तक वहाँ ठहरे रहे।

यरुशलेम में एक सभा

15 फिरकुछ लोग यहूदिया से आये और भाइयों को शिक्षा देने लगे: "यदि मूसा की विधि के अनुसार तुम्हारा ख़तना नहीं हुआ है तो तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता।" 2पौलुस और बरनाबास उनसे सहमत नहीं थे, सो उनमें एक बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ। सो पौलुस बरनाबास तथा उनके कुछ और साथियों को इस समस्या के समाधान के लिये प्रेरितों और मुखियाओं के पास यरुशलेम भेजने का निश्चय किया गया।

3वे कलीसिया के द्वारा भेजे जाकर फीनीके और सामरिया होते हुए सभी भाइयों को अधर्मियों के हृदय परिवर्तन का विस्तार के साथ समाचार सुनाकर उन्हें हर्षित कर रहे थे। 4फिर जब वे यरूशलेम पहुँचे तो कलीसिया ने, प्रेरितों ने और बुज़ुर्गों ने उनका स्वागत सत्कार किया। और उन्होंने उनके साथ परमेश्वर ने जो कुछ किया था, वह सब कुछ उन्हें कह सुनाया। 5इस पर फरीसियों के दल के कुछ विश्वासी खड़े हुए और बोले, "उनका खतना अवश्य किया जाना चाहिये और उन्हें आदेश दिया जाना चाहिए कि वे मूसा की व्यवस्था के विधान का पालन करें।"

6सो इस प्रश्न पर विचार करने के लिये प्रेरित तथा बुज़ुर्ग लोग परस्पर एकत्र हुए। 7एक लम्बे चौड़े वाद-विवाद के बाद पतरस खड़ा हुआ और उनसे बोला, "भाइयो! तुम जानते हो कि बहुत दिनों पहले तुममें से प्रभु ने एक चुनाव किया था कि मेरे द्वारा अधर्मी लोग सुसमाचार का संदेश सुनेंगे और विश्वास करेंगे। 8और अन्तर्यामी परमेश्वर ने हमारे ही समान उन्हें भी पवित्र आत्मा का वरदान देकर, उनके सम्बन्ध में अपना समर्थन

पौलुस ... डाले लोगों के इस आचरण पर पौलुस और बरनाबास ने क्रोध व्यक्त करने के लिये अपने वस्त्र फाड़ डाले।

दर्शाया था। 9विश्वास के द्वारा उनके हृदयों को पवित्र
करके हमारे और उनके बीच उसने कोई भेद भाव नहीं
किया। 10सो अब शिष्यों की गर्दन पर एक ऐसा जुआ लाद
कर जिसे न हम उठा सकते हैं और न हमारे पूर्वज, तुम
परमेश्वर को झमेले में क्यों डालते हो? 11किन्तु हमारा तो
यह विश्वास है कि प्रभु यीशु के अनुग्रह से जैसे हमारा
उद्धार हुआ है, वैसे ही हमें भरोसा है कि उनका भी उद्धार
होगा!"

12इस पर समूचा दल चुप हो गया और बरनाबास तथा
पौलुस को सुनने लगा। वे, ग़ैर यहूदियों के बीच परमेश्वर
ने उनके द्वारा दो अद्भुत चिन्ह प्रकटाए थे, और आश्चर्य
कर्म किये थे, उनका विवरण दे रहे थे। 13वे जब बोल
चुके तो याकूब कहने लगा, "हे भाइयो, मेरी सुनो, 14शमौन
ने बताया था कि परमेश्वर ने ग़ैर यहूदियों में से कुछ लोगों
को अपने नाम के लिये चुनकर सर्वप्रथम कैसे प्रेम प्रकट
किया था। 15नबियों के वचन भी इसका समर्थन करते
हैं। जैसा कि लिखा गया है:

16 'मैं इसके बाद आऊँगा।
फिर से मैं खड़ा करुँगा दाऊद के
उस घर को जो गिर चुका।
फिर से सँवारूँगा उसके खण्डहरों
को जीर्णोद्धार करुँगा।
17 ताकि जो बचे हैं वे ग़ैर यहूदी सभी
जो अब मेरे कहलाते हैं, प्रभु की खोज करें
18 यह बात वही प्रभु कहता है
जो युगयुग से इन बातो को प्रकटाता रहा है।'
आमोस 9:11-12

19"इस प्रकार मेरा यह निर्णय है कि हमें उन लोगों
को, जो ग़ैर यहूदी होते हुए भी परमेश्वर की ओर मुड़े हैं,
सताना नहीं चाहिये। 20बल्कि हमें तो उनके पास लिख
भेजना चाहिये कि वे मूर्तियों द्वारा अपवित्र किये गये खाने
से बचें। व्यभिचार से बचें, गला घोट कर मारे गये किसी
भी पशु का माँस खाने से बचें और लहू को कभी न खायें।
21अनादि काल से मूसा की व्यवस्था के विधान का
पाठ करने वाले नगर-नगर में पाए जाते रहे हैं। हर सब्त
के दिन मूसा की व्यवस्था के विधान का प्रार्थना सभाओं
में पाठ होता रहा है।"

ग़ैर यहूदी-विश्वासियों के नाम पत्र

22फिर प्रेरितों और बुज़ुर्गों ने समूचे कलीसिया के साथ
यह निश्चय किया कि उन्हीं में से कुछ लोगों को चुनकर
पौलुस और बरनाबास के साथ अंताकिया भेजा जाये। सो
उन्होंने बरसब्बा कहे जाने वाले यहूदा और सिलास को
चुन लिया। वे भाइयों में सर्व प्रमुख थे। 23उन्होंने उनके
हाथों यह पत्र भेजा:

तुम्हारे बंधु, बुज़ुर्गो और प्रेरितों की ओर से
अंताकिया, सीरिया और किलिकिया के
गैर यहूदी भाइयों को नमस्कार पहुँचे

24हमने जब से यह सुना है कि हमसे कोई आदेश
पाये बिना ही, हममें से कुछ लोगों ने जाकर अपने
शब्दों से तुम्हें दुःख पहुँचाया है, और तुम्हारे मन
को अस्थिर कर दिया है25हम सब ने परस्पर सहमत
होकर यह निश्चय किया है कि हम अपने में से
कुछ लोग चुनें और अपने प्रिय बरनाबास और पौलुस
के साथ उन्हें तुम्हारे पास भेजें। 26ये वे ही लोग हैं
जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिये
अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी। 27हम यहूदा और
सिलास को भेज रहे हैं। वे तुम्हें अपने मुँह से इन
सब बातों को बताएँगे। 28पवित्र आत्मा को और हमें
यही उचित जान पड़ा कि तुम पर इन आवश्यक
बातों के अतिरिक्त और किसी बात का बोझ न
डाला जाये:

29 मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन
तुम्हें नहीं लेना चाहिये।
रक्त, गला घोंट कर मारे गये
पशु और व्यभिचार से बचे रहो।
यदि तुम ने अपने आप को इन बातों से बचाये रखा
तो तुम्हारा कल्याण होगा।
अच्छा विदा।'

30इस प्रकार उन्हें विदा कर दिया गया और वे अंताकिया
जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने धर्म-सभा बुलाई और उन्हें वह
पत्र दे दिया। 31पत्र पढ़ कर जो प्रोत्साहन उन्हें मिला, उस
पर उन्होंने आनन्द मनाया। 32यहूदा और सिलास ने, जो
स्वयं ही दोनों नबी थे, भाइयों के सामने उन्हें उत्साहित
करते हुए और दृढ़ता प्रदान करते हुए, एक लम्बा प्रवचन
किया। 33वहाँ कुछ समय बिताने के बाद, भाइयों ने उन्हें

शांतिपूर्वक उन्हीं के पास लौट जाने को विदा किया जिन्होंने उन्हें भेजा था। 34* ['किन्तु सिलास ने वहीं ठहरे रहने का निश्चय किया।'] 35पौलुस तथा बरनाबास ने अंताकिया में कुछ समय बिताया। बहुत से दूसरे लोगों के साथ उन्होंने प्रभु के वचन का उपदेश देते हुए लोगों में सुसमाचार का प्रचार किया।

पौलुस और बरनाबास का अलग होना

36कुछ दिनों बाद बरनाबास से पौलुस ने कहा, "आओ, जिन-जिन नगरों में हमने प्रभु के वचन का प्रचार किया है, वहाँ अपने भाइयों के पास वापस चल कर यह देखें कि वे क्या कुछ कर रहे हैं।" 37बरनाबास चाहता था कि मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को भी वे अपने साथ ले चलें। 38किन्तु पौलुस ने यही ठीक समझा कि वे उसे अपने साथ न लें जिसने पम्फूलिया में उनका साथ छोड़ दिया था और (प्रभु के) कार्य में जिसने उनका साथ नहीं निभाया। 39इस पर उन दोनों में तीव्र विरोध पैदा हो गया। परिणाम यह हुआ कि वे आपस में एक दूसरे से अलग हो गये। बरनाबास मरकूस को लेकर पानी के जहाज़ से साइप्रस चला गया। 40पौलुस सिलास को चुनकर वहाँ से चला गया और भाइयों ने उसे प्रभु के संरक्षण में सौंप दिया। 41सो पौलुस सीरिया और किलिकिया की यात्रा करते हुए वहाँ की कलीसिया को सुदृढ़ करता रहा।

तिमुथियुस का पौलुस और सिलास के साथ जाना

16 पौलुस दिरबे और लुस्तरा में भी आया। वहीं तिमुथियुस नामक एक शिष्य हुआ करता था। वह किसी विश्वासी यहूदी महिला का पुत्र था किन्तु उसका पिता यूनानी था। 2लिस्तरा और इकुनियुम के बंधुओं के साथ उसकी अच्छी बोलचाल थी। 3पौलुस तिमुथियुस को यात्रा पर अपने साथ ले जाना चाहता था। सो उसे उसने साथ ले लिया और उन स्थानों पर रहने वाले यहूदियों के कारण उसका ख़तना किया; क्योंकि वे सभी जानते थे कि उसका पिता एक यूनानी था। 4नगरों से यात्रा करते हुए उन्होंने वहाँ के लोगों को उन नियमों के बारे में बताया जिन्हें यरुशलेम में प्रेरितों और बुज़ुर्गों ने निश्चित किया था। 5इस प्रकार वहाँ की कलीसिया का विश्वास और सुदृढ़ होता गया और दिन प्रतिदिन उनकी संख्या बढ़ने लगी।

पौलुस का एशिया से बाहर बुलाया जाना

6सो वे फ्रूगिया और गलातिया के क्षेत्र से होकर निकले क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने को मना कर दिया था। 7फिर वे जब मूसिया की सीमा पर पहुँचे तो उन्होंने बितुनिया जाने का जतन किया। किन्तु यीशु की आत्मा ने उन्हें वहाँ भी नहीं जाने दिया। 8सो वे मूसिया होते हुए त्रोआस पहुँचे। 9रात के समय पौलुस ने दिव्यदर्शन में देखा कि मैसिडोनिया का एक पुरुष उस से प्रार्थना करते हुए कह रहा है, "मैसिडोनिया में आ और हमारी सहायता कर।" 10इस दिव्य दर्शन को देखने के बाद तुरन्त ही यह परिणाम निकालते हुए कि परमेश्वर ने उन लोगों के बीच सुसमाचार का प्रचार करने हमें बुलाया है, हमने मैसिडोनिया जाने की ठान ली।

लीदिया का हृदय परिवर्तन

11इस प्रकार हमने त्रोआस से जल मार्ग द्वारा जाने के लिये अपनी नावें खोल दीं और सीधे समोथ्राके जा पहुँचे। फिर अगले दिन नियापुलिस चले गये। 12वहाँ से हम एक रोमी उपनिवेश फिलिप्पी पहुँचे जो मैसिडोनिया के उस क्षेत्र का एक प्रमुख नगर है। इस नगर में हमने कुछ दिन बिताये।

13फिर सब्त के दिन यह सोचते हुए कि प्रार्थना करने के लिये वहाँ कोई स्थान होगा हम नगर-द्वार के बाहर नदी पर गये। हम वहाँ बैठ गये और एकत्र स्त्रियों से बातचीत करने लगे। 14वहीं लीदिया नाम की एक महिला थी। वह बैंजनी रंग के कपड़े बेचा करती थी। वह परमेश्वर की उपासक थी। वह बड़े ध्यान से हमारी बातें सुन रही थी। प्रभु ने उसके हृदय के द्वार खोल दिये थे ताकि, जो कुछ पौलुस कह रहा था, वह उन बातों पर ध्यान दे सके। 15अपने समूचे परिवार समेत बपतिस्मा लेने के बाद उसने हमसे यह कहते हुए विनती की, "यदि तुम मुझे प्रभु की सच्ची भक्त मानते हो तो आओ और मेरे घर ठहरो।" सो उसने हमें जाने के लिए तैयार कर लिया।

पौलुस और सिलास का बंदी बनाया जाना

16फिर ऐसा हुआ कि जब हम प्रार्थना स्थल की ओर जा रहे थे, हमें एक दासी मिली जिसमें एक शकुन बताने

पद 34 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 34 जोड़ा गया है।

वाली आत्मा* समायी थी। वह लोगों का भाग्य बता कर
अपने स्वामियों को बहुत सा धन कमा कर देती थी। 17वह
हमारे और पौलुस के पीछे पीछे यह चिल्लाते हुए हो ली,
"ये लोग परम परमेश्वर के सेवक हैं। ये तुम्हें मुक्ति के
मार्ग का संदेश सुना रहे हैं।" 18वह बहुत दिनों तक ऐसा ही
करती रही सो पौलुस परेशान हो उठा। उसने मुड़ कर
उस आत्मा से कहा, "मैं यीशु मसीह के नाम पर तुझे
आज्ञा देता हूँ, 'इस लड़की में से बाहर निकल आ!'" सो
वह उसमें से तत्काल बाहर निकल गयी।

19फिर उसके स्वामियों ने जब देखा कि उनकी कमाई
की आशा पर ही पानी फिर गया है तो उन्होंने पौलुस और
सिलास को धर दबोचा और उन्हें घसीटते हुए बाजार के
बीच अधिकारियों के सामने ले गये। 20फिर दण्डनायक
के पास उन्हें ले जाकर वे बोले, "ये लोग यहूदी हैं और
हमारे नगर में गड़बड़ी फैला रहे हैं। 21ये ऐसे रीति रिवाजों
की वकालत करते हैं जिन्हें अपनाना या जिन पर चलना
हम रोमियों के लिये न्यायपूर्ण नहीं है।" 22भीड़ भी विरोध
में लोगों के साथ हो कर उन पर चढ़ आयी। दण्डाधिकारी
ने उनके कपड़े फड़वा कर उतरवा दिये और आज्ञा दी कि
उन्हें पीटा जाये। 23उन पर बहुत मार पड़ चुकने के बाद
उन्होंने उन्हें जेल में डाल दिया और जेल के अधिकारी
को आज्ञा दी कि उन पर कड़ा पहरा बैठा दिया जाये।
24ऐसी आज्ञा पाकर उसने उन्हें जेल की भीतरी कोठरी में
डाल दिया। उसने उनके पैर काठ में कस दिये।

25लगभग आधी रात गये पौलुस और सिलास परमेश्वर
के भजन गाते हुए प्रार्थना कर रहे थे और दूसरे कैदी
उन्हें सुन रहे थे। 26तभी वहाँ अचानक एक ऐसा भयानक
भूचाल आया कि जेल की नीवें हिल उठीं। और तुरंत जेल
के फाटक खुल गये। हर किसी की बेड़ियाँ ढीली हो कर
गिर पड़ीं। 27जेल के अधिकारी ने जाग कर जब देखा कि
जेल के फाटक खुले पड़े हैं तो उसने अपनी तलवार खींच
ली और यह सोचते हुए कि कैदी भाग निकले हैं वह स्वयं
को जब मारने ही वाला था तभी 28पौलुस ने ऊँचे स्वर में
पुकारते हुए कहा, "अपने को हानि मत पहुँचा क्योंकि
हम सब यहीं हैं।"

29इस पर जेल के अधिकारी ने मशाल मँगवाई और
जल्दी से भीतर गया। और भय से काँपते हुए पौलुस और
सिलास के सामने गिर पड़ा। 30फिर वह उन्हें बाहर ले जा
कर बोला, "महानुभावो, उद्धार पाने के लिये मुझे क्या
करना चाहिये?"

31उन्होंने उत्तर दिया, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर।
इससे तेरा उद्धार होगा–तेरा और तेरे परिवार का।" 32फिर
उसके समूचे परिवार के साथ उन्होंने उसे प्रभु का वचन
सुनाया। 33फिर जेल का वह अधिकारी उसी रात और
उसी घड़ी उन्हें वहाँ से ले गया। उसने उनके घाव धोये
और अपने सारे परिवार के साथ उनसे बपतिस्मा लिया।
34फिर वह पौलुस और सिलास को अपने घर ले आया
और उन्हें भोजन कराया। परमेश्वर में विश्वास ग्रहण
कर लेने के कारण उसने अपने समूचे परिवार के साथ
आनन्द मनाया।

35जब पौ फटी तो दण्डाधिकारियों ने यह कहने अपने
सिपाहियों को वहाँ भेजा कि उन लोगों को छोड़ दिया
जाये।

36फिर जेल के अधिकारी ने ये बातें पौलुस को बतायीं
कि दण्डाधिकारी ने तुम्हें छोड़ देने के लिये कहलवा भेजा
है। इसलिये अब तुम बाहर आओ और शांति के साथ चले
जाओ।

37किन्तु पौलुस ने उन सिपाहियों से कहा, "यद्यपि हम
रोमी नागरिक हैं पर उन्होंने हमें अपराधी पाये बिना ही
सब के सामने मारा–पीटा और जेल में डाल दिया। और
अब चुपके–चुपके वे हमें बाहर भेज देना चाहते हैं, निश्चय
ही ऐसा नहीं होगा। होना तो यह चाहिये कि वे स्वयं आकर
हमें बाहर निकालें!"

38सिपाहियों ने दण्डाधिकारियों को ये शब्द जा सुनाये।
दण्डाधिकारियों को जब यह पता चला कि पौलुस और
सिलास रोमी हैं तो वे बहुत डर गये। 39सो वे वहाँ आये
और उनसे क्षमा याचना करके उन्हें बाहर ले गये और
उनसे उस नगर को छोड़ जाने को कहा। 40पौलुस और
सिलास जेल से बाहर निकल कर लीदिया के घर पहुँचे।
धर्म–बंधुओं से मिलते हुए उन्होंने उनका उत्साह बढ़ाया
और फिर वहाँ से चल दिये।

पौलुस और सिलास थिस्सलुनिके में

17 फिर अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया की यात्रा
समाप्त करके वे थिस्सुलुनिके जा पहुँचे। वहाँ
यहूदियों का एक प्रार्थना सभागार था। 2अपने सामान्य

आत्मा यह आत्मा एक शैतान की रूह थी जिसने इस लड़की
को एक विशेष ज्ञान दे रखा था।

स्वभाव के अनुसार पौलुस उनके पास गया और तीन सब्त तक उनके साथ शास्त्रों पर विचार-विनिमय करता रहा। 3और शास्त्रों से लेकर उन्हें समझाते हुए यह सिद्ध करता रहा कि मसीह को यातनाएँ झेलनी ही थीं और फिर उसे मरे हुओं में से जी उठना था। वह कहता, "यह यीशु ही, जिसका मैं तुम्हारे बीच प्रचार करता हूँ, मसीह है।" 4उनमें से कुछ जो सहमत हो गए थे, पौलुस और सिलास के मत में सम्मिलित हो गये। परमेश्वर से डरने वाले अनगिनत यूनानी भी उनमें मिल गये। इनमें अनेक महत्त्वपूर्ण स्त्रियाँ भी सम्मिलित थीं।

5पर यहूदी तो डाह में जले जा रहे थे। उन्होंने कुछ बाज़ारू गुंडों को इकट्ठा किया और एक हुजूम बना कर नगर में दंगे करा दिये। उन्होंने यासोन के घर पर धावा बोल दिया। और यह कोशिश करने लगे कि किसी तरह पौलुस और सिलास को लोगों के सामने ले आयें। 6किन्तु जब वे उन्हें नहीं पा सके तो यासोन को और कुछ दूसरे बन्धुओं को नगर अधिकारियों के सामने घसीट लाये। वे चिल्लाये, "ये लोग जिन्होंने सारी दुनिया में उथल पुथल मचा रखी है, अब यहाँ आये हैं। 7और यासोन सम्मान के साथ उन्हें अपने घर में ठहराये हुए है। और वे सभी कैसर के आदेशों के विरोध में काम करते हैं। और कहते हैं 'एक राजा और है जिसका नाम है यीशु।"

8जब भीड़ ने और नगर के अधिकारियों ने यह सुना तो वे भड़क उठे। 9और इस प्रकार उन्होंने यासोन तथा दूसरे लोगों को ज़मानती मुचलके लेकर छोड़ दिया।

पौलुस और सिलास बिरिया में

10फिर तुरन्त रातों रात भाइयों ने पौलुस और सिलास को बिरिया भेज दिया। वहाँ पहुँच कर वे यहूदी, प्रार्थना सभागार में गये। 11ये लोग थिस्सुलुनिके के लोगों से अधिक अच्छे थे। इन लोगों ने पूरा मन लगाकर वचन को सुना और हर दिन शास्त्रों को उलटते पलटते यह जाँचते रहे कि पौलुस ने जो बातें बतायी हैं, क्या वे सत्य हैं। 12परिणामस्वरुप बहुत से यहूदियों और महत्त्वपूर्ण यूनानी स्त्री-पुरुषों ने भी विश्वास ग्रहण किया। 13किन्तु जब थिस्सुलुनिके के यहूदियों को यह पता चला कि पौलुस बिरिया में भी परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहा है तो वे वहाँ भी आ धमके। और वहाँ भी दंगे करना और लोगों को भड़काना शुरू कर दिया। 14इसलिए तभी भाइयों ने तुरन्त पौलुस को सागर तट पर जाने को भेज दिया। किन्तु सिलास और तिमुथियुस वहीं ठहरे रहे। 15पौलुस को ले जाने वाले लोगों ने उसे एथेंस पहुँचा दिया और सिलास तथा तिमुथियुस के लिये यह आदेश देकर कि वे जल्दी से जल्दी उसके पास आ जायें, वहाँ से चल पड़े।

पौलुस एथेंस में

16पौलुस एथेंस में तिमुथियुस और सिलास की प्रतीक्षा करते हुए नगर को मूर्तियों से भरा हुआ देखकर मन ही मन तिलमिला रहा था। 17इसीलिये हर दिन वह यहूदी धर्मसभा-भवन में यहूदियों और यूनानी भक्तों से वाद-विवाद करता रहता था। वहाँ हाट-बाजार में जो कोई होता वह उससे भी हर दिन बहस करता रहता। 18कुछ इपीकुरी और स्तोइकी दार्शनिक भी उससे शास्त्रार्थ करने लगे। उनमें से कुछ ने कहा, "यह अंटशंट बोलने वाला कहना क्या चाहता है?" दूसरों ने कहा, "यह तो विदेशी देवताओं का प्रचारक मालूम होता है।" उन्होंने यह इसलिये कहा था कि वह यीशु के बारे में उपदेश देता था और उसके फिर से जी उठने का प्रचार करता था। 19वे उसे पकड़कर अरियुपगुस की सभा में अपने साथ ले गये और बोले, "क्या हम जान सकते हैं कि तू जिसे लोगों के सामने रख रहा है, वह नयी शिक्षा क्या है? 20तू कुछ विचित्र बातें हमारे कानों में डाल रहा है, सो हम जानना चाहते हैं कि इन बातों का अर्थ क्या है?" 21वहाँ रह रहे एथेंस के सभी लोग और परदेसी केवल कुछ नया सुनने या उन्हीं बातों की चर्चा के अतिरिक्त किसी भी और बात में अपना समय नहीं लगाते थे।

22तब पौलुस ने अरियुपगुस के सामने खड़े होकर कहा, "हे एथेंस के लोगो! मैं देख रहा हूँ तुम हर प्रकार से धार्मिक हो। 23घूमते फिरते तुम्हारी उपासना की वस्तुओं को देखते हुए मुझे एक ऐसी वेदी भी मिली जिस पर लिखा था, 'अज्ञात परमेश्वर के लिये' सो तुम बिना जाने ही जिस की उपासना करते हो, मैं तुम्हें उसी का वचन सुनाता हूँ। 24परमेश्वर, जिसने इस जगत की और इस जगत के भीतर जो कुछ है, उसकी रचना की वही धरती और आकाश का प्रभु है। वह हाथों से बनाये मंदिरों में नहीं रहता। 25उसे किसी वस्तु का अभाव नहीं है सो मनुष्य के हाथों से उसकी सेवा नहीं हो सकती। वही सब

को जीवन, साँसें और अन्य सभी कुछ दिया करता है।
26एक ही मनुष्य से उसने मनुष्य की सभी जातियों का
निर्माण किया ताकि वे समूची धरती पर बस जायें और
उसी ने लोगों का समय निश्चित कर दिया और उस स्थान
की, जहाँ वे रहें, सीमाएँ बाँध दीं। 27उस का प्रयोजन यह
था कि लोग परमेश्वर को खोजें। हो सकता है वे उसे उस
तक पहुँच कर पा लें। इतना होने पर भी हममें से किसी से
भी वह दूर नहीं हैं:

28 'क्योंकि उसी में हम रहते हैं
उसी में हमारी गति है
और उसी में है हमारा अस्तित्व!'

इसी प्रकार स्वयं तुम्हारे ही कुछ लेखकों ने भी कहा
है:

'क्योंकि हम उसके ही बच्चे हैं।'

29और क्योंकि हम परमेश्वर की संतान हैं इसलिये
हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि वह दिव्य अस्तित्व
सोने या चाँदी या पत्थर की बनी मानव कल्पना या कारीगरी
से बनी किसी मूर्ति जैसा है। 30ऐसे अज्ञान के युग की
परमेश्वर ने उपेक्षा कर दी है और अब हर कहीं के
मनुष्यों को वह मन फिरावने का आदेश दे रहा है। 31उसने
एक दिन निश्चित किया है जब वह अपने नियुक्त किये
गये एक पुरुष के द्वारा न्याय के साथ जगत का निर्णय
करेगा। मरे हुओं में से उसे जिलाकर उसने हर किसी को
इस बात का प्रमाण दिया है!"

32जब उन्होंने मरे हुओं में से जी उठने की बात सुनी तो
उनमें से कुछ तो उसकी हँसी उड़ाने लगे किन्तु कुछ ने
कहा, "हम इस विषय पर तेरा प्रवचन फिर कभी सुनेंगे।"
33तब पौलुस उन्हें छोड़ कर चल दिया। 34कुछ लोगों ने
विश्वास ग्रहण कर लिया और उसके साथ हो लिये। इनमें
अरियुपगुसका* सदस्य दियुनुसियुस और दमरिस नामक
एक महिला तथा उनके साथ के और लोग भी थे।

पौलुस कुरिन्थियुस में

18 इसके बाद पौलुस एथेंस छोड़ कर कुरिन्थियुस
चला गया। 2वहाँ वह पुन्तुस के रहने वाले
अक्विला नाम के एक यहूदी से मिला। जो हाल में ही
अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली से आया था। उन्होंने
इटली इसलिये छोड़ी थी कि क्लौदियुस ने सभी यहूदियों
को रोम से निकल जाने का आदेश दिया था। सो पौलुस
उनसे मिलने गया। 3और क्योंकि उनका काम धन्धा एक
ही था सो वह उन ही के साथ ठहरा और काम करने
लगा। व्यवसाय से वे तम्बू बनाने वाले थे। 4हर सब्त के
दिन वह यहूदी धर्मसभा भवनों में तर्क-वितर्क करके
यहूदियों और यूनानियों को समझाने बुझाने का जतन
करता।

5जब वे मैसिडोनिया से सिलास और तिमुथियुस आये
तब पौलुस ने अपना सारा समय वचन के प्रचार में लगा
रखा था। वह यहूदियों को यह प्रमाणित किया करता था
कि यीशु ही मसीह है। 6सो जब उन्होंने उसका विरोध
किया और उससे भला बुरा कहा तो उसने उनके विरोध
में अपने कपड़े झाड़ते हुए उनसे कहा, "तुम्हारा खून
तुम्हारे ही सिर पड़े। उसका मुझ से कोई सरोकार नहीं है।
अब से आगे मैं ग़ैर-यहूदियों के पास चला जाऊँगा।"
7इस तरह पौलुस वहाँ से चल पड़ा और तीतुस-यूस्तुस
नाम के एक व्यक्ति के घर गया। वह परमेश्वर का
उपासक था। उसका घर यहूदी धर्म-सभा-भवन से लगा
हुआ था। 8क्रिसपुस ने, जो यहूदी प्रार्थना सभागार का
प्रधान था, अपने समूचे घराने के साथ प्रभु में विश्वास
ग्रहण किया। साथ ही उन बहुत से कुरिन्थियों ने जिन्होंने
पौलुस का प्रवचन सुना था, विश्वास ग्रहण करके बपतिस्मा
लिया।

9एक रात सपने में प्रभु ने पौलुस से कहा, "डर मत,
बोलता रह और चुप मत हो। 10क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। सो
तुझ पर हमला करके कोई भी तुझे हानि नहीं पहुँचायेगा
क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।" 11सो पौलुस,
वहाँ डेढ़ साल तक परमेश्वर के वचन की उनके बीच
शिक्षा देते हुए, ठहरा।

पौलुस का गल्लियो के सामने लाया जाना

12जब अखाया का राज्यपाल गल्लियो था तभी यहूदी
एक जुट हो कर पौलुस पर चढ़ आये और उसे पकड़ कर
अदालत में ले गये 13और बोले, "यह व्यक्ति लोगों को
परमेश्वर की उपासना ऐसे ढंग से करने के लिये बहका
रहा है जो व्यवस्था के विधान के विपरीत है।"

अरियुपगुस एथेंस के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का एक दल। ये लोग न्यायधीशों के समान हुआ करते थे।

14पौलुस अभी अपना मुँह खोलने को ही था कि गल्लियो
ने यहूदियों से कहा, "अरे यहूदियो, यदि यह विषय किसी
अन्याय या गम्भीर अपराध का होता तो तुम्हारी बात सुनना
मेरे लिये न्यायसंगत होता 15किन्तु क्योंकि यह विषय शब्दों,
नामों और तुम्हारी अपनी व्यवस्था के प्रश्नों से सम्बन्धित
है, इसलिए इसे तुम अपने आप ही सुलटो। ऐसे विषयों में मैं
न्यायाधीश नहीं बनना चाहता।" 16और फिर उसने उन्हें
अदालत से बाहर निकाल दिया।

17सो उन्होंने प्रार्थना सभागार के नेता सोस्थिनेस को
धर दबोचा और अदालत के सामने ही उसे पीटने लगे।
किन्तु गल्लियो ने इन बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं
दिया।

पौलुस की वापसी

18बहुत दिनों बाद तक पौलुस वहाँ ठहरा रहा। फिर
भाइयों से विदा लेकर वह नाव के रास्ते सीरिया को चल
पड़ा। उसके साथ प्रिसकिल्ला तथा अक्विला भी थे। पौलुस
ने किंखिया में अपने केश उतरवाये क्योंकि उसने एक
मन्नत मानी थी। 19फिर वे इफिसुस पहुँचे और पौलुस ने
प्रिसकिल्ला और अक्विला को वहीं छोड़ दिया। और आप
प्रार्थना सभागार में जाकर यहूदियों के साथ बहस करने
लगा। 20जब वहाँ के लोगों ने उससे कुछ दिन और ठहरने
को कहा तो उसने मना कर दिया। 21किन्तु जाते समय
उसने कहा, "यदि परमेश्वर की इच्छा हुई तो मैं तुम्हारे
पास फिर आऊँगा।" फिर उसने इफिसुस से नाव द्वारा
यात्रा की।

22फिर केसरिया पहुँच कर वह यरुशलेम गया और
वहाँ कलीसिया के लोगों से भेंट की। फिर वह अंताकिया
की ओर चला गया। 23वहाँ कुछ समय बिताने के बाद
उसने विदा ली और गलातिया एवम् फ्रिगिया के क्षेत्रों में
एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हुए सभी
अनुयायिओं के विश्वास को बढ़ाने लगा।

इफिसुस में अपुल्लोस

24वहीं अपुल्लोस नाम का एक यहूदी हुआ करता था।
वह सिकंदरिया का निवासी था। वह विद्वान वक्ता था। वह
इफिसुस में आया। शास्त्रों का उसे संपूर्ण ज्ञान था। 25उसे
प्रभु के मार्ग की दीक्षा भी मिली थी। वह हृदय में उत्साह
भर कर प्रवचन करता तथा यीशु के विषय में बड़ी
सावधानी से उपदेश देता था। यद्यपि उसे केवल यूहन्ना के
बपतिस्मा का ही ज्ञान था। 26यहूदी धर्म सभा में वह निर्भय
हो कर बोलने लगा। जब प्रिस्किल्ला और अक्विला ने
उसे बोलते सुना तो वे उसे एक ओर ले गये और अधिक
बारीकी के साथ उसे परमेश्वर के मार्ग की व्याख्या
समझाई। 27सो जब उसने अखाया को जाना चाहा तो भाइयों
ने उसका साहस बढ़ाया और वहाँ के अनुयायिओं को
उसका स्वागत करने को लिख भेजा। जब वह वहाँ पहुँचा
तो उनके लिये बड़ा सहायक सिद्ध हुआ जिन्होंने परमेश्वर
के अनुग्रह से विश्वास ग्रहण कर लिया था। 28क्योंकि
शास्त्रों से यह प्रमाणित करते हुए कि यीशु ही मसीह है,
उसने यहूदियों को जनता के बीच जोरदार शब्दों में बोलते
हुए शास्त्रार्थ में पछाड़ा था।

पौलुस इफ़िसुस में

19 ऐसा हुआ कि जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था
तभी पौलुस भीतरी प्रदेशों से यात्रा करता हुआ
इफिसुस में आ पहुँचा। वहाँ उसे कुछ शिष्य मिले। 2और
उसने उनसे कहा, "क्या जब तुमने विश्वास धारण किया
था तब पवित्र आत्मा को ग्रहण किया था?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हमने तो सुना तक नहीं है कि
कोई पवित्र आत्मा है भी।"

3सो वह बोला, "तो तुमने कैसा बपतिस्मा लिया है?"

उन्होंने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा।"

4फिर पौलुस ने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा तो मनफिराव
का बपतिस्मा था। उसने लोगों से कहा था कि जो मेरे बाद
आ रहा है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करो।"

5यह सुन कर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा
ले लिया। 6फिर जब पौलुस ने उन पर अपने हाथ रखे तो
उन पर पवित्र आत्मा उतर आया और वे अलग अलग
भाषाएँ बोलने और भविष्यवाणियाँ करने लगे। 7कुल मिला
कर वे कोई बारह व्यक्ति थे।

8फिर पौलुस यहूदी प्रार्थना सभागार में चला गया और
तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा। वह यहूदियों
के साथ बहस करते हुए उन्हें परमेश्वर के राज्य के
विषय में समझाया करता था। 9किन्तु उनमें से कुछ लोग
बहुत हठी थे उन्होंने विश्वास ग्रहण करने को मना कर
दिया और लोगों के सामने पंथ को भला बुरा कहते रहे।
सो वह अपने शिष्यों को साथ ले उन्हें छोड़ कर चला गया।

और तरन्नुस की पाठशाला में हर दिन विचार-विमर्श करने लगा। 10दो साल तक ऐसा ही होता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी एशिया-निवासी यहूदियों और ग़ैर यहूदियों ने प्रभु का वचन सुन लिया।

स्कीवा के बेटे

11परमेश्वर पौलुस के हाथों अनहोने आश्चर्य कर्म कर रहा था। 12यहाँ तक कि उसके छुए रूमालों और अँगोछों को रोगियों के पास ले जाया जाता और उन की बीमारियाँ दूर हो जातीं तथा दुष्टात्माएँ उनमें से निकल भागतीं।

13-14कुछ यहूदी लोग, जो दुष्टात्माएँ उतारते इधर-उधर घूमा फिरा करते थे। यह करने लगे कि जिन लोगों में दुष्टात्माएँ समायी थीं, उन पर प्रभु यीशु के नाम का प्रयोग करने का यत्न करते और कहते, "मैं तुम्हें उस यीशु के नाम पर जिसका प्रचार पौलुस करता है, आदेश देता हूँ।" एक स्कीवा नाम के यहूदी महायाजक के सात पुत्र जब ऐसा कर रहे थे,

15तो दुष्टात्मा ने (एक बार) उनसे कहा, "मैं यीशु को पहचानती हूँ और पौलुस के बारे में भी जानती हूँ, किन्तु तुम लोग कौन हो?"

16फिर वह व्यक्ति जिस पर दुष्टात्मा सवार थी, उन पर झपटा। उसने उन पर काबू पा कर उन दोनों को हरा दिया। इस तरह वे नंगे ही घायल होकर उस घर से निकल कर भाग गये। 17इफिसुस में रहने वाले सभी यहूदियों और यूनानियों को इस बात का पता चल गया। वे सब लोग बहुत डर गये थे। इस प्रकार प्रभु यीशु के नाम का आदर और अधिक बढ़ गया। 18उनमें से बहुत से जिन्होंने विश्वास ग्रहण किया था, अपने द्वारा किये गये बुरे कामों को सबके सामने स्वीकार करते हुए वहाँ आये। 19जादू टोना करने वालों में से बहुतों ने अपनी अपनी पुस्तकें लाकर वहाँ इकट्ठी कर दीं और सब के सामने उन्हें जला दिया। उन पुस्तकों का मूल्य पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर कूता गया। 20इस प्रकार प्रभु का वचन अधिक प्रभावशाली होते हुए दूर दूर तक फैलने लगा।

पौलुस की यात्रा-योजना

21इन घटनाओं के बाद पौलुस ने अपने मन में मेसिडोनिया और अखाया होते हुए यरुशलेम जाने का निश्चय किया। उसने कहा, "वहाँ जाने के बाद मुझे रोम भी देखना चाहिये।" 22सो उसने अपने तिमुथियुस और इरासतुस नामक दो सहायकों को मैसिडोनिया भेज दिया और स्वयं एशिया में थोड़ा समय और बिताया।

इफ़िसुस में उपद्रव

23उन्हीं दिनों इस पंथ को लेकर वहाँ बड़ा उपद्रव हुआ। 24वहाँ देमेत्रियुस नाम का एक चाँदी का काम करने वाला सुनार हुआ करता था। उसने अरतिमिस की चाँदी की हटरियाँ बनवायी थीं जिससे कारीगरों को बहुत कारोबार मिला था। 25उसने उन्हें और इस काम से जुड़े हुए दूसरे कारीगरों को इक्ट्ठा किया और कहा, "देखो लोगो, तुम जानते हो कि इस काम से हमें एक अच्छी आमदनी होती है। 26तुम देख सकते हो और सुन सकते हो कि इस पौलुस ने न केवल इफिसुस में बल्कि लगभग एशिया के समूचे क्षेत्र में लोगों को बहका-फुसला कर बदल दिया है। वह कहता है कि मनुष्य के हाथों के बनाये देवता सच्चे देवता नहीं हैं। 27इससे न केवल इस बात का भय है कि हमारा व्यवसाय बदनाम होगा बल्कि महान देवी अरतिमिस के मंदिर की प्रतिष्ठा समाप्त हो जाने का भी डर है। और जिस देवी की उपासना समूचे एशिया और संसार द्वारा की जाती है, उसकी गरिमा छिन जाने का भी डर है।"

28जब उन्होंने यह सुना तो वे बहुत क्रोधित हुए और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे, "इफ़िसियों की देवी अरतिमिस महान है!" 29उधर सारे नगर में अव्यवस्था फैल गयी। सो लोगों ने मैसिडोनिया से आये तथा पौलुस के साथ यात्रा कर रहे गयुस और अरिस्तर्बुस को धर दबोचा और उन्हें रंगशाला* में ले भागे। 30पौलुस लोगों के सामने जाना चाहता था किन्तु शिष्यों ने उसे नहीं जाने दिया। 31कुछ प्रांतीय अधिकारियों ने जो उसके मित्र थे, उससे कहलवा भेजा कि वह वहाँ रंगशाला में आने का दुस्साहस न करे। 32अब देखो कोई कुछ चिल्ला रहा था, और कोई कुछ, क्योंकि समूची सभा में हड़बड़ी फैली हुई थी। उनमें से अधिकतर यह नहीं जानते थे कि वे वहाँ एकत्र क्यों हुए हैं। 33यहूदियों ने सिकन्दर को जिसका नाम भीड़ में से उन्होंने सुझाया था, आगे खड़ा कर रखा

रंगशाला एक विशेष स्थान जिसे रंगशाला के रूप में याजक सभाओं के लिये प्रयोग मे लाते थे।

था। सिकन्दर ने अपने हाथों को हिला हिला कर लोगों के सामने बचाव पक्ष प्रस्तुत करना चाहा। 34किन्तु जब उन्हें यह पता चला कि वह एक यहूदी है तो वे सब कोई दो घण्टे तक एक स्वर में चिल्लाते हुए कहते रहे, "इफिसुसियों की देवी अरतिमिस महान है।"

35फिर नगर लिपिक ने भीड़ को शांत करके कहा, "हे इफिसुस के लोगो क्या संसार में कोई ऐसा व्यक्ति है जो यह नहीं जानता कि इफिसुस नगर महान देवी अरतिमिस और स्वर्ग से गिरी हुई पवित्र शिला का संरक्षक है? 36क्योंकि इन बातों से इन्कार नहीं किया जा सकता। इसलिये तुम्हें शांत रहना चाहिये और बिना विचारे कुछ नहीं करना चाहिये। 37तुम इन लोगों को पकड़ कर यहाँ लाये हो यद्यपि उन्होंने न तो कोई मंदिर लूटा है और न ही हमारी देवी का अपमान किया है। 38फिर भी देमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों को किसी के विरुद्ध कोई शिकायत है तो अदालतें खुली हैं और वहाँ राज्यपाल हैं। वहाँ आपस में एक दूसरे पर वे अभियोग चला सकते हैं। 39किन्तु यदि तुम इससे कुछ अधिक जानना चाहते हो तो उसका फैसला नियमित सभा में किया जायेगा। 40जो कुछ है उसके अनुसार हमें इस बात का डर है कि आज के उपद्रवों का दोष कहीं हमारे ही सिर न मढ़ दिया जाये। इस दंगे के लिये हमारे पास कोई भी हेतु नहीं है जिससे हम इसे उचित ठहरा सकें।" 41इतना कहने के बाद उसने सभा विसर्जित कर दी।

पौलुस का मैसिडोनिया और यूनान जाना

20 फिर इस उपद्रव के शांत हो जाने के बाद पौलुस ने यीशु के शिष्यों को बुलाया और उनका हौसला बढ़ाने के बाद उनसे विदा ले कर वह मैसिडोनिया को चल दिया। 2उस प्रदेश से होकर उसने यात्रा की और वहाँ के लोगों को उत्साह के अनेक वचन प्रदान किये। फिर वह यूनान आ गया। 3वह वहाँ तीन महीने ठहरा और क्योंकि यहूदियों ने उसके विरुद्ध एक षड्यन्त्र रच रखा था सो जब वह जल मार्ग से सीरिया जाने को ही था कि उसने निश्चय किया कि वह मैसिडोनिया को लौट जाये। 4बिरिया के पिरूस का बेटा सोपत्रुस, थिसलुनिकिया के रहने वाले अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस, दिरबे का निवासी गयूस और तिमुथियुस तथा एशियाई क्षेत्र के तुखिकुस और त्रुफिमुस उसके साथ थे। 5ये लोग पहले चले गये थे और त्रोआस में हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। 6बिना ख़मीर की रोटी के दिनों के बाद हम फिलिप्पी से नाव द्वारा चल पड़े और पाँच दिन बाद त्रोआस में उनसे जा मिले। वहाँ हम सात दिन तक ठहरे।

त्रोआस को पौलुस की अन्तिम यात्रा

7सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी विभाजित करने के लिये आपस में इकट्ठे हुए तो पौलुस उनसे बातचीत करने लगा। उसे अगले ही दिन चले जाना था सो वह आधी रात तक बातचीत करता ही रहा। 8सीढ़ियों के ऊपर के कमरे में जहाँ हम इकट्ठे हुए थे, वहाँ बहुत से दीपक थे। 9वहीं युतुखुस नामक एक युवक खिड़की में बैठा था वह गहरी नींद में डूबा था। क्योंकि पौलुस बहुत देर से बोले ही चला जा रहा था सो उसे गहरी नींद आ गयी थी। इससे वह तीसरी मंजिल से नीचे लुढ़क पड़ा और जब उसे उठाया तो वह मर चुका था। 10पौलुस नीचे उतरा और उस पर झुका। उसे अपनी बाहों में ले कर उसने कहा, "घबराओ मत क्योंकि उसके प्राण अभी उसी में हैं।" 11फिर वह ऊपर चला गया और उसने रोटी को तोड़ कर विभाजित किया और उसे खाया। वह उनके साथ बहुत देर, पौ-फटे तक बातचीत करता रहा। फिर उसने उनसे विदा ली। 12उस जीवित युवक को वे घर ले आये। इससे उन्हें बहुत चैन मिला।

त्रोआस से मितुलेने की यात्रा

13हम जहाज़ पर पहले ही पहुँच गये और अस्सुस को चल पड़े। वहाँ पौलुस को हमें जहाज़ पर लेना था। उसने ऐसी ही योजना बनायी थी। वह स्वयं पैदल आना चाहता था। 14वह जब अस्सुस में हमसे मिला तो हमने उसे जहाज़ पर चढ़ा लिया और हम मितेलेने को चल पड़े। 15दूसरे दिन वहाँ से चल कर हम खियुस के सामने जा पहुँचे और अगले दिन उस पार सामोस आ गये। फिर उसके एक दिन बाद हम मिलेतुस आ पहुँचे। 16क्योंकि पौलुस जहाँ तक हो सके पिन्तेकुस्त के दिन तक यरुशलेम पहुँचने की जल्दी कर रहा था, सो उसने निश्चय किया कि वह इफिसुस में रुके बिना आगे चला जायेगा जिससे उसे एशिया में समय न बिताना पड़े।

पौलुस की इफ़िसुस के बुज़ुर्गो से बातचीत

17उसने मिलेतुस से इफिसुस के बुज़ुर्गो और कलीसिया
को संदेसा भेज कर अपने पास बुलाया। 18उनके आने पर
पौलुस ने उनसे कहा, "यह तुम जानते हो कि एशिया पहुँचने
के बाद पहले दिन से ही हर समय मैं तुम्हारे साथ कैसे रहा
हूँ 19और दीनतापूर्वक आँसू बहा-बहा कर यहूदियों के
षड्यन्त्रों के कारण मुझ पर पड़ी अनेक परीक्षाओं में भी
मैं प्रभु की सेवा करता रहा। 20तुम जानते हो कि मैं तुम्हें
तुम्हारे हित की कोई बात बताने से कभी हिचकिचाया
नहीं। और मैं तुम्हें उन बातों का सब लोगों के बीच और
घर-घर जा कर उपदेश देने में कभी नहीं झिझका।
21यहूदियों और यूनानियों को मैं समान भाव से मन फिराव
के परमेश्वर की तरफ़ मुड़ने को कहता रहा हूँ और
हमारे प्रभु यीशु में विश्वास के प्रति उन्हें सचेत करता रहा
हूँ। 22और अब पवित्र आत्मा के अधीन होकर मैं यरुशलेम
जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता वहाँ मेरे साथ क्या कुछ घटेगा।
23मैं तो बस इतना जानता हूँ कि हर नगर में पवित्र आत्मा
यह कहते हुए मुझे सचेत करती रहती है कि बंदीगृह और
कठिनताएँ मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं। 24किन्तु मेरे लिये
मेरे प्राणों का कोई मूल्य नहीं है। मैं तो बस उस दौड़ धूप
और उस सेवा को पूरा करना चाहता हूँ जिसे मैंने प्रभु
यीशु से ग्रहण किया है वह है-परमेश्वर के अनुग्रह के
सुसमाचार की साक्षी देना।

25"और अब मैं जानता हूँ कि तुममें से कोई भी, जिनके
बीच मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा
मुँह आगे कभी नहीं देख पायेगा। 26इसलिये आज मैं तुम्हारे
सामने घोषणा करता हूँ कि तुममें से किसी के भी खून
का दोषी मैं नहीं हूँ। 27क्योंकि मैं परमेश्वर की सम्पूर्ण
इच्छा को तुम्हें बताने में कभी नहीं हिचकिचाया हूँ।
28अपनी और अपने समुदाय की रखवाली करते रहो।
पवित्र आत्मा ने उनमें से तुम्हें उन पर दृष्टि रखने वाला
बनाया है ताकि तुम परमेश्वर की उस कलीसिया का
ध्यान रखो जिसे उसने अपने रक्त के बदले मोल लिया था।
29मैं जानता हूँ कि मेरे विदा होने के बाद हिंसक भेड़िये
तुम्हारे बीच आयेंगे और वे इस भोले-भाले समूह को नहीं
छोड़ेंगे। 30यहाँ तक कि तुम्हारे अपने बीच में से ही ऐसे
लोग भी उठ खड़े होंगे, जो शिष्यों को अपने पीछे लगा लेने
के लिए बातों को तोड़-मरोड़ कर कहेंगे। 31इसलिये
सावधान रहना। याद रखना कि मैंने तीन साल तक एक
एक को दिन रात रो रो कर सचेत करना कभी नहीं
छोड़ा था।

32"अब मैं तुम्हें परमेश्वर और उसके सुसंदेश के
अनुग्रह के हाथों सौंपता हूँ। वही तुम्हारा निर्माण कर सकता
है और तुम्हें उन लोगों के साथ जिन्हें पवित्र किया जा
चुका है, तुम्हारा उत्तराधिकार दिला सकता है। 33मैंने
कभी किसी के सोने-चाँदी या वस्त्रों की अभिलाषा नहीं
की। 34तुम स्वयं जानते हो कि मेरे इन हाथों ने ही मेरी
और मेरे साथियों की आवश्यकताओं को पूरा किया है।
35मैंने अपने हर कर्म से तुम्हें यह दिखाया है कि कठिन
परिश्रम करते हुए हमें निर्बलों की सहायता किस प्रकार
करनी चाहिये और हमें प्रभु यीशु का वह वचन याद रखना
चाहिये जिसे उसने स्वयं कहा था, 'लेने से देने में अधिक
सुख है।' "

36यह कह चुकने के बाद वह उन सब के साथ घुटनों
के बल झुका और उसने प्रार्थना की। 37हर कोई फूट
फूट कर रो रहा था। गले मिलते हुए वे उसे चूम रहे थे।
38उसने जो यह कहा था कि वे उसका मुँह फिर कभी
नहीं देखेगें, इससे लोग बहुत अधिक दुखी थे। फिर उन्होंने
उसे सुरक्षा पूर्वक जहाज़ तक पहुँचा दिया।

पौलुस का यरुशलेम जाना

21 फिर उनसे विदा हो कर हम ने सागर में अपनी
नाव खोल दी और सीधे रास्ते कास जा पहुँचे
और अगले दिन रोदुस। फिर वहाँ से हम पतरा को चले
गये। 2वहाँ हमने एक जहाज़ लिया जो फिनीके जा रहा
था। 3जब साइप्रस दिखाई पड़ने लगा तो हम उसे बायीं
तरफ़ छोड़ कर सीरिया की ओर मुड़ गये क्योंकि जहाज़
को सूर में माल उतारना था सो हम भी वहीं उतर पड़े।
4वहाँ हमें अनुयायी मिले जिनके साथ हम सात दिन तक
ठहरे। उन्होंने आत्मा से प्रेरित होकर पौलुस को यरुशलेम
जाने से रोकना चाहा। 5फिर वहाँ ठहरने का अपना समय
पूरा करके हमने विदा ली और अपनी यात्रा पर निकल
पड़े। अपनी पत्नियों और बच्चों समेत वे सभी नगर के
बाहर तक हमारे साथ आये। फिर वहाँ सागर तट पर
हमने घुटनों के बल झुक कर प्रार्थना की। 6और एक
दूसरे से विदा लेकर हम जहाज़ पर चढ़ गये। और वे
अपने-अपने घरों को लौट गये।

7सूर से जल मार्ग द्वारा यात्रा करते हुए हम पतुलिमयिस
में उतरे। वहाँ भाइयों का स्वागत सत्कार करते हम उनके
साथ एक दिन ठहरे। 8अगले दिन उन्हें छोड़ कर हम
कैसरिया आ गये। और इंजील के प्रचारक फिलिप्पुस के,
जो चुने हुए विशेष सात सेवकों में से एक था, घर जा कर
उसके साथ ठहरे। 9उसके चार कुवाँरी बेटियाँ थीं जो
भविष्यवाणी किया करती थीं। 10वहाँ हमारे कुछ दिनों
ठहरे रहने के बाद यहूदिया से अगबुस नामक एक नबी
आया। 11हमारे निकट आते हुए उसने पौलुस का कमर
बंध उठा कर उससे अपने ही पैर और हाथ बाँध लिये
और बोला, "यह है जो पवित्र आत्मा कह रहा है–यानी
यरुशलेम में यहूदी लोग, जिसका यह कमर बंध है, उसे
ऐसे ही बाँध कर विधर्मियों के हाथों सौंप देगें।"

12हमने जब यह सुना तो हमने और वहाँ के लोगों ने
उससे यरुशलेम न जाने की प्रार्थना की। 13इस पर पौलुस
ने उत्तर दिया, "इस प्रकार रो–रो कर मेरा दिल तोड़ते हुए
यह तुम क्या कर रहे हो? मैं तो यरुशलेम में न केवल बाँधे
जाने के लिये बल्कि प्रभु यीशु मसीह के नाम पर मरने
तक को तैयार हूँ।"

14क्योंकि हम उसे मना नहीं पाये। सो बस इतना कह
कर चुप हो गये, "जैसी प्रभु की इच्छा।"

15इन दिनों के बाद फिर हम तैयारी करके यरुशलेम
को चल पड़े। 16कैसरिया से कुछ शिष्य भी हमारे साथ हो
लिये थे। वे हमें साइप्रस के एक व्यक्ति मनासोन के यहाँ ले
गये जो एक पुराना शिष्य था। हमें उसी के साथ ठहरना
था।

पौलुस की याकूब से भेंट

17यरुशलेम पहुँचने पर भाइयों ने बड़े उत्साह के साथ
हमारा स्वागत सत्कार किया। 18अगले दिन पौलुस हमारे
साथ याकूब से मिलने गया। वहाँ सभी अग्रज उपस्थित थे।
19पौलुस ने उनका स्वागत सत्कार किया और उन सब
कामों के बारे में जो परमेश्वर ने उसके द्वारा विधर्मियों
के बीच कराये थे, एक एक करके कह सुनाया। 20जब
उन्होंने यह सुना तो वे परमेश्वर की स्तुति करते हुए
उससे बोले, "बंधु तुम तो देख ही रहे हो यहाँ कितने ही
हज़ारों यहूदी ऐसे हैं जिन्होंने विश्वास ग्रहण कर लिया है।
किन्तु वे सभी व्यवस्था के प्रति अत्यधिक उत्साहित हैं।
21तेरे विषय में उनसे कहा गया है कि तू विधर्मियों के
बीच रहने वाले सभी यहूदियों को मूसा की शिक्षाओं को
त्यागने की शिक्षा देता है। और उनसे कहता है कि वे न
तो अपने बच्चों का ख़तना करायें और न ही हमारे रीति–
रिवाजों पर चलें। 22सो किया क्या जाये? वे यह तो सुन ही
लेंगे कि तू आया हुआ है। 23इसलिये तू वही कर जो तुझ से
हम कह रहे हैं। हमारे साथ चार ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने
कोई मन्नत मानी है। 24इन लोगों को ले जा और उनके
साथ शुद्धीकरण समारोह में सम्मिलित हो जा। और उनका
खर्चा दे दे ताकि वे अपने सिर मुँडवा लें। इससे सब लोग
जान जायेंगे कि उन्होंने तेरे बारे में जो सुना है, उसमें कोई
सचाई नहीं है बल्कि तू तो स्वयं ही व्यवस्था के अनुसार
जीवन जीता है। 25जहाँ तक विश्वास ग्रहण करने वाले
ग़ैर यहूदियों का प्रश्न है, हमने उन्हें एक पत्र में लिख
भेजा है,

'वे मूर्तियों पर चढ़ाये गये भोजन,
लहू के खाने, गला घोट कर मारे हुए
पशुओं और यौन अनाचार से
अपने आप को दूर रखें।'"

26इस प्रकार पौलुस ने उन लोगों को अपने साथ लिया
और उन लोगों के साथ अपने आप को भी अगले दिन
शुद्ध कर लिया। फिर वह मंदिर में गया जहाँ उसने घोषणा
की कि शुद्धीकरण के दिन कब पूरे होंगे और हममें से
हर एक के लिये चढ़ावा कब चढ़ाया जायेगा।

27जब वे सात दिन लगभग पूरे होने वाले थे, कुछ यहूदियों
ने उसे मंदिर में देख लिया। उन्होंने भीड़ में सभी लोगों को
भड़का दिया और पौलुस को पकड़ लिया। 28फिर वे चिल्ला
कर बोले, "इस्राएल के लोगो सहायता करो। यह वही व्यक्ति
है जो हर कहीं हमारी जनता के, हमारी व्यवस्था के और
हमारे इस स्थान के विरोध में लोगों को सिखाता फिरता
है। और अब तो यह विधर्मियों को मंदिर में ले आया है।
और इसने इस प्रकार इस पवित्र स्थान को ही भ्रष्ट कर
दिया है।" 29(उन्होंने ऐसा इसलिये कहा था कि त्रुफिमुस
नाम के एक इफिसी को नगर में उन्होंने उसके साथ
देखकर ऐसा समझा था कि पौलुस उसे मंदिर में ले गया है)

30सो सारा नगर विरोध में उठ खड़ा हुआ। लोग दौड़–
दौड़ कर चढ़ आये और पौलुस को पकड़ लिया। फिर वे
उसे घसीटते हुए मंदिर से बाहर ले गये और तत्काल
फाटक बंद कर दिये गये। 31वे उसे मारने का जतन कर

ही रहे थे कि रोमी टुकड़ी के सेनानायक के पास यह
सूचना पहुँची कि समुचे यरुशलेम में खलबली मची हुई है।
32उसने तुरंत कुछ सिपाहियों और सेना के अधिकारियों
को अपने साथ लिया और पौलुस पर हमला करने वाले
यहूदियों की ओर बढ़ा। यहूदियों ने जब उस सेनानायक
और सिपाहियों को देखा तो उन्होंने पौलुस को पीटना बंद
कर दिया। 33तब वह सेना नायक पौलुस के पास आया
और उसे बंदी बना लिया। उसने उसे दो ज़ंजीरों में बाँध
लेने का आदेश दिया। फिर उसने पूछा कि वह कौन है
और उसने क्या किया है? 34भीड़ में से कुछ लोगों ने एक
बात कही तो दूसरों ने दूसरी। इस हो-हुल्लड़ में क्योंकि
वह यह नहीं जान पाया कि सच्चाई क्या है, इसलिये उसने
आज्ञा दी कि उसे छावनी में ले चला जाये। 35पौलुस जब
सीढ़ियों के पास पहुँचा तो भीड़ में फैली हिंसा के कारण
सिपाहियों को उसे अपनी सुरक्षा में ले जाना पड़ा 36क्योंकि
उसके पीछे लोगों की एक बड़ी भीड़ यह चिल्लाते हुए चल
रही थी कि इसे मार डालो।

37जब वह छावनी के भीतर ले जाया जाने वाला ही था
कि पौलुस ने सैनानायक से कहा, "क्या मैं तुझसे कुछ
कह सकता हूँ?"

सेनानायक बोला, "क्या तू यूनानी बोलता है? 38तो तू
वह मिस्री तो नहीं है न जिसने कुछ समय पहले विद्रोह शुरू
कराया था और जो यहाँ रेगिस्तान में चार हज़ार
आतंकवादियों की अगुआई कर रहा था?"

39पौलुस ने कहा, "मैं सिलिकिया के तरसुस नगर का
एक यहूदी व्यक्ति हूँ। और एक प्रसिद्ध नगर का नागरिक
हूँ। मैं तुझसे चाहता हूँ कि तू मुझे इन लोगों के बीच बोलने
दे।"

40उससे अनुमति पा कर पौलुस ने सीढ़ियों पर खड़े
होकर लोगों की तरफ़ हाथ हिलाते हुए संकेत किया। जब
सब शांत हो गया तो पौलुस इब्रानी भाषा में लोगों से कहने
लगा।

पौलुस का भाषण

22 पौलुस ने कहा, "हे भाइयो और पितृ तुल्य
सज्जनो! मेरे बचाव में अब मुझे जो कुछ
कहना है, उसे सुनो।" 2उन्होंने जब उसे इब्रानी भाषा में
बोलते हुए सुना तो वे और अधिक शांत हो गये। फिर
पौलुस कहा, 3"मैं एक यहूदी व्यक्ति हूँ। किलिकिया के
तरसुस में मेरा जन्म हुआ था और मैं इसी नगर में पल-पुस
कर बड़ा हुआ। गमलिएल* के चरणों में बैठ कर हमारे
परम्परागत विधान के अनुसार बड़ी कड़ाई के साथ मेरी
शिक्षा-दीक्षा हुई। परमेश्वर के प्रति मैं बड़ा उत्साही था।
ठीक वैसे ही जैसे आज तुम सब हो। 4इस पंथ के लोगों को
मैंने इतना सताया कि उनके प्राण तक निकल गये। मैंने
पुरूषों और स्त्रियों को बंदी बनाया और जेलों में ठूँस दिया।
5स्वयं महा याजक और बुज़ुर्गों की समूची सभा इसे प्रमाणित
कर सकती है। मैंने दमिश्क में इनके भाइयों के नाम
इनसे पत्र भी लिया था और इस पंथ के वहाँ रह रहे लोगों
को पकड़ कर बंदी के रूप में यरुशलेम लाने के लिये मैं
गया भी था ताकि उन्हें दण्ड दिलाया जा सके।

पौलुस का मन कैसे बदला

6"फिर ऐसा हुआ कि मैं जब यात्रा करते-करते दमिश्क
के पास पहुँचा तो लगभग दोपहर के समय आकाश से
अचानक एक तीव्र प्रकाश मेरे चारों और कौंध गया। 7मैं
धरती पर जा पड़ा। तभी मैंने एक आवाज़ सुनी जो मुझसे
कह रही थी, 'शाऊल, ओ शाऊल! तू मुझे क्यों सता रहा
है?' 8तब मैंने उत्तर में कहा, 'प्रभु, तू कौन है?' वह
मुझसे बोला, 'मैं वही नासरी यीशु हूँ जिसे तू सता रहा है।'
9जो मेरे साथ थे, उन्होंने भी वह प्रकाश देखा किन्तु उस
ध्वनि को जिस ने मुझे सम्बोधित किया था, वे समझ नहीं
पाये। 10मैंने पूछा, 'हे प्रभु, मैं क्या करूँ?' इस पर प्रभु ने
मुझसे कहा, 'खड़ा हो, और दमिश्क को चला जा। वहाँ
तुझे वह सब बता दिया जायेगा, जिसे करने के लिये तुझे
नियुक्त किया गया है।' 11क्योंकि मैं उस तीव्र प्रकाश की
चौंध के कारण कुछ देख नहीं पा रहा था, सो मेरे साथी
मेरा हाथ पकड़ कर मुझे ले चले और मैं दमिश्क जा
पहुँचा।

12"वहाँ हनन्या* नाम का एक व्यक्ति था। वह व्यवस्था
का पालन करने वाला एक भक्त था। वहाँ के निवासी
सभी यहूदियों के साथ उसकी अच्छी बोलचाल थी। 13वह
मेरे पास आया और मेरे निकट खड़े हो कर बोला, 'भाई
शाऊल, फिर से देखने लग' और उसी क्षण मैं उसे देखने

गमलीएल यहूदियों की एक धार्मिक शाखा फरीसियों का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण धर्म-गुरु।

हनन्याह 'प्रेरितों के काम' में हनन्याह नाम के तीन व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है। अन्य दो के लिए देखें प्र.क. 5:1; 23:2

योग्य हो गया। 14उसने कहा, 'हमारे पूर्वजों के परमेश्वर
ने तुझे चुन लिया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, उस
धर्म-स्वरूप को देखे और उसकी वाणी को सुने। 15क्योंकि
तूने जो देखा है और जो सुना है, उसके लिये सभी लोगों के
सामने तू उसकी साक्षी होगा। 16सो अब तू किसकी बाट
जोह रहा है, खड़ा हो बपतिस्मा ग्रहण कर और उसका
नाम पुकारते हुए अपने पापों को धो डाल।'

17"फिर ऐसा हुआ कि जब मैं यरुशलेम लौट कर मंदिर
में प्रार्थना कर रहा था तभी मेरी समाधि लग गयी 18और
मैंने देखा वह मुझसे कह रहा है, 'जल्दी कर और तुरंत
यरुशलेम से बाहर चला जा क्योंकि मेरे बारे में वे तेरी
साक्षी स्वीकार नहीं करेंगे।' 19सो मैंने कहा, 'प्रभु ये लोग
तो जानते हैं कि तुझ पर विश्वास करने वालों को बंदी
बनाते हुए और पीटते हुए मैं यहूदी धर्म सभागारों में घूमता
फिरा हूँ। 20और तो और जब तेरे साक्षी स्तिफनुस का
रक्त बहाया जा रहा था, तब भी मैं अपना समर्थन देते हुए
वहीं खड़ा था। जिन्होंने उसकी हत्या की थी, मैं उनके
कपड़ों की रखवाली कर रहा था। 21फिर वह मुझसे बोला,
'तू जा, क्योंकि मैं तुझे विधर्मियों के बीच दूर-दूर तक
भेजूँगा।'"

22इस बात तक वे उसे सुनते रहे पर फिर ऊँचे स्वर में
पुकार कर चिल्ला उठे, "ऐसे मनुष्य से धरती को मुक्त
करो। यह जीवित रहने योग्य नहीं है!" 23वे जब चिल्ला
रहे थे और अपने कपड़ों को उतार उतार कर फेंक रहे
थे तथा आकाश में धूल उड़ा रहे थे, 24तभी सेना-नायक ने
आज्ञा दी कि पौलुस को किले में ले जाया जाये। उसने कहा
कि कोड़े लगा लगा कर उससे पूछ-ताछ की जाये ताकि
पता चले कि उस पर लोगों के इस प्रकार चिल्लाने का
कारण क्या है। 25किन्तु जब वे उसे कोड़े लगाने के लिये
बाँध रहे थे तभी वहाँ खड़े सेनानायक से पौलुस ने कहा,
"किसी रोमी नागरिक को, जो अपराधी न पाया गया हो,
कोड़े लगाना क्या तुम्हारे लिये उचित है?"

26यह सुनकर सेना-नायक सेनापति के पास गया और
बोला, "यह तुम क्या कर रहे हो? क्योंकि यह तो रोमी
नागरिक है।"

27इस पर सेनापति ने उसके पास आकर पूछा, "मुझे
बता, क्या तू रोमी नागरिक है?"

पौलुस ने कहा, "हाँ।"

28इस पर सेना-पति ने उत्तर दिया, "इस नागरिकता
को पाने में मुझे तो बहुत सा धन खर्च करना पड़ा है।"

पौलुस ने कहा, "किन्तु मैं तो जन्मजात रोमी नागरिक
हूँ।"

29सो वे लोग जो उससे पूछताछ करने को थे तुरंत पीछे
हट गये और वह सेनापति भी यह समझ कर कि वह एक
रोमी नागरिक है और उसने उसे बंदी बनाया है, बहुत डर
गया।

यहूदी नेताओं के सामने पौलुस का भाषण

30क्योंकि वह सेनानायक इस बात का ठीक ठीक पता
लगाना चाहता था कि यहूदियों ने पौलुस पर अभियोग क्यों
लगाया, इसलिये उसने अगले दिन उसके बन्धन खोल
दिए। फिर प्रमुख याजकों और सर्वोच्च यहूदी महा सभा
को बुला भेजा और पौलुस को उनके सामने ला कर खड़ा
कर दिया।

23 पौलुस ने यहूदी महा सभा पर गम्भीर दृष्टि
डालते हुए कहा, "मेरे भाइयो! मैंने परमेश्वर
के सामने आज तक उत्तम निष्ठा के साथ जीवन जिया
है।" 2इस पर महा याजक हनन्याह ने पौलुस के पास
खड़े लोगों को आज्ञा दी कि वे उसके मुँह पर थप्पड़
मारें। 3तब पौलुस ने उससे कहा, "अरे सफेदी पुती दीवार!
तुझ पर परमेश्वर की मार पड़ेगी। तू यहाँ व्यवस्था के
विधान के अनुसार मेरा कैसा न्याय करने बैठा है कि तू
व्यवस्था के विरोध में मेरे थप्पड़ मारने की आज्ञा दे रहा
है।"

4पौलुस के पास खड़े लोगों ने कहा, "परमेश्वर के
महायाजक का अपमान करने का साहस तुझे हुआ कैसे?"

5पौलुस ने उत्तर दिया, "मुझे तो पता ही नहीं कि यह
महायाजक है। क्योंकि शासन मे लिखा है 'तुझे अपनी प्रजा
के शासक के लिये बुरा बोल नहीं बोलना चाहिये।'"*

6फिर जब पौलुस को पता चला कि उनमें से आधे
लोग सदूकी हैं और आधे फ़रीसी तो महासभा के बीच
उसने ऊँचे स्वर में कहा, "हे भाइयो, मैं फ़रीसी हूँ-एक
फ़रीसी का बेटा हूँ। मरने के बाद फिर से जी उठने के
प्रति मेरी मान्यता के कारण मुझ पर अभियोग चलाया जा
रहा है!"

तुझे अपनी ... बोलना चाहिये निर्गमन 22:28

7उसके ऐसा कहने पर फ़रीसियों और सदूकियों में
एक विवाद उठ खड़ा हुआ और सभा के बीच फूट पड़
गयी। 8(सदूकियों का कहना है कि पुनरुत्थान नहीं होता
न स्वर्गदूत होते हैं और न ही आत्माएँ। किन्तु फ़रीसियों
का इनके अस्तित्त्व में विश्वास है।) 9वहाँ बहुत शोरगुल
मचा। फ़रीसियों के दल में से कुछ धर्मशास्त्री उठे और
तीखी बहस करते हुए कहने लगे, "इस व्यक्ति में हम कोई
खोट नहीं पाते हैं। यदि किसी आत्मा ने या किसी स्वर्गदूत
ने इससे बातें की हैं तो इससे क्या?"

10क्योंकि यह विवाद हिंसक रूप ले चुका था, इससे
वह सेनापति डर गया कि कहीं वे पौलुस के टुकड़े-टुकड़े
न कर डालें। सो उसने सिपाहियों को आदेश दिया कि वे
नीचे जा कर पौलुस को उनसे अलग करके छावनी में ले
जायें।

11अगली रात प्रभु ने पौलुस के निकट खड़े होकर
उससे कहा, "हिम्मत रख, क्योंकि तूने जैसे दृढ़ता के साथ
यरुशलेम में मेरी साक्षी दी है, वैसे ही रोम में भी तुझे मेरी
साक्षी देनी है।"

12फिर दिन निकले। यहूदियों ने एक षड्यन्त्र रचा।
उन्होंने शपथ उठायी कि जब तक वे पौलुस को मार नहीं
डालेंगे, न कुछ खायेंगे, न पियेंगे। 13उनमें से चालीस से
भी अधिक लोगों ने यह षड्यन्त्र रचा था 14वे प्रमुख
याजकों और बुज़ुर्गों के पास गये और बोले, "हमने सौगन्ध
उठाई है कि हम जब तक पौलुस को मार नहीं डालते हैं,
तब तक न हमें कुछ खाना है, न पीना।" 15तो अब तुम
और यहूदी महासभा, सेनानायक से कहो कि वह उसे
तुम्हारे पास ले आए यह बहाना बनाते हुए कि तुम उसके
विषय में और गहराई से छानबीन करना चाहते हो। इससे
पहले कि वह यहाँ पहुँचे, हम उसे मार डालने को तैयार
हैं।

16किन्तु पौलुस के भांजे को इस षड्यन्त्र की भनक
लग गयी थी, सो वह छावनी में जा पहुँचा और पौलुस
को सब कुछ बता दिया। 17इस पर पौलुस ने किसी एक
सेना-नायक को बुलाकर उससे कहा, "इस युवक को
सेनापति के पास ले जाओ क्योंकि इसे उससे कुछ कहना
है।" 18सो वह उसे सेनापति के पास ले गया और बोला,
"बंदी पौलुस ने मुझे बुलाया और मुझसे इस युवक को तेरे
पास पहुँचाने को कहा क्योंकि यह तुझसे कुछ कहना
चाहता है।"

19सेनापति ने उसका हाथ पकड़ा और उसे एक ओर
ले जाकर पूछा, "बता तू मुझ से क्या कहना चाहता है?"

20युवक बोला, "यहूदी इस बात पर एकमत हो गये हैं
कि वे पौलुस से और गहराई के साथ पूछताछ करने के
बहाने महासभा में उसे लाये जाने की तुझ से प्रार्थना करें।
21इसलिये उनकी मत सुनना। क्योंकि चालीस से भी
अधिक लोग घात लगाये उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने
यह कसम उठाई है कि जब तक वे उसे मार न लें, उन्हें न
कुछ खाना है, न पीना। बस अब तेरी अनुमति की प्रतीक्षा
में वे तैयार बैठे हैं।"

22फिर सेनापति ने युवक को यह आदेश देकर भेज
दिया, "तू यह किसी को मत बताना कि तूने मुझे इसकी
सूचना दे दी है।"

पौलुस का कैसरिया भेजा जाना

23फिर सेनापति ने अपने दो सेना-नायकों को बुलाकर
कहा, "दो सौ सैनिकों, सत्तर घुड़सवारों, और सौ भालैतों
को कैसरिया जाने के लिये तैयार रखो। रात के तीसरे
पहर चल पड़ने के लिये तैयार रहना। 24पौलुस की सवारी
के लिये घोड़ों का भी प्रबन्ध रखना और उसे सुरक्षा पूर्वक
राज्यपाल फ़ेलिक्स के पास ले जाना।" 25उसने एक पत्र
लिखा जिसका विषय था :

26 महामहिम राज्यपाल फेलिक्स को
क्लोदियुस लूसियास का नमस्कार पहुँचे।
27इस व्यक्ति को यहूदियों ने पकड़ लिया था और
वे इसकी हत्या करने ही वाले थे कि मैंने यह
जानकर कि यह एक रोमी नागरिक है, अपने
सैनिकों के साथ जा कर इसे बचा लिया। 28मैं
क्योंकि उस कारण को जानना चाहता था जिससे
वे उस पर दोष लगा रहे थे, उसे उनकी
महा-धर्म-सभा में ले गया। 29मुझे पता चला कि
उनकी व्यवस्था से संबंधित प्रश्नों के कारण उस
पर दोष लगाया गया था। किन्तु उस पर कोई ऐसा
अभियोग नहीं था जो उसे मृत्यु दण्ड के योग्य या
बंदी बनाये जाने योग्य सिद्ध हो। 30फिर जब मुझे
सूचना मिली कि वहाँ इस मनुष्य के विरोध में कोई
षड्यन्त्र रचा गया है तो मैंने इसे तुरंत तेरे पास भेज
दिया है। और इस पर अभियोग लगाने वालों को यह

आदेश दे दिया है कि वे इसके विरुद्ध लगाये गये
अपने अभियोग को तेरे सामने रखें।
31सो सिपाहियों ने इन आज्ञाओं को पूरा किया और वे
रात में ही पौलुस को अंतिपतरिस के पास ले गये। 32फिर
अगले दिन घुड़-सवारों को उसके साथ आगे जाने के
लिये छोड़ कर वे छावनी को लौट आये। 33जब वे
कैसरिया पहुँचे तो उन्होंने राज्यपाल को वह पत्र देते हुए
पौलुस को उसे सौंप दिया। 34राज्यपाल ने पत्र पढ़ा और
पौलुस से पूछा कि वह किस प्रदेश का निवासी है। जब
उसे पता चला कि वह किलिकिया का रहने वाला है
35तो उसने उससे कहा, "तुझ पर अभियोग लगाने वाले
जब आ जायेंगे, मैं तभी तेरी सुनवाई करूँगा।" उसने आज्ञा
दी कि पौलुस को पहरे के भीतर हेरोदेस के महल में रखा
जाये।

यहूदियों द्वारा पौलुस पर अभियोग

24 पाँच दिन बाद महायाजक हनन्याह कुछ बुज़ुर्ग
यहुदी नेताओं और तिरतुल्लुस नाम के एक
वकील को साथ लेकर कैसरिया आया। वे राज्य पाल के
सामने पौलुस पर अभियोग सिद्ध करने आये थे। 2फेलिक्स
के सामने पौलुस की पेशी होने पर मुकदमे की कार्यवाही
आरम्भ करते हुए तिरतुल्लुस बोला, "हे महोदय, तुम्हारे
कारण हम बड़ी शांति के साथ रह रहे हैं और तुम्हारी
दूर-दृष्टि से देश में बहुत से अपेक्षित सुधार आये हैं। 3हे
सर्वश्रेष्ट फेलिक्स, हम बड़ी कृतज्ञता के साथ इसे हर
प्रकार से हर कहीं स्वीकार करते हैं।
4तुम्हारा और अधिक समय न लेते हुए, मेरी प्रार्थना है
कि कृपया आप संक्षेप में हमें सुन लें। 5बात यह है कि इस
व्यक्ति को हमने एक उत्पाती के रूप में पाया है। सारी
दुनिया के यहूदियों में इसने दंगे भड़कवाए हैं। यह नासरियों
के पंथ का नेता है। 6इसने मंदिर को भी अपवित्र करने
का जतन किया है। हमने इसे इसीलिए पकड़ा है। हम इस
पर जो आरोप लगा रहे हैं, ["हम अपनी व्यवस्था के
अनुसार इसका न्याय करना चाहते थे 7किन्तु सेनानायक
लिसिआस ने बलपूर्वक उसे हमसे छीन लिया 8और अपने
लोगो को आज्ञा दी कि वे इसे अभियोग लगाने के लिए तेरे
सामने ले जायें।"]* उन सब को आप स्वयं इससे पूछ ताछ
करके जान सकते हो।" 9इस अभियोग में यहूदी भी शामिल
हो गये। वे दृढ़ता के साथ कह रहे थे कि ये सब बातें सच
हैं।
10फिर राज्यपाल ने जब पौलुस को बोलने के लिये
इशारा किया तो उसने उत्तर देते हुए कहा, "तू बहुत दिनों
से इस देश का न्यायाधीश है। यह जानते हुए मैं प्रसन्नता
के साथ अपना बचाव प्रस्तुत कर रहा हूँ। 11तू स्वयं यह
जान सकता है कि अभी आराधना के लिए मुझे यरुशलेम
गये बस बारह दिन बीते हैं। 12वहाँ मंदिर में मुझे न तो
किसी के साथ बहस करते पाया गया है और न ही
प्रार्थना सभाओं या नगर में कहीं और लोगों को दंगों के
लिए भड़काते हुए 13और अब तेरे सामने जिन अभियोगों
को ये मुझ पर लगा रहे हैं उन्हें प्रमाणित नहीं कर सकते
हैं। 14किन्तु मैं तेरे सामने यह स्वीकार करता हूँ कि मैं
अपने पूर्वजों के परमेश्वर की आराधना अपने पंथ के
अनुसार करता हूँ, जिसे ये एक पंथ कहते हैं। मैं हर उस
बात में विश्वास करता हूँ जिसे व्यवस्था बताती है और जो
नबियों के ग्रन्थों में लिखी है। 15और मैं परमेश्वर में
वैसे ही भरोसा रखता हूँ जैसे स्वयं ये लोग रखते हैं कि
धर्मियों और अधर्मियों दोनों का ही पुनरुत्थान होगा।
16इसीलिये मैं भी परमेश्वर और लोगों के समक्ष सदा अपनी
अन्तरात्मा को शुद्ध बनाये रखने के लिए प्रयत्न करता
रहता हूँ।
17"बरसों तक दूर रहने के बाद मैं अपने दीन जनों के
लिये उपहार ले कर भेंट चढ़ाने आया था। और 18जब मैं
यह कर ही रहा था उन्होंने मुझे मंदिर में पाया, तब मैं
विधि-विधान पूर्वक शुद्ध था। न वहाँ कोई भीड़ थी और
न कोई अशांति। 19एशिया से आये कुछ यहूदी वहाँ मौजूद
थे। यदि मेरे विरुद्ध उनके पास कुछ है तो उन्हें तेरे सामने
उपस्थित हो कर मुझ पर आरोप लगाने चाहियें। 20या ये
लोग जो यहाँ हैं वे बतायें कि जब मैं यहूदी महासभा के
सामने खड़ा था, तब उन्होंने मुझ में क्या खोट पाया 21सिवाय
इसके कि जब मैं उनके बीच में खड़ा था तब मैंने ऊँचे
स्वर में कहा था, 'मरे हुओं में से जी उठने के विषय में
आज तुम्हारे द्वारा मेरा न्याय किया जा रहा है।'"
22फिर फेलिक्स, जो इस-पंथ की पूरी जानकारी रखता
था, मुकदमे की सुनवाई को स्थगित करते हुए बोला,
"जब सेनानायक लुसिआस आयेगा, मैं तभी तुम्हारे इस
मुकदमे पर अपना निर्णय दूँगा।" 23फिर उसने सूबेदार

हम अपनी ... ले जायें कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

को आज्ञा दी कि थोड़ी छूट देकर पौलुस को पहरे के भीतर रखा जाये और उसके मित्रों को उसकी आवश्यकताएँ पूरी करने से न रोका जाये।

पौलुस की फेलिक्स और उसकी पत्नी से बातचीत

24कुछ दिनों बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला के साथ वहाँ आया। वह एक यहूदी महिला थी। फेलिक्स ने पौलुस को बुलवा भेजा और यीशु मसीह में विश्वास के विषय में उससे सुना। 25किन्तु जब पौलुस नेकी, आत्मसंयम और आने वाले न्याय के विषय में बोल रहा था तो फेलिक्स डर गया और बोला, "इस समय तू चला जा, अवसर मिलने पर मैं तुझे फिर बुलवाऊँगा।" 26उसी समय उसे यह आशा भी थी कि पौलुस उसे कुछ धन देगा इसीलिए फेलिक्स पौलुस को बातचीत के लिए प्राय: बुलवा भेजता था।

27दो साल ऐसे ही बीत जाने के बाद फेलिक्स का स्थान पुरखियुस फेस्तुस ने ग्रहण कर लिया। और क्योंकि फेलिक्स यहूदियों को प्रसन्न रखना चाहता था इसीलिये उसने पौलुस को बंदीगृह में ही रहने दिया।

पौलुस कैसर से अपना न्याय चाहता है

25 फिर फेस्तुस ने उस प्रदेश में प्रवेश किया और तीन दिन बाद वह कैसरिया से यरुशलेम को रवाना हो गया। 2वहाँ प्रमुख याजकों और यहूदियों के मुखियाओं ने पौलुस के विरुद्ध लगाये गये अभियोग उसके सामने रखे और उससे प्रार्थना की3कि वह पौलुस को यरुशलेम भिजवा कर उन का पक्ष ले। (वे रास्ते में ही उसे मार डालने का षड्यन्त्र बनाये हुए थे।) 4फेस्तुस ने उत्तर दिया, "पोलुस कैसरिया में बंदी है और वह जल्दी ही वहाँ जाने वाला है।" उसने कहा, 5"तुम अपने कुछ मुखियाओं को मेरे साथ भेज दो और यदि उस व्यक्ति ने कोई अपराध किया है तो वे वहाँ उस पर अभियोग लगायें।"

6उनके साथ कोई आठ दस दिन बिता कर फेस्तुस कैसरिया चला गया। अगले ही दिन अदालत में न्यायासन पर बैठ कर उसने आज्ञा दी कि पौलुस को पेश किया जाये। 7जब वह पेश हुआ तो यरुशलेम से आये यहूदी उसे घेर कर खड़े हो गये। उन्होंने उस पर अनेक गम्भीर आरोप लगाये किन्तु उन्हें वे प्रमाणित नहीं कर सके।

8पौलुस ने स्वयं अपना बचाव करते हुए कहा, "मैंने यहूदियों के विधान के विरोध में कोई काम नहीं किया है, न ही मंदिर के विरोध में और न ही कैसर के विरोध में।"

9किन्तु क्योंकि फेस्तुस यहूदियों को प्रसन्न करना चाहता था, उत्तर में उसने पौलुस से कहा, "तो क्या तू यरुशलेम जाना चाहता है ताकि मैं वहाँ तुझ पर लगाये गये इन अभियोगों का न्याय करूँ?"

10पौलुस ने कहा, "इस समय मैं कैसर की अदालत के सामने खड़ा हूँ। मेरा न्याय यहीं किया जाना चाहिये। मैंने यहूदियों के साथ कुछ बुरा नहीं किया है, इसे तू भी बहुत अच्छी तरह जानता है। 11यदि मैं किसी अपराध का दोषी हूँ और मैंने कुछ ऐसा किया है, जिसका दण्ड मृत्यु है तो मैं मरने से बचना नहीं चाहूँगा, किन्तु यदि ये लोग मुझ पर जो अभियोग लगा रहे हैं, उनमें कोई सत्य नहीं है तो मुझे कोई भी इन्हें नहीं सौंप सकता। यही कैसर से मेरी प्रार्थना है।"

12अपनी परिषद् से सलाह करने के बाद फेस्तुस ने उसे उत्तर दिया, "तूने कैसर से पुनर्विचार की प्रार्थना की है, इसलिये तुझे कैसर के सामने ही ले जाया जायेगा।"

पौलुस की अग्रिप्पा के सामने पेशी

13कुछ दिन बाद राजा अग्रिप्पा और बिरनिके फेस्तुस से मिलते कैसरिया आये। 14जब वे वहाँ कई दिन बिता चुके तो फेस्तुस ने राजा के सामने पौलुस के मुकदमे को इस प्रकार समझाया, "यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जिसे फेलिक्स बंदी के रूप में छोड़ गया था। 15जब मैं यरुशलेम में था, प्रमुख याजकों और बुजुर्गों ने उसके विरुद्ध मुकदमा प्रस्तुत किया था और माँग की थी कि उसे दंडित किया जाये। 16मैंने उनसे कहा, 'रोमियों में ऐसा चलन नहीं है कि किसी व्यक्ति को, जब तक वादी-प्रतिवादी को आमने-सामने न करा दिया जाये और उस पर लगाये गये अभियोगों से उसे बचाव का अवसर न दे दिया जाये, उसे दण्ड के लिये, सौंपा जाये।' 17सो वे लोग जब मेरे साथ यहाँ आये तो मैंने बिना देर लगाये अगले ही दिन न्यायासन पर बैठ कर उस व्यक्ति को पेश किये जाने की आज्ञा दी। 18जब उस पर दोष लगाने वाले बोलने खड़े हुए तो उन्होंने उस पर ऐसा कोई दोष नहीं लगाया जैसा कि मैं सोच रहा था। 19बल्कि उनके अपने धर्म की कुछ बातों पर ही और यीशु नाम के एक व्यक्ति पर जो मर

चुका है, उनमें कुछ मतभेद था। यद्यपि पौलुस का दावा है कि वह जीवित है। 20मैं समझ नहीं पा रहा था कि इन विषयों की छानबीन कैसे की जाये, इसलिये मैंने उससे पूछा कि क्या वह अपने इन अभियोगों का न्याय कराने के लिये यरुशलेम जाने को तैयार है? 21किन्तु पौलुस ने जब प्रार्थना की कि उसे सम्राट के न्याय के लिये ही वहाँ रखा जाये, तो मैंने आदेश दिया, कि मैं जब तक उसे कैसर के पास न भिजवा दूँ, उसे यहीं रखा जाये।"

22इस पर अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "इस व्यक्ति की सुनवाई मैं स्वयं करना चाहता हूँ।"

फेस्तुस ने कहा, "तुम उसे कल सुन लेना।"

23सो अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनिके बड़ी सजधज के साथ आये और उन्होंने सेना-नायकों तथा नगर के प्रमुख व्यक्तियों के साथ सभाभवन में प्रवेश किया। फेस्तुस ने आज्ञा दी और पौलुस को वहाँ ले आया गया। 24फिर फेस्तुस बोला, "महाराजा अग्रिप्पा तथा उपस्थित सज्जनो! तुम इस व्यक्ति को देख रहे हो जिसके विषय में समूचा यहूदी-समाज, यरुशलेम में और यहाँ, मुझसे चिल्ला-चिल्ला कर माँग करता रहा है कि इसे अब और जीवित नहीं रहने देना चाहिये। 25किन्तु मैंने जाँच लिया है कि इसने ऐसा कुछ नहीं किया है कि इसे मृत्यु-दण्ड दिया जाये। और क्योंकि इसने स्वयं सम्राट से पुनर्विचार की प्रार्थना की है इसलिये मैंने इसे वहाँ भेजने का निर्णय लिया है। 26किन्तु इसके विषय में सम्राट के पास लिख भेजने को मेरे पास कोई निश्चित बात नहीं है। मैं इसे इसीलिये आप लोगों के सामने, और विशेष रूप से हे महाराजा अग्रिप्पा! तुम्हारे सामने लाया हूँ ताकि इस जाँच पड़ताल के बाद लिखने को मेरे पास कुछ हो। 27कुछ भी हो मुझे किसी बंदी को उसका अभियोग-पत्र तैयार किये बिना वहाँ भेज देना असंगत जान पड़ता है।"

पौलुस राजा अग्रिप्पा के सामने

26 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तुझे स्वयं अपनी ओर से बोलने की अनुमति है।" इस पर पौलुस ने अपना हाथ उठाया और अपने बचाव में बोलना आरम्भ किया, 2"हे राजा अग्रिप्पा! मैं अपने आप को भाग्यवान समझता हूँ कि यहूदियों ने मुझ पर जो आरोप लगाये हैं, उन सब बातों के बचाव में, मैं तेरे सामने बोलने जा रहा हूँ। 3विशेष रूप से यह इसलिये सत्य है कि तुझे सभी यहूदी प्रथाओं और उनके विवादों का ज्ञान है। इसलिये मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि धैर्य के साथ मेरी बात सुनी जाये।

4"सभी यहूदी जानते हैं कि प्रारम्भ से ही स्वयं अपने देश में और यरुशलेम में भी बचपन से ही मैंने कैसा जीवन जिया है। 5वे मुझे बहुत समय से जानते हैं और यदि वे चाहें तो इस बात की गवाही दे सकते हैं कि मैंने हमारे धर्म के एक सबसे अधिक कट्टर पंथ के अनुसार एक फ़रीसी के रूप में जीवन जिया है। 6और अब इस विचाराधीन स्थिति में खड़े हुए मुझे उस वचन का ही भरोसा है जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को दिया था। 7यह वही वचन है जिसे हमारी बारहों जातियाँ दिन रात तल्लीनता से परमेश्वर की सेवा करते हुए, प्राप्त करने का भरोसा रखती हैं। हे राजन्, इसी भरोसे के कारण मुझ पर यहूदियों द्वारा आरोप लगाया जा रहा है। 8तुम में से किसी को भी यह बात विश्वास के योग्य क्यों नहीं लगती है कि परमेश्वर मरे हुए को जिला देता है।

9"मैं भी सोचा करता था नासरी यीशु के नाम का विरोध करने के लिए जो भी बन पड़े, वह बहुत कुछ करूँ। 10और ऐसा ही मैंने यरुशलेम में किया भी। मैंने परमेश्वर के बहुत से भक्तों को जेल में ठूँस दिया क्योंकि प्रमुख याजकों से इसके लिये मुझे अधिकार प्राप्त था। और जब उन्हें मारा गया तो मैंने अपना मत उन के विरोध में दिया। 11यहूदी धर्म सभागारों में मैं उन्हें प्राय: दण्ड दिया करता और परमेश्वर के विरोध में बोलने के लिए उन पर दबाव डालने का यत्न करता रहता। उनके प्रति मेरा क्रोध इतना अधिक था कि उन्हें सताने के लिए मैं बाहर के नगरों तक गया।

पौलुस द्वारा यीशु के दर्शन के विषय में बताना

12"ऐसी ही एक यात्रा के अवसर पर जब मैं प्रमुख याजकों से अधिकार और आज्ञा पाकर दमिश्क जा रहा था, 13तभी दोपहर को जब मैं अभी मार्ग में ही था कि मैंने हे राजन, स्वर्ग से एक प्रकाश उतरते देखा। उसका तेज सूर्य से भी अधिक था। वह मेरे और मेरे साथ के लोगों के चारों ओर कौंध गया। 14हम सब धरती पर लुढ़क गये। फिर मुझे एक वाणी सुनाई दी। वह इब्रानी भाषा में मुझसे कह रही थी, 'हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सता रहा है? पैंने की नोक पर लात मारना तेरे

बस की बात नहीं है।' 15फिर मैंने पूछा, 'हे प्रभु, तू कौन
है?' प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं यीशु हूँ जिसे तू यातनाएँ दे रहा
है। 16किन्तु अब तू उठ और अपने पैरों पर खड़ा हो जा।
मैं तेरे सामने इसीलिए प्रकट हुआ हूँ कि तुझे एक सेवक
के रूप में नियुक्त करूँ और जो कुछ तूने मेरे विषय में
देखा है और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊँगा, उसका तू साक्षी
रहे। 17मैं जिन यहूदियों और विधर्मियों के पास 18उनकी
आँखें खोलने, उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर लाने
और शैतान की ताकत से परमेश्वर की ओर मोड़ने के
लिये, तुझे भेज रहा हूँ, उनसे तेरी रक्षा करता रहूँगा।
इससे वे पापों की क्षमा प्राप्त करेंगे और उन लोगों के बीच
स्थान पायेंगे जो मुझ में विश्वास रखने के कारण पवित्र हुए
हैं।'

पौलुस के कार्य

19"हे राजन अग्रिप्पा, इसीलिये तभी से उस दर्शन की
आज्ञा का कभी भी उल्लंघन न करते हुए 20बल्कि उसके
विपरीत मैं पहले उन्हें दमिश्क में, फिर यरुशलेम में और
यहूदिया के समूचे क्षेत्र में और ग़ैर यहूदियों को भी उपदेश
देता रहा कि मन फिराव के, परमेश्वर की ओर मुड़ने
और मनफिराव के योग्य का करें। 21इसी कारण जब मैं
यहाँ मंदिर में था, यहूदियों ने मुझे पकड़ लिया और मेरी
हत्या का यत्न किया। 22किन्तु आज तक मुझे परमेश्वर
की सहायता मिलती रही है और इसीलिए मैं यहाँ छोटे
और बड़े सभी लोगों के सामने साक्षी देता खड़ा हूँ। मैं बस
उन बातों को छोड़ कर और कुछ नहीं कहता जो नबियों
और मूसा के अनुसार घटनी ही थी 23कि मसीह को
यातनाएँ भोगनी होंगी और वही मरे हुओं में से पहला जी
उठने वाला होगा और वह यहूदियों और ग़ैर यहूदियों को
ज्योति का सन्देश देगा।"

पौलुस द्वारा अग्रिप्पा का भ्रम दूर करने का यत्न

24वह अपने बचाव में जब इन बातों को कह ही रहा
था कि फेस्तुस ने चिल्ला कर कहा, "पौलुस, तेरा दिमाग
ख़राब हो गया है! तेरी अधिक पढ़ाई तुझे पागल बनाये
डाल रही है!"

25पौलुस ने कहा, "हे परमगुणी फेस्तुस, मैं पागल
नहीं हूँ बल्कि जो बातें मैं कह रहा हूँ, वे सत्य हैं और
संगत भी। 26स्वयं राजा इन बातों को जानता है और मैं
मुक्त भाव से उससे कह सकता हूँ। मेरा निश्चय है कि
इनमें से कोई भी बात उसकी आँखों से ओझल नहीं है। मैं
ऐसा इसलिये कह रहा हूँ कि यह बात किसी कोने में नहीं
की गयी। 27हे राजन अग्रिप्पा! नबियों ने जो लिखा है, क्या
तू उसमें विश्वास रखता है? मैं जानता हूँ कि तेरा विश्वास
है।"

28इस पर अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "क्या तू यह सोचता
है कि इतनी सरलता से तू मुझे मसीही बनने को मना
लेगा?"

29पौलुस ने उत्तर दिया, "थोड़े समय में, चाहे अधिक
समय में, परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि न केवल तू
बल्कि वे सब भी, जो आज मुझे सुन रहे हैं, वैसे ही हो
जायें, जैसा में हूँ, सिवाय इन ज़ंजीरों के।"

30फिर राजा खड़ा हो गया और उसके साथ ही
राज्यपाल, बिरनिके और साथ में बैठे हुए लोग भी उठ
खड़े हुए। 31वहाँ से बाहर निकल कर वे आपस में बात
करते हुए कहने लगे, इस व्यक्ति ने तो ऐसा कुछ नहीं
किया है, जिससे इसे मृत्यु-दण्ड या कारावास मिल सके।
32अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "यदि इसने कैसर के सामने
पुनर्विचार की प्रार्थना न की होती, तो इस व्यक्ति को छोड़ा
जा सकता था।"

पौलुस को रोम भेजा जाना

27 जब यह निश्चय हो गया कि हमें जहाज़ से
इटली जाना है तो पौलुस तथा कुछ दूसरे
बंदियों को सम्राट की सेना के यूलियस नाम के एक
सेना-नायक को सौंप दिया गया। 2अद्रमुत्तियुम से हम
एक जहाज. पर चढ़े जो एशिया के तटीय क्षेत्रों से हो कर
जाने वाला था और समुद्र यात्रा पर निकल पड़े।
थिस्सलुनीके निवासी एक मकदूनी, जिसका नाम
अरिस्तर्खुस था, भी हमारे साथ था। 3अगले दिन हम सैदा
में उतरे। वहाँ यूलियस ने पौलुस के साथ अच्छा व्यवहार
किया और उसे उसके मित्रों का स्वागत सत्कार ग्रहण
करने के लिए उनके यहाँ जाने की अनुमति दे दी। 4वहाँ
से हम समुद्र-मार्ग से फिर चल पड़े। हम साइप्रस की आड़
लेकर चल रहे थे क्योंकि हवाएँ हमारे प्रतिकूल थीं। 5फिर
हम किलिकिया और पंफूलिया के सागर को पार करते
हुए लुकिया और मीरा पहुँचे। 6वहाँ सेनानायक को

सिकन्दरिया का इटली जाने वाला एक जहाज़ मिला। उसने हमें उस पर चढ़ा दिया।

7कई दिन तक हम धीरे धीरे आगे बढ़ते हुए बड़ी कठिनाई के साथ कनिदुस के सामने पहुँचे किन्तु क्योंकि हवा हमें अपने मार्ग पर नहीं बने रहने दे रही थी, सो हम सलमौने के सामने से क्रीत की ओट में अपनी नाव बढ़ाने लगे। 8क्रीत के किनारे-किनारे बड़ी कठिनाई से नाव को आगे बढ़ाते हुए हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जिसका नाम था सुरक्षित बंदरगाह। यहाँ से लसेआ नगर पास ही था।

9समय बहुत बीत चुका था और नाव को आगे बढ़ाना भी संकटपूर्ण था क्योंकि तब तक उपवास का दिन समाप्त हो चुका था इसलिए पौलुस ने चेतावनी देते हुए उनसे कहा, 10"हे पुरुषो, मुझे लगता है कि हमारी यह सागर-यात्रा विनाशकारी होगी, न केवल माल असबाब और जहाज़ के लिए बल्कि हमारे प्राणों के लिये भी।" 11किन्तु पौलुस ने जो कहा था, उस पर कान देने के बजाय उस सेना नायक ने जहाज़ के मालिक और कप्तान की बातों का अधिक विश्वास किया। 12और क्योंकि वह बन्दरगाह शीत ऋतु के अनुकूल नहीं था, इसलिए अधिकतर लोगों ने, यदि हो सके तो फिनिक्स पहुँचने का प्रयत्न करने की ही ठानी। और सर्दी वहीं बिताने का निश्चय किया। फिनिक्स क्रीत का एक ऐसा बन्दरगाह है जिसका मुख दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम दोनों के ही सामने पड़ता है।

तूफ़ान

13जब दक्षिणी पवन हौले-हौले बहने लगा तो उन्होंने सोचा कि जैसा उन्होंने चाहा था, वैसा उन्हें मिल गया है। सो उन्होंने लंगर उठा लिया और क्रीत के किनारे-किनारे जहाज़ बढ़ाने लगे। 14किन्तु अभी कोई अधिक समय नहीं बीता था कि द्वीप की ओर से एक भीषण आँधी उठी और आरपार लपेटती चली गयी। यह 'उत्तर-पूर्वी' आंधी कहलाती थी। 15जहाज़ तूफ़ान में घिर गया। वह आँधी को चीर कर आगे नहीं बढ़ पा रहा था सो हमने उसे यों ही छोड़ कर हवा के रूख बहने दिया। 16हम क्लोदा नाम के एक छोटे से द्वीप की ओट में बहते हुए बड़ी कठिनाई से रक्षा नौकाओं को पा सके। 17फिर रक्षा-नौकाओं को उठाने के बाद जहाज़ को रस्सों से लपेट कर बाँध दिया गया और कहीं सुरतिस के उथले पानी में फँस न जायें, इस डर से उन्होंने पालें उतार दीं और जहाज़ को बहने दिया। 18दूसरे दिन तूफ़ान के घातक थपेड़े खाते हुए वे जहाज़ से माल-असबाब बाहर फेंकने लगे। 19और तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों से जहाज़ पर रखे उपकरण फेंक दिये। 20फिर बहुत दिनों तक जब न सूरज दिखाई दिया, न तारे और तूफ़ान अपने घातक थपेड़े मारता ही रहा तो हमारे बच पाने की आशा पूरी तरह जाती रही।

21बहुत दिनों से किसी ने भी कुछ खाया नहीं था। तब पौलुस ने उनके बीच खड़े हो कर कहा, "हे पुरुषो, यदि क्रीत से रवाना न होने की मेरी सलाह तुमने मानी होती तो तुम इस विनाश और हानि से बच जाते। 22किन्तु मैं तुमसे अब भी आग्रह करता हूँ कि अपनी हिम्मत बाँधे रखो। क्योंकि तुममें से किसी को भी अपने प्राण नहीं खोने हैं। हाँ! बस यह जहाज़ नष्ट हो जायेगा 23क्योंकि पिछली रात उस परमेश्वर का एक स्वर्गदूत, जिसका मैं हूँ और जिसकी सेवा करता हूँ, मेरे पास आकर खड़ा हुआ। 24और बोला, 'पौलुस डर मत। तुझे निश्चय ही कैसर के सामने खड़ा होना है और उन सब को जो तेरे साथ यात्रा कर रहे हैं, परमेश्वर ने तुझे दे दिया है।' 25सो लोगो! अपना साहस बनाये रखो क्योंकि परमेश्वर में मेरा विश्वास है, इसलिये जैसा मुझे बताया गया है, ठीक वैसा ही होगा। 26किन्तु हम किसी टापू के उथले पानी में अवश्य जा फँसेगें।"

27फिर जब चौदहवीं रात आयी हम अद्रिया के सागर में थपेड़े खा रहे थे तभी आधी रात के आसपास जहाज़ के चालकों को लगा जैसे कोई तट पास में ही हो। 28उन्होंने सागर की गहराई नापी तो पाया कि वहाँ कोई अस्सी हाथ गहराई थी। थोड़ी देर बाद उन्होंने पानी की गहराई फिर नापी और पाया कि अब गहराई साठ हाथ रह गयी थी। 29इस डर से कि वे कहीं किसी चट्टानी उथले किनारे में न फँस जायें, उन्होंने जहाज के पिछले हिस्से से चार लंगर फेंके और प्रार्थना करने लगे कि किसी तरह दिन निकल आये। 30उधर जहाज़ के चलाने वाले जहाज़ से भाग निकलने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने यह बहाना बनाते हुए कि वे जहाज़ के अगले भाग से कुछ लंगर डालने के लिये जा रहे हैं, रक्षा-नौकाएँ समुद्र में उतार दीं। 31तभी सेना-नायक से पौलुस ने कहा, "यदि ये लोग जहाज़ पर नहीं रुके तो तुम भी नहीं

बच पाओगे।" 32सो सैनिकों ने रस्सियों को काट कर
रक्षा नौकाओं को नीचे गिरा दिया।

33भोर होने से थोड़ा पहले पौलुस ने यह कहते हुए सब
लोगों से थोड़ा भोजन कर लेने का आग्रह किया कि चौदह
दिन हो चुके हैं और तुम निरन्तर चिंता के कारण भूखे
रहे हो। तुमने कुछ भी तो नहीं खाया है। 34मैं तुमसे अब
कुछ खाने के लिए इसलिए आग्रह कर रहा हूँ कि तुम्हारे
जीवित रहने के लिये यह आवश्यक है। क्योंकि तुममें से
किसी के सिर का एक बाल तक बाँका नहीं होना है।
35इतना कह चुकने के बाद उसने थोड़ी रोटी ली और
सबके सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर रोटी
को विभाजित किया और खाने लगा। 36इससे उन सब की
हिम्मत बढ़ी और उन्होंने भी थोड़ा भोजन लिया। 37जहाज़
पर कुल मिलाकर हम दो सौ छिहत्तर व्यक्ति थे। 38पूरा
खाना खा चुकने के बाद उन्होंने समुद्र में अनाज फेंक
कर जहाज़ को हल्का किया।

जहाज़ का टूटना

39जब भोर हुई तो वे उस धरती को पहचान नहीं पाये
किन्तु उन्हें लगा जैसे वहाँ कोई किनारेदार खाडी है।
उन्होंने निश्चय किया कि यदि हो सके तो जहाज़ को
वहाँ टिका दें। 40सो उन्होंने लंगर काट कर ढीले कर
दिये और उन्हें समुद्र मे नीचे गिर जाने दिया। उसी समय
उन्होंने पतवारों से बँधे रस्से ढीले कर दिये; फिर जहाज़
के अगले पतवार चढ़ा कर तट की ओर बढ़ने लगे।
41और उनका जहाज़ रेते में जा टकराया। जहाज़ का
अगला भाग उसमें फँस कर अचल हो गया। और
शक्तिशाली लहरों के थपेड़ों से जहाज़ का पिछला भाग
टूटने लगा।

42तभी सैनिकों ने कैदियों को मार डालने की एक
योजना बनायी ताकि उनमें से कोई भी तैर कर बच न
निकले। 43किन्तु सेना-नायक पौलुस को बचाना चाहता
था, इसलिये उसने उन्हें उनकी योजना को अमल में लाने
से रोक दिया। उसने आज्ञा दी कि जो भी तैर सकते हैं, वे
पहले ही कूद कर किनारे जा लगें 44और बाकी के
लोग तख्तों या जहाज़ के दूसरे टुकड़ों के सहारे चले
जायें। इस प्रकार हर कोई सुरक्षा के साथ किनारे आ
लगा।

माल्टा द्वीप पर पौलुस

28 इस सब कुछ से सुरक्षापुर्वक बच निकलने के
बाद हमें पता चला कि उस द्वीप का नाम माल्टा
था। 2वहाँ के मूल निवासियों ने हमारे साथ असाधारण
रूप से अच्छा व्यवहार किया। क्योंकि सर्दी थी और वर्षा
होने लगी थी, इसलिए उन्होंने आग जलाई और हम सब
का स्वागत किया। 3पौलुस ने लकड़ियों का एक गट्ठर
बनाया और वह जब लकड़ियों को आग पर रख रहा था
तभी गर्मी खा कर एक विषैला नाग बाहर निकला और
उसने उसके हाथ को डस लिया। 4वहाँ के निवासियों ने
जब उस जंतु को उसके हाथ से लटकते देखा तो वे आपस
में कहने लगे, "निश्चय ही यह व्यक्ति एक हत्यारा है।
यद्यपि यह सागर से बच निकला है किन्तु न्याय इसे जीने
नहीं दे रहा है।" 5किन्तु पौलुस ने उस नाग को आग में ही
झटक दिया। पौलुस को किसी प्रकार की हानि नहीं हुई।
6लोग सोच रहे थे कि वह या तो सूज जायेगा या फिर
बरबस धरती पर गिर कर मर जायेगा। किन्तु बहुत देर
तक प्रतीक्षा करने के बाद और यह देख कर कि उसे
असाधारण रूप से कुछ भी नहीं हुआ है, उन्होंने अपनी
धारणा बदल दी और बोले, "यह तो कोई देवता है।"

7उस स्थान के पास ही उस द्वीप के प्रधान अधिकारी
पबलियुस के खेत थे। उसने अपने घर ले जा कर हमारा
स्वागत-सत्कार किया। बड़े मुक्त भाव से तीन दिन तक
वह हमारी आवभगत करता रहा। 8पबलियुस का पिता
बिस्तर में था। उसे बुखार और पेचीश हो रही थी। पौलुस
उससे मिलने भीतर गया। फिर प्रार्थना करने के बाद उसने
उस पर अपने हाथ रखे और वह अच्छा हो गया। 9इस
घटना के बाद तो उस द्वीप के शेष सभी रोगी भी वहाँ
आये और वे ठीक हो गये। 10अनेक उपहारों द्वारा उन्होंने
हमारा मान बढ़ाया और जब हम वहाँ से नाव पर आगे
को चले तो उन्होंने सभी आवश्यक वस्तुएँ ला कर हमें
दीं।

पौलुस का रोम जाना

11फिर सिकंदरिया के एक जहाज़ पर हम वही चल
पड़े। इस द्वीप पर ही जहाज़ जाड़े में रुका हुआ था। जहाज़
के अगले भाग पर जुड़वाँ भाइयों का चिन्ह अंकित था।
12फिर हम सरकुस जा पहुँचे जहाँ हम तीन दिन ठहरे।

13वहाँ से जहाज़ द्वारा हम रेगियुम पहुँचे और फिर अगले
ही दिन दक्षिणी हवा चल पड़ी। सो अगले दिन हम पुतियुली
आ गये। 14वहाँ हमें कुछ बंधु मिले और उन्होंने हमें वहाँ
सात दिन ठहरने को कहा और इस तरह हम रोम आ
पहुँचे। 15जब वहाँ के बंधुओं को हमारी सूचना मिली तो वे
अप्पियुस का बाज़ार और तीन सराय' तक हमसे मिलने
आये। पौलुस ने जब उन्हें देखा तो परमेश्वर को धन्यवाद
देकर वह बहुत उत्साहित हुआ।

पौलुस का रोम आना

16जब हम रोम पहुँचे तो एक सिपाही की देखरेख में
पौलुस को अपने आप अलग से रहने की अनुमति दे दी
गयी।

17तीन दिन बाद पौलुस ने यहूदी नेताओं को बुलाया
और उनके एकत्र हो जाने पर वह उनसे बोला, "हे
भाइयो, चाहे मैंने अपनी जाति या अपने पूर्वजों के विधि-
विधान के प्रतिकूल कुछ भी नहीं किया है, तो भी यरुशलेम
में मुझे बंदी के रूप में रोमियों को सौंप दिया गया था।
18उन्होंने मेरी जाँच पड़ताल की और मुझे छोड़ना चाहा
क्योंकि ऐसा कुछ मैंने किया ही नहीं था जो मृत्युदण्ड के
लायक होता19किन्तु जब यहूदियों ने आपत्ति की तो मैं
कैसर से पुनर्विचार की प्रार्थना करने को विवश हो गया।
इसलिये नहीं कि मैं अपने ही लोगों पर कोई आरोप
लगाना चाहता था। 20यही कारण है जिससे मैं तुमसे
मिलना और बातचीत करना चाहता था क्योंकि यह इस्राएल
का वह भरोसा ही है जिसके कारण मैं ज़ंजीर में बँधा
हूँ।"

21यहूदी नेताओं ने पौलुस से कहा, "तुम्हारे बारे में
यहूदिया से न तो कोई पत्र ही मिला है, और न ही वहाँ से
आने वाले किसी भी भाई ने तेरा कोई समाचार दिया और
न तेरे बारे में कोई बुरी बात कही। 22किन्तु तेरे विचार
क्या हैं, यह हम तुझसे सुनना चाहते हैं क्योंकि हम जानते
हैं कि लोग सब कहीं इस पंथ के विरोध में बोलते
हैं।"

23सो उन्होंने उसके साथ एक दिन निश्चित किया।
और फिर जहाँ वह ठहरा था, बड़ी संख्या में आकर वे
लोग एकत्र हो गये। मूसा की व्यवस्था और नबियों के
ग्रंथों से यीशु के विषय में उन्हें समझाने का जतन करते
हुए उसने परमेश्वर के राज्य के बारे में अपनी साक्षी दी
और समझाया। वह सुबह से शाम तक इसी में लगा रहा।

24उसने जो कुछ कहा था, उससे कुछ तो सहमत हो
गये किन्तु कुछ ने विश्वास नहीं किया। 25फिर आपस में
एक दूसरे से असहमत होते हुए वे वहाँ से जाने लगे। तब
पौलुस ने एक यह बात और कही, "यशायाह भविष्यवक्ता
के द्वारा पवित्र आत्मा ने तुम्हारे पूर्वजों से कितना ठीक
कहा था,

26 'जाकर इन लोगों से कह दे:
तुम सुनोगे, पर न समझोगे कदाचित्!
तुम बस देखते ही देखते रहोगे
पर न बूझोगे कभी भी!
27 क्योंकि इनका हृदय जड़ता से भर गया
कान इनके कठिनता से श्रवण करते
और इन्होंने अपनी आँखे बंद कर ली
क्योंकि कभी ऐसा न हो जाये कि ये
अपनी आँख से देखें, और कान से सुनें
और हृदय से समझे, और कदाचित् लौटें
मुझको स्वस्थ करना पड़े उनको।'

यशायाह 6:9-10

28"इसलिये तुम्हें जान लेना चाहिये कि परमेश्वर का
यह उद्धार विधर्मियों के पास भेज दिया गया है। वे इसे
सुनेंगे।" 29["जब पौलुस ये बातें कह चुका तो आपस में
विवाद करते हुए यहूदी बहाँ से चले गये।"]*

30वहाँ किराये के अपने मकान में पौलुस पूरे दो साल
तक ठहरा। जो कोई भी उससे मिलने आता, वह उसका
स्वागत करता। 31वह परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता
और प्रभु यीशु मसीह के विषय में उपदेश देता। वह इस
कार्य को पूरी निर्भयता और बिना कोई बाधा माने किया
करता था।

पद 29 'प्रेरितों के काम' की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 29
जोड़ा गया है।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html